विद्यापति

रमानाथ झा

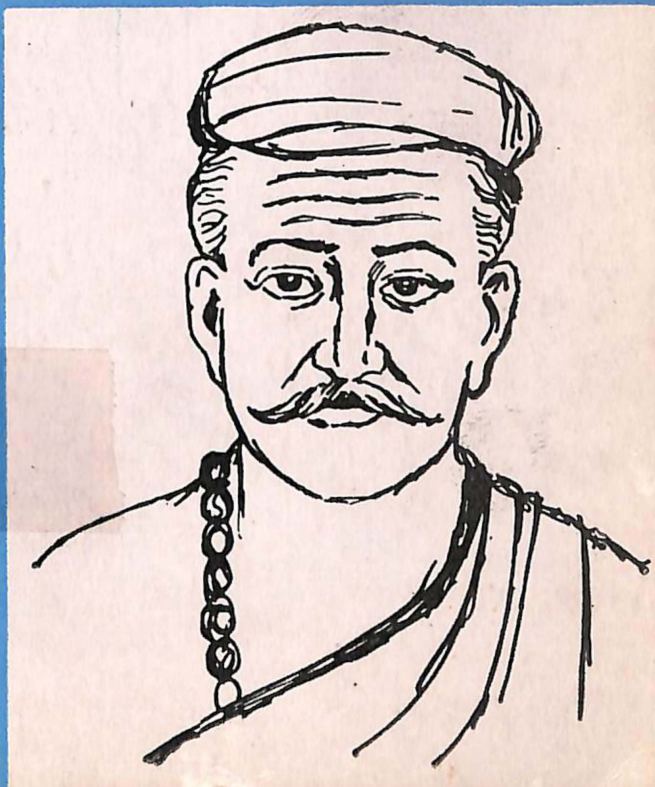

MT
811.22
V 669 J
भारतीय

MT
811.22
V669J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

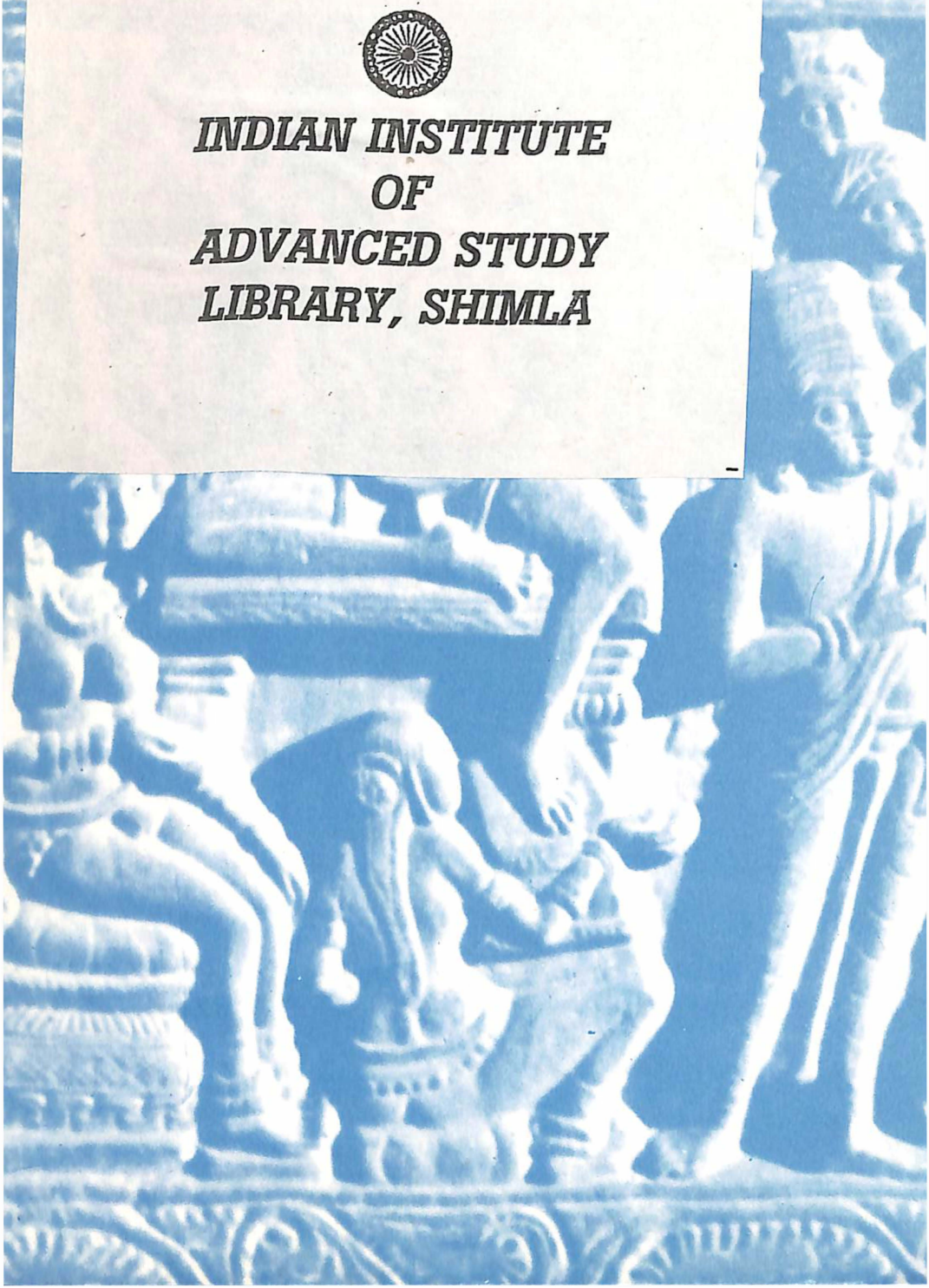

विद्यापति

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धोधनक दरबारक ओहि दृश्यकें देल गेल अछि जाहि मे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक मायरानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या कें लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्राय: सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

विद्यापति

लेखक

रमानाथ झा

अनुवादक

कुलानन्द मिश्र

साहित्य अकादेमी

Vidyapati : Maithili translation by Kulananda Mishra of Ramanath Jha's English monograph, Sahitya Akademi, New Delhi (1987) Pric **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 811.22 V 669 J
00117128

प्रथम संस्करण : 1987

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली-110001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-700029
29, एलडाम्स रोड, (द्वितीय मंजिल), तेनामपेट, मद्रास-600018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई-400014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

MT
811.22
V669J

मुद्रक
रूपाभ प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

Indian Institute of Advance
117128
9.12.04
SHIMLA

विद्यापति

विद्यापति भारतीय साहित्यक एकटा अत्यन्त उत्कृष्ट निर्माता छलाह। जाहि काल मे संस्कृत समस्त आर्यावर्तक सांस्कृतिक भाषा छलि, ओ अपन क्षेत्रीय वोली कें मधुर आ मनोरम काव्यक माध्यम वनौलनि आ साहित्यक भाषा जेकाँ ओहिमे अभिव्यक्तिक क्षमता जगा देलनि। ओ एकटा नव ढंगक काव्य-परम्पराक आरंभ कयलनि जे अनका लेल अनुकरणीय भेल आ आर्यावर्तक एहि भागक एहन कोनो साहित्य नहि अछि जे हुनक प्रतिभा आ रचना-कौशलक गंभीर प्रभाव-क्षेत्र मे नहि अबैत हो। ओ उचिते मैथिल कोकिल अथवा मिथिलाक कोयल कहल गेलाह अछि, कारण जे हुनक कल-कूजन सँ आधुनिक पूर्वोत्तर भारतीय भाषासभक काव्य मे वसंतक आगमन भेल।

2

विद्यापतिक जन्म मिथिलाक हृदय-स्थल (दरभंगा जिलाक मधुबनी अनुमंडल[1]) मे विसफी नामक ग्राम मे 1350 ई० के लगभग मे एकटा एहन विद्वान-राजपुरुषक परिवार मे भेल रहनि जे पाँचो पीढ़ी सँ अधिक काल सँ मैथिल समाजक नेतृत्व करैत आयल रहथि।

मिथिलाक भूमि अत्यन्त प्राचीनकाल सँ वौद्धिक क्रिया-कलाप आ विवेचन (तर्क-वितर्क) लेल विख्यात रहलि अछि, मुदा राजनैतिक रूप सँ बुद्धक काले सँ ओ मगधक आधिपत्य मे रहलि अछि। गुप्त वंशक उपरांत, जखन दिग्विजय कय अश्वमेध सम्पन्न करवेटा राजा हेबाक उच्चतम आदर्श वनि गेलैक, भारतक प्रत्येक साहसी राजा हिमालय धरिक भूमि अपना अधीन करवा लेल, जे हुनका सभक दुनियाक उत्तरी सीमा रहनि, गंगा पार कय मिथिलाक भूमि कें पद-दलित

1. आव स्वयं एकटा जिला।

कयलनि। एहि प्रकारें मिथिला, जकर अपन कोनो राजा नहि रहैक, कहियो शांति-पूर्वक नहि रहलि। ई एकटा आश्चर्येक विषय थिक जे राजनैतिक उठापटक रहितो मिथिला अपन सांस्कृतिक अस्तित्वक सातत्यता कोना बनौने रहलि, मुदा ओ मैथिल जीवन-पद्धतिये छल जे लोकसभक निर्द्वन्द्व जीवन-यापनक स्वतंत्रता धरि राजनैतिक परिवर्तन सभकें कोनो महत्व प्रदान नहि कयलक। तथापि मिथिला अपना ओहिठामक कला सभकें संरक्षण नहि दऽ सकलि आ एहि कारणें एकर संतान सभकें प्रवासी होमय पड़लैक। अतएव सन् 1097 ई० मे जखन सुदूर दक्षिण सँ कर्णाट-नृप नान्यदेव मिथिला अयलाह तऽ हुनक उन्मुक्त हृदय सँ स्वागत कयल गेल, विशेषतः अहू लेल जे ओ स्वयं विद्वान आ साहित्य एवं कलाक प्रेमी छलाह। ओ एतय अपन राजवंशक स्थापना कयलनि आ कर्णाटलोकनि छौ पीढ़ी धरि मिथिला पर राज करैत रहलाह। ओ लोकनि एहि क्षेत्रक जनता सँ पूर्ण तादात्म्य स्थापित कऽ लेलनि आ हुनकालोकनिक प्रजारंजक शासन मे मिथिला शांतिपूर्वक प्रगति कयलक। आर्यावर्तक समस्त अवशिष्ट भाग मुसलमानी शासनक अधीन भऽ गेल, परञ्च मिथिला एहि कौशलक संग अपन राज-व्यापार चलवैत रहलि कि ओतुका देशीय क्षत्रिय-शासन लगातार बनल रहल। एहि सँ प्रादेशिक जीवन मे पुनर्जागरण कालक आरंभ भेल। लक्ष्मीधर 'कल्पतरु' नामक विधि-संहिताक संकलन कयलनि आ गंगेश दर्शन-शास्त्रक क्षेत्र मे विख्यात् 'तत्त्व चिन्तामणि' सन पोथी लिखलनि। ई दुनू विद्वान समस्त आर्यावर्त मे आ तकरा बाहरो अनेक शताब्दी धरि विद्वत्ताक अप्रतिम उदाहरण बनल रहलाह।

परञ्च मैथिल समाजक अगुआ लोकनि ई बुझलनि जे ओ लोकनि अधिक समय तक मुसलमान सभ कें मिथिला पर अधिकार करवा सँ रोकि नहि सकैत छथि आ तखन ओ सभ अपन सामाजिक जीवनक पुनर्गठन, सामाजिक दशाक संघटन तथा एकटा एहन एकताक बन्धनक निर्माण करब आरंभ कयलनि जे प्रदेश मे रहनिहार भिन्न-भिन्न वर्ग कें एक राष्ट्रक रूप मे बान्हि कऽ राखि सकय। तें जखन शक सम्वत् 1245 (इस्वी सन् 1323) मे निर्भीक युवा नृप हरि सिंह देवक राज्य काल मे मिथिला गयासुद्दीन तुगलकक आक्रमण सँ अक्रान्त भऽ गेलि तखन उत्तर भारतक अंतिम क्षत्रिय शासन समाप्त भऽ गेल, मुदा लगले ई स्पष्ट भऽ गेल जे मिथिला कें मुसलमान सुबेदारक प्रत्यक्ष शासन मे राखब ने तऽ हितकर हैत आर ने संभव। फलतः फिरोज शाह तुगलक तिरहुतक राज्य राजपंडित कामेश्वर ठाकुरक अधीन कऽ देलनि, जिनका वा जिनक वंशज सभ कें विद्यापति-वंशक लोक-सभक पूर्ण सहयोग प्राप्त होइत रहलनि। ओ लोकनि शुक्ल यजुर्वेदी शाखाक काश्यप गोत्रक अत्यन्त सम्मानित ब्राह्मण परिवारक सदस्य रहथि, जिनक मूलग्राम मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत पूसाक निकटस्थ प्रगतिशील ओईनी ग्राम रहनि। कर्णाट वंशक पतनक मात्र सताइसे वर्षक बाद मिथिला मे ओइन वंशीय राज्यक

स्थापनाक प्राय: एक दशकक भितरे विद्यापतिक जन्म भेल रहनि ।

मिथिला मे कर्णाट लोकनि तहिया अपन राज्यक स्थापना कयलनि जखन नव हिन्दुत्व मे बौद्धमत कें पचा कऽ वैदिक आ बौद्धमतक आपसी संघर्ष कें शांत कऽ देल गेल रहय आ जाति सभक क्षेत्रीय विभाजन फरीछ भऽ गेल छल । नव सामाजिक मूल्य मान्यता प्राप्त कऽ रहल छल आ प्राचीन व्यवस्था नव कें जगह दऽ रहलि छलि । प्राचीन विधि सभ कें नव-नव परिभाषा प्रदान कय तत्कालीन परिस्थितिक अनुकूल बनाओल जा रहल छल । दोसर दिस, पश्चिम आ दक्षिण-पश्चिम दिस सँ मुसलमान लोकनि क्रमे-क्रमे आगाँ बढि रहल छलाह आ सम्पूर्ण आर्यावर्त इस्लामी दुस्साहसक आक्रमणक खतरा मे छल, जकरा आगाँ एकाएकी कऽ राज्य सभ झुकैत चलि जा रहल छल । फलत: कर्णाट सभक प्रतिष्ठित हेबाक तुरत्ते बाद सम्पूर्ण आर्यावर्त मदान्ध आ निर्दय मुसलमान सभक हाथ आबि गेलैक । प्रबुद्ध आ हितैषी कर्णाट सभक अधीन मैथिल समाजक अगुआलोकनि मुसलमान सभ कें दूर रखबाक सभ यत्न कयलनि आ अपन सामाजिक संरचना कें संघटित करबा मे लागि गेलाह । समस्त समाजक आचार आ प्रत्येक जाति वा वर्गक अनुशासन कें नियंत्रित करबा लेल एकटा नव व्यवस्था नियोजित आ उद्घोषित कयल गेल आ यद्यपि जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे प्रभावकारी परिवर्तन कयल गेल, एहि परिवर्तन कें पुरना नियमक नव परिभाषा बना कऽ सोझाँ आनल गेल, जाहि सँ बाह्य रूप सँ ई सभ काज एकटा प्रगतिशील डेग प्रतीत होइत छल, क्रांतिकारी नहि । एहि तरहें अतीतक संग सातत्य अविच्छिन्न राखल गेल, यद्यपि ई कखनो काल नाम-मात्रक होइत छल ।

विद्यापति, जिनक आनुवंशिक उपनाम 'ठाकुर' सँ द्योतित होइत अछि जे ओ अचल सम्पत्तिक स्वामी रहथि, शुक्ल यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखाक काश्यप गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण परिवार मे जन्म लेने रहथि । दरभंगा सँ करीब 16 मील उत्तर-पश्चिम मे अखनो स्थित समृद्ध गाम बिसफी मे एहि परिवारक जड़ि रहैक आ विद्यापतिक जन्मक समय मे ई परिवार ओही गाम मे रहैत छल, जाहि लेल ई परिवार आ वंश बिसइँवार बिसफीक नाम सँ जानल जाइत अछि । ई एहन विद्वान राजपुरुष लोकनिक परिवार छल जे मिथिला मे अपन धर्मशास्त्रीय ज्ञानक लेल प्रसिद्ध छलाह आ कर्णाट वंशीय राजा लोकनिक दरबार मे विश्वासयोग्य एवं उत्तर-दायित्वपूर्ण पद पर आसीन रहथि। विद्यापति सँ छौ पीढ़ी पूर्व कर्मादित्य भेल रहथि, जे संभवत: दरबार मे मंत्रीक रूप मे प्रविष्ट भेल रहथि आ हुनक पुत्र देवादित्य, पौत्र वीरेश्वर आ प्रपौत्र चण्डेश्वर सेहो संधि-विग्रहिकक पद पर (संधि-विग्रह मंत्रीक पद पर) रहथि । देवादित्यक दोसर बेटा गणेश्वर सेहो मंत्री रहथि आ महासामन्ताधिपति सामन्त सभक समितिक ओ अध्यक्षता करैत रहथि एवं महाराजाधिराजक पदवी धारण कयनिहार सामन्त-प्रमुख रहथि । अपन कृति (पुरुष

परीक्षा) मे विद्यापति वीरेश्वर आ गणेश्वर दुहूक कथा कहने छथि आ ई सेहो लिखने छथि जे कोना अपना ज्ञानक लेल गणेश्वर समस्त भारत वर्ष मे विख्यात रहथि। देवादित्यक भाइ भवादित्य एकटा सभासद् छलाह आ वीरेश्वरक अपन आ सतौत भाइ (वैमात्रेय) सभ सेहो पैघ-पैघ पद पर आसीन रहथि, जेना कोषाध्यक्ष, अंतरण विभागाध्यक्ष, मुद्राध्यक्ष आदिक पद पर छांदोग्य सामवेदक अनुयायी सभ लेल वीरेश्वर एकटा पद्धतिक रचना कयने रहथि आ तेसर भाइ गणेश्वरक पुत्र रमादत्त वाजसनेयि शुक्ल यजुर्वेदक अनुयायी लोकनिक लेल एकटा पद्धतिक निर्माण कयलनि आ मिथिला मे अखनो धरि एहि पद्धतिक अनुसार विधि-विधानक सम्पादन कयल जाइछ। गणेश अनेक स्मृतिग्रंथक रचयिता रहथि, जाहि मे एकटा 'सुगति सोपान' अछि जकरा अनुसार अखनो मैथिल ब्राह्मणक एकटा पैघ वर्ग अपन श्राद्ध-संस्कार सम्पन्न करैत अछि। विशेषतः वीरेश्वरक पुत्र चण्डेश्वरक विद्वत्ता सभ सँ बढ़ि-चढ़ि कऽ रहनि। ओ धर्म किंवा रत्नाकर नामक सप्तखण्डीय स्मृतिसंहिताक रचनाकार रहथि। एहि मे विधि आ संस्कार सभक विधान छैक आ विगत छौ शताब्दी सँ ई संहिता मिथिलावासी सभक बीच सर्वोच्च मान्य ग्रंथ रहलैक अछि। एहि सप्तखण्डीय रत्नाकरक अतिरिक्त ओइनवार राजालोकनि कें समर्थन देबाक दृष्टि सँ चण्डेश्वर 'राजनीति रत्नाकर'क सेहो रचना कयलनि, किएक जे आरंभ मे मिथिलावासी सभ हिनकालोकनि कें स्वीकार नहि कयने रहनि, जकर कारण ई रहैक जे ओ लोकनि दिल्ली-पतिसभक स्वामिभक्त रहथि आ ब्राह्मण हेबाक कारणें एहि राजा सभक राज्याभिषेक नहि भऽ सकैत छल। एहि तरहक वा आनो-आनो विषय पर परिवर्त्तित परिस्थिति मे नव आ वास्तविक तथ्य कें आश्चर्यजनक रूप सँ बुझैत चण्डेश्वर अपन विचार व्यक्त कयलनि आ एहि तरहें एकटा नव समाजक स्थापना कयलनि, जकर युग-युग केर उत्थान-पतनक बादो अखन धरि अस्तित्व सुरक्षित छैक। चण्डेश्वर ओहि विद्वान राजपुरुष लोकनिक दलक सदस्य रहथि, संभवतः सर्वाधिक सम्मानित सदस्य, जे सभ पुनरुत्थानक एहि समय मे जन-जीवन कें गढ़ने छलाह। एहि पुनरुत्थानकालक एकटा दुर्लभ प्रतिभा विद्यापति रहथि जे शाश्वत प्रेमक गायकक रूप मे अमर छथि, मुदा संगहि मनुक्ख आ राजपुरुषक रूप मे अपन व्यक्तित्वक सम्पूर्णताक कारणो ओ कम स्मरण नहि कयल जाइत छथि।

3

जहिया विद्यापतिक जन्म भेलनि ताहि समय मे मिथिला मे एकटा पैघ सामाजिक आ बौद्धिक पुनरुत्थानक एहने समय रहैक आ ओहि सांस्कृतिक पुनरुत्थानक नायकलोकनिक अही तरहक परिवार रहनि, जकर ओ एकटा समर्थ अंकुर रहथि। ओइनवार राजा सभक नव स्थापित राज परिवार सँ घनिष्ठ रूप सँ सम्बन्धित विद्यापति प्रमुख रूप सँ जीवन भरि ओइनवार राजा सभक दरबार मे रहलाह आ ओइनवार सभक चारि पीढ़ीक मध्य सात राजाक ओ विशेष सेवा कयलनि। ओ अपना समयक सभ सँ विशिष्ट प्रतिनिधि लेखक रहथि आ जाहि प्रकारक जीवन ओ जीलनि आ जाहि रूपक काजसभ ओ कयलनि, से ओइनवार दरबारक घटनाक्रमक अनुरूप रहैक। तैयो मिथिलो मे ओइनवार सभक इतिहास सुविदित नहि अछि। अतएव एतय संक्षेप मे मिथिलाक ओइनवार शासक लोकनिक इतिहास बखानब सुविधाजनक हैत, जकर प्रकाश मे विद्यापतिक जीवन आ हुनक कृतित्व कें बेशी बढियाँ जकाँ बुझल जा सकैछ।

सन् 1323 मे हरिसंह देवक पराजयक संगे मिथिला मे कर्णाट शासनक अन्त भऽ गेलापर राज्य यद्यपि कामेश्वर ठाकुरक हाथ सौंपि देलि गेलनि, तैयो किछु समय धरि ओइनवार सभ कें वास्तविक राजा नहि मानल गेलनि। कामेश्वरक ज्येष्ठ पुत्र भोगीश्वर हुनक उत्तराधिकारी भेलाह, परञ्च हुनक सभ सँ छोट भाइ भव सिंह हुनक अधिकार कें मान्यता नहि देलथिन आ राज्यक विभाजन करबा देलथिन। फलतः एहि दुनू शाखा मे विरोध भऽ गेल। भोगीश्वर अल्पायु रहथि आ हुनक बेटा गणेश्वर हुनक उत्तराधिकारी भेलाह, मुदा ल० सं० 252 मे भव सिंहक संतति सभक षडयंत्रक फलस्वरूप ओ छल सँ मारल गेलाह। गणेश्वरक बेटा वीरसिंह आ कीर्ति सिंह पड़ा गेलाह आ यत्र-कुत्र भटकलाक बाद अन्ततः अपन पिताक हत्याक बदला लेबा लेल आ अपन उचित अधिकार प्राप्त करबा लेल ओ लोकनि जौनपुरक इब्राहिम शाह कें मना लेलनि। एहि बीच भवसिंह समस्त राज्य पर प्रभुत्व प्राप्त कय वृद्ध चण्डेश्वरक समर्थन सँ अपना कें तिरहुतक राजाक रूप मे सर्वमान्य बना लेलनि तथा राजत्वक प्रतीकक रूप मे सिंहक उपाधि धारण कय लेलनि। मिथिलाक पारम्परिक इतिहास मे भवसिंह कें ओइनवार वंशक पहिल राजा मानल जाइत छनि।

भवसिंहक बेटा देवसिंह हुनक उत्तराधिकारी भेलाह, परञ्च पारिवारिक कलह सँ उत्पन्न परिस्थिति सँ ओ ततेक उबिया गेलाह जे ओ अपन सोड़ह बरखक बेटा शिवसिंह कें राज्य सौंपि देलनि आ वानप्रस्थ जीवन बितेबा लेल सुदूर नैमिषारण्य, कानपुरक निकटस्थ आधुनिक नीमसार, चलि गेलाह। शिव सिंह अपना कें एकटा अत्यन्त उदात्त, शक्तिशाली आ लोकप्रिय राजा सिद्ध कयलनि।

ओ स्वतन्त्र भऽ गेलाह आ बंगाल तथा पटनाक मुसलमान नवाबसभक संग कतोक बेर युद्ध कयलनि। ल० सं० 293 मे देव सिंह स्वर्गवासी भेलाह आ तकरा बादे शिव सिंह पूर्ण रूप सँ राजा बनि सकलाह, मुदा ओ मात्र साढ़े तीन वर्ष धरि राज्य कयलनि।

ल० स० 296-297 क हेमन्त ऋतु मे हुनका सम्भवतः गणेश्वरक हत्याक बदला लेबाक लेल कीर्ति सिंहक संग तिरहुत आबयबला जौनपुरक इब्राहिम शाह सँ लड़य पड़लनि। एहि युद्ध मे शिव सिंह हारि गेलाह, किन्तु हुनका कतौ जीवित वा मृत रूप मे पाओल नहि गेलनि। विजयी नवाब तिरहुत कें जेना-तेना छोड़ि देलनि, मुदा राजा ई शपथ लेलनि जे दिल्लीक सुल्तानक स्थान मे ओ जौनपुरक घरानाक प्रति स्वामिभक्ति रखताह। शिव सिंहक रानी सभ आधुनिक नेपाल मे अवस्थित सप्तरीक मुखिया पुरादित्यक संरक्षण मे रहबा लेल आ हेड़ायल राजाक खबरि जनबा लेल बारह बरख धरि प्रतीक्षाक हेतु स्वेच्छा सँ देश सँ बाहर चलि गेलीह, किएक जे शास्त्रक अनुसार एहि अवधिक उपरांते हुनक (शिव सिंहक) अन्तिम संस्कार हेबाक रहनि। एहि बीच शिव सिंहक अनुज पद्मसिंह तिरहुत पर राज्य करैत रहलाह आ हुनक मृत्युक बाद हुनक पत्नी विश्वास देवी राज्य कयलनि। जखन ल० सं० 309 मे शिव सिंहक अन्तिम संस्कार कयल गेलनि आ हुनक पत्नी सती भऽ गेलथिन, तखन राजा (शिव सिंह) क निकटस्थ पुरुष उत्तराधिकारी कें राज्य प्राप्त भेलनि आ एहि प्रकारें राज्य प्राप्त करयबला बृद्ध हरि सिंह रहथि जे भव सिंहक दोसर पत्नी सँ उत्पन्न छोट बेटा रहथि। हुनका बाद हुनक बेटा नरसिंह राजा बनलाह, मुदा एक बेर फेर राज्यक लेल संघर्ष भेल। नर सिंहक बाद हुनक ज्येष्ठ बालक धीर सिंह राजा भेलाह, मुदा हुनका बाद राज्य हुनक बेटा कें नहि, हुनक अनुज भैरव सिंह कें प्राप्त भेलनि। विद्यापतिक मृत्यु ल० सं० 330 मे भेलनि, शिव सिंहक लापता भेलाक 32 वर्ष बाद, जखन तिरहुत मे धीर सिंह राजा रहथि।

हम सभ ई ठीक-ठीक नहि जनैत छी जे विद्यापतिक जन्म कहिया भेल रहनि, मुदा ई कहल जाइछ जे ओ शिव सिंह सँ दू बरख पैघ रहथि। शिव सिंह अपन पिताक मृत्युक समय 50 बरखक रहथि आ ओ ल० सं० 293 अर्थात् शक संवत 1324 अर्थात् इस्वी सन् 1402 मे चैत्र कृष्ण षष्ठी बृहस्पति कें पूर्ण रूप सँ राजा बनल रहथि। एहि सँ ई निष्कर्ष बहार होइछ जे विद्यापतिक जन्म इस्वी सन् 1350क करीब भेल रहनि, कर्णाट वंशक पतनक 27 बरख बाद आ ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा 'वर्णरत्नाकर'क रचना कयल गेलाक 25 बरखक बीच। अतएव गणेश्वरक छलपूर्ण हत्या आ भव सिंहक तिरहुत पर सम्पूर्ण प्रभुत्व स्थापित हेबाक काल विद्यापति दश बरखक बालक रहथि। एहि सँ प्रतीत होइत अछि जे विद्यापतिक जन्म ओहि समय मे भेल रहनि जखन हुनक पितामहक पितिऔत भाय चण्डेश्वर जीवित रहथि।

विद्यापति महा-वार्तिक नैवन्धिकक रूप मे विख्यात धीरेश्वरक प्रपौत्र रहथि, यद्यपि आव हुनक कोनो ग्रंथ उपलब्ध नहि अछि। धीरेश्वर चण्डेश्वरक पिता वीरेश्वर आ ओहि गणेश्वरक भाइ रहथि जे अन्तिम कर्णाट राजाक सुविदित बुद्धिमान मंत्री रहथि। 'पुरुष परीक्षा' मे वीरेश्वर आ गणेश्वर—दुहुक सम्बन्ध मे किम्वदन्ती सभक वर्णन कयल गेल अछि। धीरेश्वरक बेटा जयदत्त रहथि आ हुनक बेटा गणपति। गणपति हमरासभक कविक पिता छलाह।

नाम सभक समानताक कारण किछु गोटे ई बुझलनि जे 'वर्णरत्नाकर'क लेखक कविशेखर ज्योतिरीश्वर, जिनक पिताक नाम धीरेश्वर रहनि, जयदत्तक भाइ रहथि, जिनक प्रपौत्र विद्यापति छलाह। मुदा ई मिथ्या थिक, किएक जे ज्योतिरीश्वरक पिता धीरेश्वर तऽ रामेश्वरक बेटा छलाह, जखन कि विद्यापतिक प्रपितामह धीरेश्वर देवादित्यक बेटा रहथि; ई अहू लेल जे ज्योतिरीश्वर वत्स गोत्रक रहथि आ विद्यापति काश्यप गोत्रक। अही तरहें विद्यापतिक पिता गणपति कें 'गंगाभक्ति तरंगिणी'क लेखक गणपति मानल गेल छनि, मुदा ई सेहो असत्य थिक। विद्यापतिक पिता गणपति जयदत्तक बेटा रहथि, जखन कि 'गंगा भक्ति तरंगिणी'क लेखक अपना कें धीरेश्वरक पुत्र कहैत छथि। विद्यापति नाम मिथिला मे बहुत प्रचलित रहल अछि आ एहन अनेक विद्यापति भेल छथि, जाहि मे किछु गोटेक तऽ उपनामो ठाकुर रहनि, जिनक लिखल अनेक कृति हमरा सभ कें उपलब्ध अछि। अतएव विद्यापति-सम्बन्धी कोनो अध्ययन मे विद्यापति नामहि सँ तावत धरि हुनका ओ नामधारी महान कवि नहि मानि लेबाक चाही जा धरि हमरा सभकें अकाट्य प्रमाण नहि भेटि जाय। एहि मे बहुत पैघ खतरा छैक आ यदि ध्यान नहि देल गेलैक तऽओतबे मूर्खतापूर्ण तादात्म्य सिद्ध हैत जतबा कि 'गंगाभक्ति तरंगिणी'क लेखक सँ हुनक (विद्यापतिक) पिताक अथवा 'वर्ण रत्नाकर'क लेखक सँ हुनक पितामहक भाइक तादात्म्य।

विद्यापतिक जन्म विसफी नामक गाम मे भेल रहनि जे कि हुनक परिवारक वंशधरलोकनिक स्मरणक अनुसार हुनकालोकनिक पूर्वजक डीह ग्राम छलनि, फलतः समाजक नव गठनक काल में विसफी कें एहि परिवारक मूलग्राम मानि लेल गेल आ एहि तरहें ई सभ विसइवार कहयलाह। विद्यापति जीवन भरि विसफी मे रहलाह आ जखन शिव सिंह गद्दी पर बैसलाह तखन राजा (शिव सिंह) राज्यक प्रति महत्वपूर्ण सेवाक लेल कवि कें इएह गाम(विसफी)दान मे दऽ देलखिन। एहि (खैरातक) उपहारक उपभोग करैत विद्यापतिक वंशज विसफिए मे ओहि समय धरि रहलाह, जखन कि 300 बरख पूर्व ओ लोकनि मधुबनीक निकटस्थ गाम सौराठ जा कऽ बसि गेलाह, जतऽ ओ सभ अखनो विद्यमान छथि। अंग्रेज सभक आगमन धरि ई गाम एहि परिवारक कब्जा मे रहल।

विसफी गाम कें गढ़ कहल गेल अछि, जे एहि तथ्यक निश्चित सूचना दैत

अछि जे अनेक पीढ़ी धरि राजपुरुषसभक प्रभावशील परिवारक गढ़ हेबाक कारण ई गाम राजनीतिक दृष्टि सँ बहुत महत्वपूर्ण छल आ जे कि ई सभ राज-पुरुष उच्च कोटिक विद्वानो छलाह, ई गाम एहि प्रदेशक सांस्कृतिक जीवनक अगुआ छल। परिवारक उपनाम ठाकुरो अही तथ्य दिश संकेत करैत अछि, किएक जे ठाकुर सँ अचल सम्पतिक स्वामित्व अभिव्यंजित अछि आ ई बात तखन आर अधिक स्पष्ट भऽ जाइत अछि जखन हम सभ ई स्मरण करैत छी जे एहि परिवारक कम-सँ-कम एक सदस्य गणेश्वर अपना समय मे महासामन्ताधिपतिक रूप मे सुविदित छलाह।

तिरहुतक राजासभक दरबार सँ घनिष्ठ रूप सँ सम्बन्धित परिवार मे जन्म लेबाक कारणे विद्यापति के नव स्थापित राजकुलक भीतर सहज प्रवेश भेल रहल हेतनि आ बालकक वय मे ओ समान अवस्थाक कतोक राजकुमार,जेना कीर्ति सिंह, शिव सिंह, पद्म सिंह आ हरि सिंहक संग, खेलायल-धुपायल हेताह, जे सभ एहि प्रदेश पर ओइनवार शासनक पहिल सदी मे तिरहुतक इतिहास मे महत्वपूर्ण भूमिका सम्पादित कयने रहथि। मुदा एहि सभ राजकुमार मे शिव सिंहक दिश विद्यापति अधिक आकृष्ट भेलाह आ ओ शिव सिंहक सुच्चा मित्र, प्रामाणिक परामर्शदाता, स्थायी संगी आ विश्वासपात्र अधिकारी बनि गेलाह। हुनक ई साहचर्य एहि युगक इतिहासक एकटा अनन्य वैशिष्ट्य रहल अछि किएक जे शिव सिंहक उदार संरक्षण आ प्रेरणापूर्ण प्रशंसाक अधीने विद्यापतिक प्रतिभाक पूर्ण विकास भेल छल।

विद्यार्थीक रूप मे विद्यापति की-की आ कतेक पढ़ने रहथि, एहि सम्बन्ध मे हमरा सभके कोनो जानकारी नहि अछि। पारम्पकिरूप सँ ई ज्ञात होइत अछि कि ओ ओहि समयक विख्यात अध्यापक हरि मिश्र सँ पढ़ने रहथि, जे पक्षधर नाम सँ प्रसिद्ध तहियाक प्रशंसा-प्राप्त नैयायिक जयदेव मिश्रक पित्ती आ शिक्षक रहथि, जे गंगेशक 'तत्त्व चिन्तामणि'क अपन प्रसिद्ध भाष्य 'आलोक' मे अपन पितृव्य गुरुक नाम अमर कऽ गेल छथि। मुदा एना लगैत अछि जे विद्यापति कोनो गुरुक अधीन शिक्षा प्राप्त करबा मे अधिक समय व्यतीत नहि कयलनि, किएक जे हमसभ हुनका नैमिषारण्य मे देव सिंहक अनुचर सभक बीच पबैत छी जे लगभग इस्वी सन् 1368 मे अपन तरुण पुत्र शिव सिंहके राज्य चलेबाक भार सौंपि कऽ वानप्रस्थी भऽ गेल रहथि। नैमिषारण्य मे विद्यापति अपन पहिल प्रामाणिक कृति 'भू परिक्रमा' लिखलनि जे पौराणिक ढंग सँ संस्कृत मे लिखल गद्य-पद्यमय रचना थिक, जाहि मे नैमिषारण्य सँ तिरहुत धरिक मार्गक वर्णन अछि आ संगहि ओहि मे बीच मे गाँथल अछि प्रस्तावना सहित आठ टा कथा जे पुरुष परीक्षा मे सेहो अनामति ओहिना उपलब्ध अछि। 'भू परिक्रमा'क आरंभ मे पैंसठि देशक वर्णन करबाक आ पैंसठि टा कथा कहबाक प्रतिज्ञा कयल गेल अछि,परञ्च ई ग्रन्थ पहिल अध्याय सँ आगाँ नहि बढ़ि सकल, जाहि मे मात्र आठ देशक वर्णन आ आठ

टा कथा उपलब्ध अछि। जें कि ई कथा सभ पछातिक 'पुरुष परीक्षा' मे ठीक ओही रूप मे कहल गेल अछि, पौराणिक बगय तथा नैमिषारण्य आ तिरहुतक बीचक प्रदेशक भूगोल छोड़ि कऽ; अतएव ई बात स्पष्ट भऽ जाइछ कि 'भू परिक्रमा'क योजना त्यागि देल गेल छल, किएक जे विद्यापति कें देश सभक वर्णन करबा लेल आर अधिक यात्रा करबाक अवसर प्राप्त नहि भेलनि अथवा अपन योजना कें पूर्ण करबा लेल ओ अधिक समय धरि नैमिषारण्य मे रहि नहि सकलाह। शीघ्रे हुनका शिव सिंहक दरबार मे बजा लेल गेलनि आ तरुण राजकुमारक विश्वसनीय दरबारीक रूप मे ओ तत्कालीन राजनीति मे कूदि पड़लाह।

मुदा विद्यापति शुरू सँ जे सिखलनि से हुनक शिक्षाक एकटा मामूली भाग छल। समस्त मिथिला मे ओ एकटा गहन विद्वत्ताक युग छल आ आर्यावर्तक सभ भाग सँ लोक एहि ठाम संस्कृत विद्याक विभिन्न शाखा मे विशिष्ट शिक्षा प्राप्त करबा लेल अबैत छल। विद्यापति सन सर्जनशील कलाकारक मस्तिष्क एकटा विशिष्ट प्रणालीक संकीर्ण धारा मे बन्हा कऽ नहि रहि सकैत छल। तीव्र बुद्धि और ग्रहणशील मस्तिष्क द्वारा ओ साहित्यिक संसारक अपेक्षा अपना चारूकात पसरल दुनिया सँ अधिक बात सिखलनि। हुनक घर विद्याक ज्योतिक केन्द्र छल आ देश भरिक विद्वान एतय शास्त्र, धर्म, राजनीति वा सामाजिक मूल्य सभ पर चर्चा करबाक उद्देश्य सँ एकत्र होइत रहथि तथा एना प्रतीत होइत अछि जे विद्यापति अपना घरक हवा मे ज्ञान-पूरित साँस लैत रहलाह। ओहि विद्या-भासित वातावरण मे ओ बहुतो एहन बात अनायासे सीखि गेलाह जे दोसर लोक सभ विशिष्ट गुरुक अधीने श्रमपूर्वक सिखबाक आशा करैत छलाह। संगहि, हुनक मस्तिष्क एतेक तेज छल, गवेषणाशील आ ग्राहकता सँ मण्डित छल जे ओ अधिक काल तक एके विषय पर रुकि कऽ एकाग्र नहि भऽ सकैत छल। ओ रुचि-बहुल छलाह आ हुनक रुचि सर्वव्यापी छल; आ जीवनक प्रति हुनक दृष्टिकोण उदार छल। जहिना ओ शास्त्रक विद्या के बुझबाजोगर शक्ति देनिहार मूलभूत सिद्धान्तक आवश्यक शिक्षा प्राप्त कऽ लेलनि, तहिना ओ विद्यार्थी जीवनक संयम सँ मुक्त भऽ गेलाह आ अपन विख्यात परिवारक आनुवंशिक व्यवसाय कें अंगीकार कऽ लेलनि एवं स्वदेश तथा स्वजनक सेवा हेतु अपना कें समर्पित कऽ देलनि।

परञ्च हुनक विद्याभ्यास विद्यार्थी जीवनक संगे समाप्त नहि भेलनि। ओ जीवन भरि एक पिपासु पाठक बनल रहलाह आ हुनक वृद्धावस्थाक कृति सभमे उपयोग कयल गेल उद्धरण सभ कें देखि आश्चर्यमिश्रित प्रशंसाक भाव मोन मे अबैछ जे काव्य आ नाटकक अतिरिक्त, जकर प्रतिध्वनि पद-पद पर हुनक गीत सभ मे अनुगुंजित अछि, ओ महाभारत, रामायण, पुराण, तन्त्र, धर्मशास्त्र आ निबन्ध सभक सेहो कतेक सूक्ष्म अध्ययन कयने रहथि। संगहि, शिव सिंहक दरबार मे ओ राज पंडितक पद पर आसीन रहथि, आ एहि कारणें दरबार मे आवयवला

सभ विद्वान सँ हुनक घनिष्ठ सम्पर्क होइत छलनि। अपन तेज मस्तिष्क आ मेधा-शक्ति सँ ओ पढ़लाहा बात सभकेँ मोन रखैत छलाह आ सुनल बात उपन दिमाग मे ओरिआ लैत छलाह आ फेर प्रयोजन भेला पर एहि सभक लाभकारी उपयोग करैत छलाह। अतएव विद्यापति केँ विशिष्ट ज्ञानवला विद्वत्ताक अपेक्षा विशाल पाण्डित्य सँ युक्त विद्वान कहबाक चाही। ओहि युग मे जखन कि ज्ञाने विद्वत्ताक लक्षण छल, विद्यापति कोनो विशिष्ट विद्याक अधिकारीक अपेक्षा विलक्षण आ उदार प्रतिभा सँ युक्त पुरुष रहथि।

आ पढ़बो सँ अधिक विद्यापति केँ लिखबाक प्रवृत्ति (सौख) रहनि। अपन कीर्तिलता मे विद्यापति कहैत छथि, "कीर्ति रूपी लता तीनू लोक मे कोना पसरि सकैत अछि जखन कि अक्षर रूपी स्तम्भसभ सँ ओकर मण्डप नहि सजाओल जाय।" ओ देखने रहथि जे हुनक यशस्वी पूर्वज लोकनि, राजपुरुष हेबाक कारण व्यस्त रहितो, विख्यात लेखक रहथिन आ अही लेल किशोरावस्थे सँ हुनका मोन मे लेखक बनबाक महत्वाकांक्षा जागि गेल रहनि। चण्डेश्वरक वंशक परम्पराक पूर्ण रूप सँ निर्वाह करैत ओ संस्कृत मे लिखब आरम्भ कयलनि, जाहि पर बाल्यावस्थे सँ हुनक अद्‌भुत अधिकार रहनि एवं बीस बरखक अवस्थाक पूर्वे ओ प्राचीन पौराणिक शैली मे एकटा ग्रंथक प्रणयनक महत्वाकांक्षी योजना बनओने रहथि, जकर नाम ओ 'भू परिक्रमा' रखने रहथि आ जे भूगोल तथा विद्यापतिक आदर्श पुरुष के रूपायित करयबला नीति कथासभक विचित्र सम्मिश्रण थिक। परंच एना लगैत अछि जे 'भू परिक्रमा'क पूर्वे विद्यापति 'मणिमञ्जरी' नामक नाटक लिखबाक प्रयास कयने रहथि जे कि नाट्य कौशलक दृष्टि सँ बहुते अपरिपक्व नाटक छनि, मुदा जाहि मे 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'उत्तर राम-चरितम्' आ 'रत्नावली'क प्रतिध्वनि अछि आ संगहि जे नारी हृदयक कार्य-प्रणालीक आश्चर्यजनक ज्ञान प्रदर्शित करैत अछि, जे विद्यापतिक प्रेम-काव्यक निश्चित निदर्शक थिक। एहि तरहेँ अपन युवावस्था सँ जीवनक अंतिम दिन धरि ओ लिखिते रहलाह। हुनक अन्तिम कृति 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' मे धीर सिहक शासनक चर्च अछि जखन कि ओ (विद्यापति) अस्सीयो वर्ष सँ अधिक अवस्थाक रहल हेताह। यदि हम सभ हुनक गीत सभकेँ कात कऽदी, जे एको हजार सँ संख्या मे अधिक हैत, तैयो हुनक एक दर्जन एहन रचना छनि जे लेखन हेतु समर्पित जीवन केँ प्रशंसायोग्य बना दैत छैक। मुदा, विद्यापति मात्र एकटा लेखक नहि रहथि, ओ बहुतो तरहक रुचि सँ सम्पन्न व्यक्ति रहथि जे अपना जीवनक अधिकांश समय मे तत्कालीन राजनीति मे व्यस्त रहथि। अतः 'कीर्तिलता' मे कीर्तिरूपी लताक पसरबा लेल शब्द सभक स्तम्भसँ ओ मण्डप बनेबाक जे गप्प कहने रहथि से हुनक व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा रहनि आ जे प्रशंसाक प्रति अपन आकर्षणक कारणे लिखने रहथि आ जे हुनका जीवनकाल आ मृत्युक उपरांतो

प्रचुर मात्रा मे प्राप्त भेलनि ।

विद्यापति ओइनवार दरबार मे देव सिंहक समय मे अथवा ताहू सँ पहिने प्रवेश कयलनि आ ओ देव सिंहक संग नैमिषारण्य गेल रहथि, मुदा इस्वी सन् 1370क करीब, जखन शिव सिंह अपन शक्ति बढ़ेबा मे लागल रहथि, विद्यापति कें तिरहुत बजाओल गेलनि । तहिया सँ शिव सिंहक अन्तिम दिन धरि ओ राजाक संग निरन्तर बनल रहलाह आ एकटा प्रामाणिक मित्र एवं बुद्धिमान परामर्शदाताक रूप मे अत्यधिक स्वामिभक्ति सँ प्रमुख रूप सँ हुनक सेवा करैत रहलाह । अधिकृत रूप सँ ओ राजपण्डितक पद पर नियुक्त रहथि आ हुनक काज रहनि पण्डित सभक स्वागत करब, हुनका सभक देख-रेख करब, हुनका सभ लेल पुरस्कार आ दानक प्रबन्ध करब इत्यादि, किन्तु वास्तव मे ओ राजाक घनिष्ठ मित्र, इमानदार परामर्शदाता, अभिन्न सहचर आ विश्वासपात्र अधिकारी छलाह । हुनका पर राजाक पूर्ण विश्वास रहनि । ओ निश्चित रूप सँ राजाक आज्ञाकारी रहथि । एहन कहल जाइत अछि जे एक बेर जखन राजस्व नहि देबाक कारणें शिव सिंह कें बन्दी बना लेल गेलनि, तखन ओ विद्यापतिए रहथि जे दीवानक छोट बालक अमृतकरक संग अपन कविता सँ नबाब कें एतेक प्रसन्न कऽ देलनि कि राजा के नहि केवल मुक्त कऽ देल गेलनि, वरन् एहि तरहक प्रमुख कविगण कें संरक्षण देबाक लेल हुनका अत्यधिक सम्मानितो कयल गेलनि तथा विद्यापति कें कविशेखरक पदवी सँ विभूषित कयल गेलनि । जखन शिव सिंह सिंहासनारूढ़ भेलाह, तखन विद्यापति कें हुनक मूल ग्राम्य दान मे दऽकऽ एवं अभिनव जयदेवक विशिष्ट पदवी प्रदान कय हुनका सम्मानित कयलनि । जाहि युद्ध सँ ओ (शिव सिंह) घुरि कऽ नहि अयलाह ताहि युद्ध मे जाइतकाल शिव सिंह अपन छबो पत्नी कें विद्यापति कें सौंपि हुनका सभक सुरक्षा लेल कहने रहथि । कवि पर राजाक एहिरूपक विश्वास रहनि आ एकर ओ पूर्ण रूप सँ योग्य पात्र रहथि ।

एहि तरहें विद्यापति शिव सिंहक दरबार मे करीब छत्तीस वर्ष धरि रहलाह । मिथिलाक इतिहास मे एहि सँ अधिक कीर्तिशाली, बलवान आ हितैषी, दृढ मुदा लोकप्रिय राजा आन केयो नहि भेल । मिथिला मे एकटा कहबी खूबे प्रचलित अछि--

पोखरि रजोखरि आर सभ पोखरा ।
राजा शिव सिंह आर सभ छोकड़ा ।।

(पोखरि मे मात्र रजोखरिये टा पोखरि छल आ आर सभ डबरा छल । मात्र शिव सिंह एकटा राजा रहथि आ आर सभ छबाड़ी रहथि ।)

'कीर्तिपताका'क अन्तिम श्लोक मे विद्यापति कहैत छथि जे प्रत्येक दिशाक प्रत्येक नगरक प्रत्येक घरक स्त्रीगण शिव सिंहक विजयक गीत गबैत छथि । 'पुरुष परीक्षा'क अन्तिम श्लोक मे विद्यापति कहैत छथि जे शिव सिंह गज्जन आ गौड़, अर्थात् दिल्ली आ बंगालक अधिपति सभक संग भेल युद्ध मे विजयी भेल छलाह ।

एहि सँ ई लगैत अछि जे यद्यपि आरंभ मे शिव सिंह दिल्लीक बादशाह केँ सोझे वा विहारक सुबेदारक माध्यम सँ उपहार पठबैत छलाह, मुदा क्रमे-क्रमे ओ अपन अधिपतिक अधिकारक उपेक्षा करय लगलाह, उपहार देब बन्न कऽ देलनि, स्वाधीन भऽ गेलाह आ अपन सिक्का ढरायब आरंभ कऽ देलनि। फलतः हुनका कतोक युद्ध करय पड़लनि, जाहि मे सामान्यतः ओ विजयी भेलाह। संभवतः अही मे सँ कोनो एक विजयक यशोगान विद्यापति 'कीर्तिपताका' मे कयने छथि। तैयो अही मे सँ कोनो युद्ध मे शिव सिंह दिवंगत भेलाह, जेना कर्णाट सभ मे हरि सिंहक अपन साहसिकताक कारणें युद्ध करैत मृत्यु भेलनि। युद्ध करब, विशेषतः मुसलमान आक्रान्ता सभक संग, मिथिलाक राजपुरुष सभक कहियो नीति नहि रहलनि। ओ एकर लहरि केँ खोसामदक नीति सँ रोकबा मे सफल रहलाह। मुदा अपन शक्ति आ प्रचंड आकांक्षाक कारण कर्णाट लोकनि मे हरि सिंह तथा ओइनवार सभ मे शिव सिंह हिनका सभक (मुसलमान आक्रान्तासभक) संग युद्ध करब स्थिर कयलनि आ हिनका दुहु गोटे केँ आक्रांता सभक अति आक्रामक सेनाक आगाँ पराजित होमय पड़लनि।

प्रायः प्रशंसाक सीमा केँ छुबय वला प्रोज्ज्वल शब्दावली मे विविधतापूर्वक विद्यापति शिव सिंहक चरित्रक वर्णन कयने छथि। 'पुरुष परीक्षा'क तेसर अध्यायक अन्त मे दूटा श्लोक अछि जाहि मे शिव सिंहक तुलना भगवान विष्णु आ भगवान शिवक संग कयल गेल छनि—मात्र रूपे मे नहि, हुनका सभक व्यक्तिगत विशिष्टतो मे—आ विद्यापति कहैत छथि "दर्शन, शौर्य आ ज्ञान—एहि तीनूक संयोग दुर्लभ थिक। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे एकरा तीने गोटे धारण करैत छथि"—दू देवता—विष्णु आ शिव तथा तेसर राजा शिव सिंह रूपनारायण। विदग्ध कथा[1] मे विद्यापति कहैत छथि जे लोक विश्रुत राजा भोजक सदृश शिव सिंहो कविता आ कामिनीक सहृदय प्रेमी रहथि। हुनका गीत सभ मे ई भाव बेर-बेर पाओल जाइत अछि। हुनका पृथ्वीक कामदेव,[2] सौंदर्यक सहृदय प्रेमी,[3] राजा लोकनि मे कलाकार[4] एवं कला तथा साहित्यक उदार संरक्षक[5] कहल गेल अछि। विद्यापति तँ हुनका विष्णुक एगारहम अवतार[6] तथा कृष्णक समान प्रेमक वितरक[7] धरि

1. पुरुष परीक्षा—कथा सं०—39
2. गीत सं०—50, 245, 343, 500, 608
3. गीत सं०—240, 504
4. गीत सं०—122, 243, 294, 343, 364
5. गीत सं०—20, 245, 330
6. गीत सं०—250, 737
7. गीत सं०—75, 240, 600, 767। ई आ बादक सभ संख्या 'विद्यापति पदावली' (एन० गुप्त—1910) क देवनागरी संस्करण सँ लेल गेल अछि; जा धरि कोनो आन निर्देश नहि हो।

कहैत छथि। ई एकटा तथ्य थिक जे शिव सिंह कवि (विद्यापति) कें ओ सभ वस्तु प्रदान कयल जाहि सँ हुनक जीवन सम्पन्न आर सुखी भेल, परञ्च कवि अपना दिस सँ अपन कृति सभ मे, विशेषत: अपन गीत सभ मे, शताब्दिक शताब्दि धरि समस्त देश मे हुनका अमर बनयबा लेल सभ किछु कयलनि। 'पुरुष परीक्षा'क तेसर अध्यायक कथा सं०26 मे विद्यापति अत्यन्त भावुकतापूर्वक कवि तथा हुनक संरक्षकक संबंध मे वर्णन करैत छथि आ कहैत छथि जे कविक शब्दे द्वारा राजाक नाम युग-युग धरि स्मरण कयल जाइछ।

1307 सँ 1406 ई० धरि (बीस बरखक अवस्था सँ छप्पन बरखक अवस्था धरि), दोसर शब्दावली मे अपन पैरुखक सम्पूर्ण काल मे, विद्यापति शिव सिंहक संगे रहलाह आ जीवनक पूर्ण अपभोग करैत रहलाह। पुनर्जागरण कालक एकटा सार्थक प्रतिमा-सन, ओ अपन दृष्टिकोण मे अत्यन्त प्रगतिशील रहथि, अपन समय सँ आगाँ नजरि रखैत छलाह आ अपन सिद्धान्त सभ पर एहि प्रकारें चलबाक पूर्ण विश्वासोदीप्त साहस रखैत छलाह, जाहि सँ ने मात्र तत्कालीन, अपितु सभ युगक नारी-पुरुष प्रभावित होइतथि। हुनका शिव सिंह सदृश नृपक पूर्ण विश्वास प्राप्त रहनि आ हुनक उदार संरक्षण मे ओ जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे अपन सिद्धान्तक एहि रूपें अनुसरण करैत रहलाह जे आश्चर्यजनक रूप सँ प्रशंसनीय थिक।

4

एही अवधि मे विद्यापति अपन अधिकांश गीत सभक रचना कयलनि, जकरा सभक माध्यम सँ ओ अमर भऽ गेलाह अछि, आ संगहि चारि टा अन्य कृतियोक रचना कयलनि। अवहट्ठ मे 'कीर्तिपताका' आ 'कीर्तिलता', संस्कृत गद्य-पद्य मे 'पुरुष परीक्षा' एवं संस्कृत आ प्राकृत मे 'गोरक्ष विजय' नामक एकटा नाटक, जाहि मे मैथिली गीत सभक समावेश कय एक तरहक नवीनता प्रस्तुत कयलनि, जेना कालिदास अपन 'विक्रमोर्वशीय'क चतुर्थ अंक मे अपभ्रंशक नृत्य-गानक प्रयोग कयलनि। यदि हम सभ हुनक पौरुषकालक एहि सभ कृतिक, हुनक अधिकांश प्रेमगीत सहित, विश्लेषण करी तऽ हमरा सभ देखब जे एहि सभ कृति मे सर्वत्र एक दृष्टिकोण अछि, आ ओ थिक "पुरुषक सभ लक्षण सहित एकटा 'सत्य पुरुष'क आदर्श कल्पना, जे कि 'पुरुषाभास' पुच्छविहीन पशु सँ एकदम भिन्न थिक[1]।" विद्यापति कहैत छथि जे "पुरुष रूप मे कोनो प्राणी भेटब एकदम

1. पुरुष परीक्षा, 1/9

सोझ बात थिक, परञ्च सत्यपुरुष दुर्लभ होइत छथि।"[1] "पुरुष पौरुष धारण कइये कऽ पुरुष बनैत अछि, मात्र पुरुष रूप मे जन्म लेला सँ नहि।" हम सभ मेघ कें 'जलद' (पानि देवयवला) तखने कहैत छी जखन ओ जलक वर्षा करैत छथि; नहि तऽ ओ धूम-राशि मात्र होइछ।"[2] हुनक प्रेम गीत सभ मे वनितागण 'सत्य पुरुषे' सँ अनुराग करैत छथि, जिनका विद्यापति सुपुरुष कहैत छथि।

विद्यापति सुपुरुषक तीनटा लक्षण कहैत छथि—वीरता अर्थात् विवेक आ शक्ति सँ युक्त शौर्य; विशिष्ट कौशल सहित सुबुद्धि; तथा धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष रूपी चारू पुरुषार्थ कें प्राप्त कयनिहारे 'सुपुरुष' होइत छथि। एहि सँ ई प्रतीत होइत अछि जे विद्यापति पुरुषक समग्र व्यक्तित्वक संतुलित विकास मे विश्वास रखैत छलाह। 'पुनर्जागरण'क सत्य-संतान-सदृश ओ जीवनक पूर्ण उपभोगक ओकालति कयलनि आ जीवनक प्रति हुनक दृष्टिकोण एतेक विशाल रहनि कि ओहि मे सभ पक्ष समाहित भऽ जाइत छल; एकक अपेक्षा दोसर पर बिनु जोर देने सम्यक् रूप सँ संतुलित। वास्तव मे ओ इएह जीवन छल जे ओ स्वयं जीलनि। एहन सन प्रतीत होइत अछि जे संतुलित जीवन पर ई जोर आरंभे सँ हुनका मस्तिष्क मे रहनि। हुनक पहिले कृति 'भू परिक्रमा'क मुख्य विषय पुरुष परीक्षा अछि आ एहि कालक अन्तिम कृति 'कीर्तिलता' मे एकटा 'सुपुरुषक' चित्रण अछि।

मुदा एहि सभ बात मे विद्यापति अपन पूर्वज सभक अनुसरण कयलनि। प्रसिद्ध विद्वान आ लेखक भेलाक बादो मुख्य रूप सँ ओ राजपुरुष रहथि एवं हुनक सभ प्रयास विभिन्न वर्ग कें एकताक सूत्र मे गोंथवा लेल होइत रहनि जाहि सँ कि मुसलमानी आधिपत्यक विरोध हेतु मिथिला एक राष्ट्रक रूप मे प्रस्तुत हो। ओ एतेक मजगूत नेओ पर एकटा एहन नवीन समाजक रचना कयलनि जे सांस्कृतिक क्रिया-कलाप मे ओ पूर्वोत्तर भारतक अगुआ बनि गेल आ अपना ओहि ठाम ओ अखनो, बरु डगमगाइते, नेतृत्व कऽरहल अछि। हुनक (विद्यापतिक) राजपुरुष तिरहुतक राजगद्दीक प्रति निष्ठा मे ओतेक नहि रहनि जतेक कि मिथिला —भूमि आ ओतुका निवासीसभक प्रति हुनक निष्ठा मे रहनि। पीढी-दर-पीढी धरि ओ लोकनि सुनियोजित ढंग सँ सामाजिक पुनर्गठन कयलनि आ विद्यापति वस्तुतः ओहि मे सँ अन्तिम रहथि—सर्वाधिक बुद्धिमान, पुनर्जागरणकाल मे मिथिला मे उत्पन्न अति दुर्लभ प्रतिभा।

विद्यापति व्यक्तिगत चरित्र पर एतेक जोर एहि लेल दैत छथि आ व्यक्तित्वक समग्रताक एहि लेल संस्तुति करैत छथि जे समाजक रचना यदि सुपुरुष

1. पुरुष परीक्षा 1/8
2. कीर्तिलता, 1/12

लोकनि सँ होइत छैक, तऽ ओ सभ अपना संग समाजोक उत्थान कऽ लैत जेताह। ई एकटा एहन बात थिक जे प्रत्येक व्यक्ति लेल साध्य अछि, समाज मे ओकर स्थिति खाहे जेहनहो। 'पुरुष परीक्षा'क चारिम अध्यायक प्रस्तावना मे, विद्यापति कहैत छथि जे "ओही पथक अनुसरण करी जे जाति-परम्परा सँ सम्मत थिक, जाहि विधाताक विधान सँ अहाँ उत्पन्न भेल छी।" अतः समाजक रचना यदि सुपुरुष लोकनि सँ होइत अछि आ जाति एवं धर्म, लिंग तथा आयुक अपेक्षा विनु समाजक सभ व्यक्ति कें एक संग रखबा लेल सशक्त वन्धन थिक, तऽ सामाजिक संगठन एकटा एहन राष्ट्रक रूप मे ठाढ़ भऽ सकैछ, जे जीवनक पूर्ण उपभोग लेल विहित मार्ग सँ विनु हटनहि कोनो वाहरी आक्रमणक सामना कऽ सकैत अछि। जन्म एवं उपलब्धिक सभ भिन्नताकें विनु गुदानने प्रदेश मे बसनिहार सभ गोटे कें एकजुट करबा लेल प्रादेशिक भाषाक अतिरिक्त आन कोन सुदृढ़ वंधन भऽ सकैछ? विद्यापति मिथिला मे बाजल जाइत भाषा कें अपन लोकप्रिय गीत सभक माध्यम वनओलनि आ ओहि मे ओतबे मधुर आ मोहक अभिव्यक्ति भरि देलनि जे मात्र संस्कृते भाषा मे प्राप्य छल। सुसंस्कृत लोकनिक ताहि कालधरिक भाषा संस्कृत पण्डितक बहुत छोट वर्ग धरि सीमित छलि आ संस्कृतक सद्काव्य सँ प्राप्त अनुपम आनन्द मात्र ओही वर्ग कें उपलब्ध रहैक। विद्यापति ओहि आनंद कें सभक लेल सुविधा सँ उपभोज्य बना देलनि आ जेना कि हम सभ आगाँ देखब जे ओ अपन गीत सभ लेल ओही विषय सभ चुनलनि जे सभकें समाजक निम्नतम वर्ग सहित सामान्य नारी-पुरुष कें प्रभावित करबाक सामर्थ्य रखैत छल, परञ्च उच्च अभिजात वर्गो वहिष्कृत नहि रहैछ। ओहि प्राचीन समये सँ एकटा सार्व-जनिक भाषा कें राष्ट्रत्वक पकिआ सवूत मानि लेल गेल छल आ मिथिलाक भाषा कें अपनलोकप्रिय गीत सभक भाषा वनायव वस्तुतः मिथिला कें सही अर्थ मे एकटा राष्ट्र बनेबाक दिशा मे पहिल निश्चित डेग छल। ई उल्लेखनीय थिक जे आइयो हम सभ जे मिथिलावासी छी, आन सभ सँ भिन्न एकटा सामाजिक इकाइक रूप मे मात्र अपन भाषाहिक करणें जानल जाइत छी आ ओ भाषा अपन विशिष्टता आ सुरेब अभिव्यक्तिक लेल विद्यापतिक कवि-हृदयक ओहि गीतात्मक उद्गार सभक प्रति ऋणी अछि, जे सभ सुननिहारक मोन पर मोहक प्रभाव उत्पन्न करैत छल एवं मिथिलेटा मे नहि, अपितु विदेशो मे तुरत्ते साहित्यक एकटा लोकप्रिय विधा वनि गेल।

वास्तव मे विद्यापति प्रगतिशील दृष्टिकोणक लोक रहथि आ हुनक समय कें ध्यान मे रखैत हम सभ हुनक दृष्टिकोण कें आधुनिकप्राय कहि सकैत छी। ओ स्त्री-शिक्षाक दृढ़ प्रवक्ता रहथि। ओहि युग मे सुसंस्कृत परिवार सभ मे कन्या लोकनिक शिक्षा पर समुचित ध्यान देल जाइत छल आ ओइनवार राजपरिवारक महिला वर्ग सुशिक्षित रहय। शिव सिंहक पत्नी लखिमा, अही नामक चण्डेश्वरक

पत्नी आ विद्यापतिक पुतहु चन्द्रकला लोकविश्रुत कवयित्री सभ छलीह। विद्यापति एकर पर्याप्त प्रचार कयलनि आ 'पुरुष परीक्षा'क रचना ओ एकटा एहन पाठ्य-पुस्तक तैयार करबाक स्पष्ट उद्देश्य सँ कयने रहथि, जे "काम-कला सभ मे रुचि रखनिहार नागरि-वनिता सभक मनोरंजन" लेल हो। हुनक प्रेम गीत सभक एकटा उद्देश्य महिला सभ कें यौन-शिक्षा देव छल। अपन एकटा गीत मे विद्यापति कहैत छथि जे ओ 'नागरि'क[1] गुण सिखावय चाहैत छथि आ जेना कि ग्रियर्सनक अनुवाद छनि, व्युत्पत्तिक दृष्टि सँ 'नागरि'क अर्थ यद्यपि नगरक नारी होइत अछि, तथापि संस्कृत साहित्य मे, एवं विद्यापतियो द्वारा, ओकर प्रयोग काम-कला मे निपुण महिलाक निर्देश करबा लेल भेल अछि।

सामान्य शिक्षाक प्रति विद्यापतिक निश्चित विचार रहनि। अपन सोड़हम कथा—शस्त्र-कला निपुणक कथा—क प्रारंभिक श्लोक मे विद्यापति कहैत छथि, "स्वभावतः, पुस्तकीय ज्ञान शस्त्र-ज्ञान सँ हीन थिक, किएक जे शस्त्र द्वारा राज्य कें सुरक्षित बना देलाक बादे पुस्तकीय ज्ञानक विचार मस्तिष्क मे अबैत छैक।" एतय विद्यापति स्पष्टतः अनिवार्य सैनिक-शिक्षाक पक्ष लैत छथि आ हम सभ एहि बात कें तुरत स्वीकार कऽ सकैत छी जे ई ओहि समय मे कतेक तात्कालिक आ आवश्यक रहल हेतैक जखन कि मुसलमानी आक्रमणक निरंतर आतंक सँ देशक सुरक्षा आशंका मे पड़ि गेल छल आ मिथिला द्वारा हजार वर्ष सँ अधिक समय धरि देशक निर्बल सुरक्षा सँ उत्पन्न दोष सभक अनुभव कयल गेल छल।

धार्मिक मामिला मे विद्यापति कें साम्प्रदायिक कहल गेल छनि, किछु गोटे हुनका वैष्णव कहैत छथि, किछु गोटे शैव, परञ्च विद्यापतिक ई बुधियारी-भरल विचार रहनि—"परमात्मा एकमात्र छथि आ एहि दुनिया मे एहन किछु नहि अछि जे हुनका द्वारा उत्पन्न नहि हो"[2] तथा हुनक "महत्ता मात्र नामहि सँ भिन्न अछि।"[3] अपन गीतो मे विद्यापति हर आ हरिक भिन्नता सम्बन्धी मतक खण्डन करैत छथि।[4] अपन कृति 'शैव सर्वस्वसार'क प्रस्तावना मे ओ अपन एहि विचारक समर्थन मे शास्त्र सभ सँ उद्धरण दैत सिद्ध करैत छथि जे हर आ हरि मे कोनो अन्तर नहि अछि तथा एकक प्रति भक्ति दोसराक प्रति भक्तिक समतुल्ये थिक। प्रत्येक व्यक्ति परमात्माक कोनो रूपक आराधना करबा लेल स्वाधीन अछि आ विद्यापति शिव रूपक उपासना करैत छलाह; मुदा तकर अर्थ ई नहि जे ओ हरिक निरादर करैत छलाह वा हुनका प्रति भक्तिक विरुद्ध रहथि।

---

1. नागरिपन किछु कहब चहौं : सं०—541
2. पुरुष परीक्षा—अध्याय—4 : श्लोक सं०—5
3. ,, ,,—अध्याय—4 : श्लोक सं०—5
4. हरगौरी पदावली : क्रम सं०—6 (एन० गुप्त संस्करण)

शिवक भक्ति मे रचल विद्यापतिक अनेक गीत सभक विषय मे बहुत-किछु कहल गेल अछि, किन्तु एहि सम्बन्ध मे ई मोन रखबाक चाही जे विद्यापति ने मात्र शिव-भक्ति विषयक, अपितु विष्णु, देवी, गंगा आदि दोसरो देवतासभक भक्ति-विषयक, गीतसभक रचना कयने रहथि। ई सत्य थिक जे भावनात्मक रूप सँ विद्यापति शिवरूप मे परमात्माक आराधना करैत छलाह, परञ्च परम्परानुसार ओ, प्रत्येक स्मार्त मैथिलक सदृश, पंचदेवोपासक रहथि। हुनका द्वारा शिवक भक्ति मे एतेक अधिक गीत रचल जयबाक कारण मात्र इएह छल जे समस्त हिन्दू देवी-देवता सभ मे शिवे एकटा एहन छथि जनिक भक्ति एवं पूजा ब्राह्मण सँ लऽ कऽ चाण्डाल धरि, प्रत्येक जातिक नारी-पुरुष लेल, शास्त्र-सम्मत थिक। अतएव शिव-भक्तिक गीते टा एहन भक्तिगीत छल जे लिंग एवं जातिक अपेक्षा बिनु ओहि समस्त सर्वसाधारण नर-नारी कें प्रभावित कऽ सकैत छल जिनका लेल विद्यापति ई गीत सभ लिखने रहथि।

विद्यापति अपन अधिकांश गीत अही अवधि मे लिखने रहथि आ जें आवे हुनक कीर्ति मुख्यतः अही गीत सभ पर आश्रित अछि, एहि विषय पर फराक सँ चर्चा कयल जेतैक। एहि काल मे रचित चारू मौलिक आ सर्जनात्मक कृति सभ मे प्रथम थिक 'कीर्तिपताका'—प्राचीन मैथिली आ अवहट्ठ मे लिखल गेल एकटा स्तुति काव्य, जाहि मे एक (उपलब्ध पाण्डुलिपि मे अनुलिखित नामवला) मुसलमान पर शिव सिंहक विजयक वर्णन अछि। एहि कृतिक मात्र ताड़-पत्र पर लिखल एकटा पाण्डुलिपि काठमाण्डु (नेपाल) कवीर-ग्रंथालय मे उपलब्ध अछि जकर खोज महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री कयने रहथि। ई अत्यधिक जीर्ण स्थिति मे आ अपूर्ण अछि तथा नाना तरहक गलती आ दुरूहता सँ भरल अछि एवं स्व० महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री पुनर्निर्माणक दृष्टि सँ एकरा बेकार कहि छोड़ि देने रहथि। इम्हर एहि पाण्डुलिपिक एकटा संस्करण प्रयाग सँ डा० जयकान्त मिश्र प्रकाशित कयलनि अछि, परञ्च ओ बड़ थोड़ उपयोगी अछि। पन्ना-सभक पृष्ठीकरण छूटल अछि, मुदा अंतिम पृष्ठ जेनाक-तेना अछि आ एहि सँ ई स्पष्ट होइछ जे ई शिव सिंहक विजय पर रचित विद्यापतिक कृति थिक, मुदा पाण्डुलिपि मे मंगलाचरण सहित दू टा प्रस्तावना अछि। एकटा सँ एहन प्रतीत होइत अछि जे ई उत्तरवर्ती ओइनवार सभक समयक प्रसिद्ध कवि भीष्मक कृति थिक; आ दोसर सँ एना लगैत अछि जे ई (विद्यापतिक प्रसिद्ध उपनाम) अभिनव जयदेव द्वारा अर्जुनक मनोरंजन हेतु रचल गेल प्रेम काव्य थिक। ई 'कीर्तिपताका' नहि भऽ सकैत अछि जे एकटा वीर-काव्य अछि, प्रेम काव्य नहि। अतएव एना लगैत अछि जे एहि गट्ठर मे प्राचीन मैथिलीक तीन टा भिन्न-भिन्न पाण्डुलिपिक पन्ना सभ मिझरा गेलैक अछि, जे पृष्ठीकरणक अभाव मे आब पृथक् नहि कयल जा सकैछ। ओहि मे एकटा भीष्मकृत काव्य अछि, दोसर अर्जुन राय लेल लिखल

117128
9.12.04

विद्यापतिक एकटा प्रेम-कविता थिक, आ तेसर 'कीर्तिपताका' अछि, जकर पहिल पन्ना नहि छैक, मुदा गट्ठरक आखिर मे अन्तिम पन्ना स्पष्ट छैक, जाहि सँ सभ गोटे ई अनुमान कयलनि जे ई पूरा गट्ठर कीर्तिपताकाक एकेटा पाण्डुलिपिक थिक। भीष्मक कोनो रचना अखन धरि प्रकाश मे नहि आयल अछि, ने अर्जुन राय लेल रचित विद्यापतिक कोनो प्रेम कविता।

विद्यापतिक दोसर कृति 'पुरुष परीक्षा' थिक जकर रचना, 'गोरक्ष विजय'क सँग, ओहि समय मे भेल छल जखन शिव सिंह राज्य कऽ रहल छलाह। विद्यापतिक व्यक्तित्व कें बुझबा लेल ई कृति अत्यन्त मूल्यवान् थिक एवं ओहि युगक आत्मा सेहो एहि मे प्रतिबिम्बित अछि। एकर प्रारूप बहुत पहिने तैयार कयल गेल छल। जखन ओ लिखब आरंभ कयलनि तखने एकरा प्रारंभ कयल गेल छल तथा जखन ओ अपना निर्णय मे परिपक्व, अपन सिद्धान्त मे पक्का आ एकटा उच्च कोटिक लेखकक रूप मे प्रसिद्ध भऽ गेल रहथि तखन एकरा पूर कयल गेल। अपन कृतिक प्रस्तावना मे, जे 'भू परिक्रमा' मे नहि अछि, विद्यापति कहैत छथि जे ओ ई कथा सभ लिखलनि अछि "अपरिपक्व बुद्धिबला बच्चा सभक नैतिक शिक्षा तथा काम-कला मे रुचि रखनिहार नागरि सभक मनोरंजन हेतु" (श्लोक सं० 3), आ आगाँ पुछैत छथि, "जे की विद्या-निपुण बुद्धिबला ज्ञानी सभ कथासभ मे सन्निहित नैतिक शिक्षा आ सुरेब भाषाक कारण हमर कृति कें नहि सुनताह?" एहि तरहें ई कथा सभ 'पंचतंत्र' आ 'हितोपदेश'क कथे सभक श्रेणी मे अबैत अछि, अन्तर मात्र एतबा थिक जे ओहि पोथीसभक कथासभ नीति-कथा किंवा लोक-कथा सभ अछि जखन कि विद्यापतिक रचना मे एहन कथा सभ अछि जे वास्तव मे घटि चुकल अछि किंवा जकरा घटबाक विश्वास रहैक। 'पुरुष-परीक्षा'क चारि अध्याय मे कुल 44 टा कथा अछि, आ पहिल अध्यायक 8 टा कथा पूर्वक कृति 'भू परिक्रमा' सँ यथावत् लऽ लेल गेल अछि। एहि मे सँ किछु वस्तुतः ऐतिहासिक थिक आ अचरज सँ भरलो कथासभ किछु एहन प्रकारक अछि जाहि पर सामान्य लोक-सभक विश्वास छलैक। एहि पोथीक अनुवाद 1815 ई० मे सीरामपुर मे एच० पी० राय द्वारा बंगला मे कयल गेल छल। एकरा फोर्ट विलियम कॉलेज मे ईस्ट इण्डिया कम्पनीक सेवा मे प्रविष्ट होमयबलासभ लेल पाठ्य-पुस्तकक रूप मे राखल गेल छल।

'पुरुष परीक्षा' अपन भाषागत सरलता आ शालीनताक लेल उल्लेखनीय अछि। 'भू परिक्रमा' आ 'पुरुष परीक्षा'क मध्य बेसी नहि तँ कम सँ कम 20 वर्षक अन्तर थिक, परञ्च सम्पूर्ण कृतिक शैली मे ई स्पष्ट करयबला बात बहुत थोर अछि जे 'पुरुष परीक्षा'क पहिल भाग 'भू परिक्रमा'क रूप मे प्रकाशित हुनक युवावस्थाक पहिल प्रामाणिक कृति थिक, जखन कि शेष कृति सभक रचना हुनक परिपक्व अवस्था मे भेल छल। ई संस्कृत मे हुनक अभिव्यक्ति-क्षमता कें प्रदर्शित

करैत अछि जे वस्तुतः हुनका मे जन्म-जात रहनि। एहि कृति मे कतोक एहन प्रयोग अछि जे पाणिनीय व्याकरणक अनुसार सम्मत नहि थिक आ ई कृति पूर्णतः मैथिली सँ प्रभावित अछि। तैयो एहि सँ अभिव्यक्तिक क्षति नहि भऽ कऽ भाषा सरल भऽ गेल अछि। एहि सभ बात सँ एना विश्वास होइछ जे विद्यापति एहि कृति मे एकटा एहन सामान्य संस्कृत भाषाक निर्माण हेतु चेष्टा कयलनि जे सरल आ सुबोध, किन्तु सशक्त आ शालीन, हो आ जकरा लोकप्रिय बना कऽ संस्कृतक एकटा एहन नवीन शैलीक प्रचलन हो जाहि सँ सुगमतापूर्वक भाषा सिखबाक इच्छुक सामान्य नर-नारी सरलता सँ सीखि सकथि। विद्यापति द्वारा प्रस्तुत उदाहरणक यदि अनुसरण होइत तऽ मिथिलाक लेल अजगुत मुदा एकटा सामान्य संस्कृत भाषा हमरा सभकेँ अखन उपलब्ध रहैत, मुदा आने दृष्टिकोण जकाँ अहूमे विद्यापति अपना समय सँ बहुत आगाँ रहथि आ विद्यापतिक मृत्युक तुरन्ते बाद जे अधःपतनक युग आरंभ भेल ओहि मे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन पुरातनपंथी पण्डितलोकनिक हाथ आबि गेल आ विद्यापतिक चौल कयल गेलनि। हुनक आधुनिकीकरणक चेष्टासभक निन्दा कयल गेल, हुनक मौलिक देन सभक उपेक्षा कयल गेल, मात्र एक बात छोड़ि कऽ, आ से मैथिली गीतक ओ परम्परा थिक जे एहि छौ शताब्दी सँ लाख-लाख मैथिल-जिह्वा पर विद्यमान अछि।

शिव सिंह जखन राज्य कऽ रहल छलाह तखने 'गोरक्ष विजय' नामक नाटको लिखल गेल। ई एकटा छोट-सन नाटक थिक जकरा सुविधा सँ अभिमंचित कयल जा सकैछ। एहि युग मे अभिमंचनक दृष्टि सँ कतोक छोट-छोट नाटक संस्कृत मे प्रणीत भेल छल आ ओहि सभ मे शंकर मिश्र द्वारा लिखित 'गौरी-दिगम्बर' प्रहसन संभवतः सर्वाधिक विख्यात रहय। मुदा अहू ठाम विद्यापति एकटा नवीनता प्रस्तुत कयलनि आ यदि विद्यापति द्वारा प्रस्तुत भावनाक अनुसरण होइत तऽ मैथिली, जेना कि गीतक क्षेत्र मे, ओहिना नाटकोक क्षेत्र मे एकटा शुद्ध परम्परा स्थापित कयनिहारि सभ सँ पहिल आधुनिक भारतीय भाषा होइत। विद्यापति संस्कृत आ प्राकृत गद्य तथा पद्य मे लिखल गेल नाटक सभ मे मैथिली गीतक प्रयोग कयलनि। एहि सँ अगिला डेग मैथिलीए मे सम्पूर्ण नाटकक सर्जन होइत, जेना कि असम मे शंकर देव आ हुनक शिष्य माधव देव द्वारा कयल गेल छल किंवा नेपालक मल्ल राजा सभक विभिन्न दरबारी कविसभक दीर्घ शृंखला द्वारा कयल गेल छल। मुदा विद्यापति आगाँ नहि बढ़ि सकलाह; संभवतः शिव सिंहक लापता भऽ जेबाक कारण आ अपन भाग्य मे अकस्मात् परिवर्तन भऽ जेबाक कारण। हुनक प्रेरणाक स्त्रोत सुखा गेलनि आ हुनक सर्जनात्मक प्रतिभा कुण्ठित भऽ गेलनि। मिथिला मे हुनक उत्तराधिकारी परम्पराक पालन करैत रहलाह आ हुनक नकल करैत रहलाह, मुदा ओही रूप मे जेना गुरु प्रस्तुत कयने रहथिन। आगाँ आबयबला शताब्दी मे एहि तरहक कतोक नाटक लिखल गेल, परंच एहि

सभ नाटक मे गीते टा मैथिली मे अछि। शुद्ध मैथिली नाटक तऽ मिथिला मे एहि शताब्दिक प्रारंभिक वर्ष मे लिखव संभव भऽ सकल।

एहि कालक अंतिम कृति, आ विद्यापतिक कृतिसभ मे सभ सँ विवादास्पद, 'कीर्तिलता' थिक। ई पुरान मैथिली किंवा अवहट्ठ गद्य-पद्य मे लिखित रचना थिक आ मिथिला मे ओइनवार शासनक आरंभिक दिनुका ऐतिहासिक वृत्तान्त चित्रित करवा लेल लिखल गेल अछि जे कोना जौनपुरक शर्की नवाब इब्राहिम शाहक मदति सँ कीर्ति सिंह अपना बापक हत्याक बदला लेलनि। परंच आन स्रोतसभ सँ ज्ञात घटना सभ सँ 'कीर्तिलता'क वृत्तांत मेल नहि खाइछ। गणेश्वरक हत्या ल० सं० 252 मे भेलनि, जे कीलहॉर्नक गणनाक अनुसार इस्वी सन् 1371 अछि; मुदा विद्यापतिक अनुसार (जे कहैत छथि कि शिव सिंह ल० सं० 293 तदनुसार शक सम्वत् 1324 मे गद्दी पर बैसलाह) ई घटना इस्वी सन् 1361 मे घटित प्रतीत होइछ। मुदा ई मानियो लेलापर जे इस्वी सन् 1371 मे गणेश्वरक हत्या भेल, इब्राहिम शाहक जौनपुरक नवाब हेबा मे 30 वर्षक अन्तर पड़ि जाइछ। 'कीर्तिलता' मे एहि अवधि कें मिथिला मे अराजकता आ अव्यवस्थाक अवधि कहल गेल अछि, मुदा (हम सभ जनैत छी जे अही अवधि मे मिथिला मे) शिव सिंहक राज रहनि आ हुनक दृढ़ शासन मे चारूकात शान्ति आ सुख-समृद्धि पसरल छल।

'कीर्तिलता'क विषय-वस्तु कीर्ति सिंहक यशोगाथा थिक, जे अपन धैर्य आ अध्यवसाय, शूरता आ दृढ़ प्रतिज्ञाक बल पर अपना कें एकटा सुपुरुष सिद्ध कऽ देने रहथि; परंच वास्तव मे ई इब्राहिम शाहक स्तुति-काव्य थिक, जनिक अतिशय प्रशंसा कयल गेल छनि आ जिनका अपना कालक सर्वशक्तिमान नवाब आ महानतम विजेताक रूप मे आकास ठेका देल गेल छनि। काव्यक रूप मे 'कीर्तिलता' मे ओ उत्कृष्टता नहि भेटत जे विद्यापतिक काव्यक विशिष्टता अछि आ तें एकरा हुनक आरंभक कृति मानल गेल अछि, परंच इस्वी सन् 1400 मे इब्राहिम शाहक जौनपुरक नवाब हेबाक पूर्वक ई कृति नहि भऽ सकैत अछि, जखन कि विद्यापति 50 वर्षक रहथि आ एहना स्थिति मे उपर्युक्त स्पष्टीकरणक इतिहासक संग विरोधाभास होइछ। भाषाक दृष्टि सँ 'कीर्तिलता' स्थान-स्थान पर दुरूह अछि, अंशतः एहि लेल जे जाहि एकाकी पाण्डुलिपि सँ एकर विभिन्न संस्करण प्रकाशित कयल गेल अछि ओ गलती आ दुरूहता सँ भरल अछि आ अंशतः अहू लेल जे एहि मे विशुद्ध मैथिली शब्दसभक, पद्यांश सभक, कखनो-कखनो वाक्यो सभक प्राकृत एवं अपभ्रंशक संग मिश्रण अछि आ बीच-बीच मे फारसी आ अरबीयोक शब्द सभ देल गेल अछि, विशेषतः ओहि सभ ठाम जतऽ मुसलमानी दरबार आ फौजक वर्णन अछि। एहि कृतिक पाँच टा-भिन्न-भिन्न संस्करण प्रकाशित भेल अछि आ प्रमुख विद्वानसभ ओहि संस्करण सभक अध्ययन कय विचार व्यक्त कयने छथि।

एहि ठाम कोनो विस्तृत विवाद ठाढ़ करव संभव नहि। हम एहि कृतिक अपन प्रकाशित संस्करणक प्रस्तावना मे अपन विचार स्पष्ट कयने छी आ नीचाँ अपन मत व्यक्त करैत छी।

ई एकटा तथ्य थिक जे जखन शिव सिंह राजा रहथि तखने गद्दी पर बैसिते इब्राहिम शाह तिरहुत पर आक्रमण कयने रहथि। ईहो एकटा तथ्य थिक जे गद्दी पर बैसलाक चारि वर्षक भितरे शिव सिंह पराजित भेल रहथि, सही-सही 3 वर्ष 9 मासक बाद 1405-6क हेमन्त ऋतु मे। मुदा इतिहास किंवा परम्परा सँ ई ज्ञात नहि होइछ जे शिव सिंह ककरा सँ आ किएक पराजित भेलाह आ इब्राहिम शाह ककरा विरुद्ध मिथिला पर चढ़ाइ कयने रहथि। परंच इब्राहिम शाहक आक्रमण एवं शिव सिंहक पतन एके समय मे भेल प्रतीत होइत अछि, कारण जे शिव सिंहक ओहि राज्य पर अधिकार रहनि जकरा कीर्ति सिंह अपन पैतृक सम्पत्ति मानैत छलाह। ई संभव थिक जे कीर्ति सिंहक मदति करबा लेल इब्राहिम शाह शिवसिंह पर आक्रमण कयलनि आ युद्ध मे शिव सिंह हारि गेलाह। ई यदि तथ्य थिक तऽ मिथिलाक आगाँ जौनपुर राज्य मे समाहित भऽ जेबाक आ विजयी सेना द्वारा नष्ट कऽ देल जयबाक खतरा छलैक। मुदा मिथिला कें जौनपुर राज्य मे मिलाओल नहि गेलैक आ एहन विश्वास करबाक हमरासभ लग प्रमाण अछि जे शिव सिंहक उत्तराधिकारी हुनक अनुज पद्म सिंह भेलाह। इब्राहिम शाह कला आ साहित्यक एकटा महान संरक्षक रहथि तथा शिवगीत सभक रचयिता विद्यापतिक ख्याति जौनपुरक इब्राहिम शाह धरि पहुँचले रहल हेतनि।[1] तें हमरा एहन सन लगैत अछि जे शिव सिंहक लापता भऽ गेलाक बाद विद्यापति 'कीर्तिलता'क रचना कयलनि आ एकरा संगहि नवाब लग पहुँचलाह, हुनका प्रसन्न कयलनि आ शिव सिंहक हारिक परिणामस्वरूप होमयबला विनाश आ राज्य-विलय सँ मिथिला कें बचा लेलनि।

कविक लेल ई अत्यन्त खौंझयबाक बात रहल हेतनि जे अपन संरक्षक मित्रक नाश करयबला आ अपन जीवनक सपना सभ कें समाप्त करयबला सुलतानक हुनका प्रशंसा करय पड़लनि, परच एकटा विलक्षण राजनीतिज्ञक रूप मे हुनक सर्वप्रथम निष्ठा ओहि भूमि आ जनताक प्रति रहनि, जकरा लेल हुनका अपन व्यक्तिगत भावना कें जाँतनि देवय पड़लनि आ मिथिला कें बचयबा लेल अपन प्रतिभाक उपयोग करय पड़लनि; जेना शिव सिंहक रक्षा लेल ओहि समय अपन प्रतिभाक उपयोग कयने रहथि, जखन कि राजस्व नहि देबाक कारण हुनका कैद कऽ लेल गेल रहनि। एहि तरहें 'कीर्तिलता'क सभ समस्याक हल भऽ जाइछ। एहि

1. काशी नागरी प्रचारिणी सभाक खोज प्रतिवेदन, 1944-46 हेतु, द्रष्टव्य लखन सेनी कृत हरि चरित्रक विराट् पर्व।

सँ ई स्पष्ट होइछ जे ई कविता कोन कारण सँ प्रशंसा आ काल्पनिक वर्णन सँ ओत-प्रोत अछि, सावधानी सँ शिव सिंहक उल्लेख नहि करैछ, आ कीर्ति सिंहक पिताक भाड़ाक हत्यारा कें सुलतानक आक्रमणक लक्ष्य बनबैत अछि। एहि सँ एहि मे बहुसंख्यक फारसी आ अरबी शब्दसभक प्रयोगक एवं विद्यापतिक विशिष्ट गुण सभक अभावक कारणो स्पष्ट भऽ जाइत अछि, किएक जे अपन संरक्षक-मित्रक पतनक व्यथाक समय मे कोनो कवि सँ बढ़ियाँ रचनाक आशा नहि कयल जा सकैछ। एहि उपकल्पनाक अनुसार 'कीर्तिलता'क रचना 1406 क आरंभिक ग्रीष्म ऋतु मे भेल छल। ई अपन सर्वोत्तम रूप मे एकटा ऐतिहासिक रूमानी काव्य थिक, जाहि मे मूल तथ्य मात्र ऐतिहासिक अछि आ जकर रचना एकटा मुसलमान विजेता कें प्रसन्न करबा लेल कयल गेल छल।

5

इसवी सन् 1406 क आरंभ मे शिव सिंहक पराजय एवं लापता भऽ गेला सँ विद्यापतिक जीवनक दिशा बदलि गेल। हुनक जीवनक प्रकाश आ हुनक प्रेरणा स्रोतक लोप भऽ गेलनि। राजाक संगहि हुनक सभ सपना बिला गेल। हुनक हृदयक व्यथा और अधिक तीक्ष्ण भऽ गेलनि, किएक जे राजाक मरण किंवा जीवित रहबाक कोनो खबरि प्राप्त नहि भऽ सकल। राजाक हुनका (विद्यापति) पर एतेक विश्वास रहनि, हुनका चरित्रपर एतेक भरोस रहनि, हुनक प्रामाणिकता आ विवेकक प्रति एतेक दृढ़ विचार रहनि जे ओ जखन अपन अंतिम युद्ध लेल विदा भेलाह तखन अपन छबो पत्नी कें विद्यापतिक संरक्षण मे राखि गेलाह, आ जें कि राजाक मृतो देह उपलब्ध नहि भेल, अतएव शास्त्रक अनुसार हुनक अंतिम सस्कार हेतु हुनका 12 वर्ष धरि रुकय पड़लनि। विजयी सेना द्वारा अपमानित हेबाक डर सँ विद्यापति हुनका सभ कें शिव सिंहक मित्र सप्तरीक द्रोणबार राजा पुरादित्यक लग (सम्प्रति नेपालक तराइ मे स्थित) राज बनैली पठा देलनि आ जहिना कि मिथिला राज्य मे सभ किछु ठीक-ठाक भऽ गेलैक, तत्काल ओ स्वयं स्वैच्छिक निष्कासनक जीवन बितेबा लेल आ छबो रानीक देख-रेख लेल ओतहि चलि गेलाह तथा ओ सभ बारह दीर्घ बरख धरि लापता राजाक खबरिक प्रतीक्षा करैत रहलाह।

राजबनैली मे स्वैच्छिक निष्कासनक ई बरख सभ विद्यापतिक जीवनक सर्वाधिक तमसाछन्न दिन छल। हुनका समक्ष निराशा आ उबनाइ छोड़ि आर किछु नहि रहनि। सर्जनात्मक प्रतिभा मरि चुकल रहनि आ कविता छूटि गेल रहनि। निस्सन्देह ओ सप्तरीक राजाक लेल पत्र-दस्तावेज आदि सँ सम्बन्धित संस्कृत मे एकटा पोथी लिखलनि आ ओ 'लिखनावली' हुनक एहि

कालक एकमात्र कृति थिक। पत्र सभ पर लिखल सभ तिथि ल० सं० 299क थिक, जाहि सँ ई विदित होइछ जे ई कृति अही वर्ष लिखल गेल छल। ई पोथी प्रकाशित भऽ गेल अछि आ एहि पोथीक पत्र आ दस्तावेज सभ सँ ओहि कालक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आ व्यापारिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ैत अछि।

राज बनैली मे विद्यापति कें कोनो काज नहि रहनि आ ओ रामायण, महाभारत आ पुराण सभक विस्तार सँ अध्ययन करैत रहलाह। ई सोचि जे शिव सिंह आ हुनक विलास-कलाप कें भगवान कृष्णक समान मानि स्तुति करबाक अनाचारेक ई दण्ड थिक, विद्यापति वैष्णवलोकनिक पवित्र ग्रंथ श्री मद्भागवतक नकल करबा मे लागि गेलाह, जकरा ओ राजबनैली मे ल० सं० 309 मे श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार मंगल दिन सम्पन्न कयलनि, जखन कि प्रतीक्षाक (शिव सिंहक प्रतीक्षाक) अवधि समाप्त भऽ रहल छल। ई ताड़पत्र पर 576 पात पर लिखल गेल अछि, एकर प्रत्येक पात 27 इंच लम्बा आ 5 इंच चौड़ा थिक, प्रत्येक पात पर 5 पाँती अछि। प्रत्येक पंक्ति मे 112 टा अक्षर अछि, जे सुपाठ्य, अत्यन्त स्पष्ट आ बहुत कम काटल-खोंटल अछि, जाहि सँ ई बुझा पड़ैछ जे विद्यापति एकरा कतेक सावधानी आ तत्परता सँ लिखने रहथि! ओ सम्पूर्ण पाण्डुलिपि दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक पुस्तकालय मे सुरक्षित अछि आ देखबा जोगर वस्तु थिक। ई कविक उपलब्ध एकमात्र हस्ताक्षर (हस्तलिपि) थिक।

बारह बरखक एहि दुःखदायी प्रतीक्षाक समाप्तिक उपरान्त शिव सिंहक अंतिम संस्कार कऽ देल गेलनि आ यद्यपि आन रानी सभक सम्बन्ध मे किछु ज्ञात नहि अछि, मुदा लखिमाक सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे ओ ओही ठाम चिता पर जरि गेलीह जाहि ठाम कुशक बनाओल राजाक शरीर जराओल गेल छल। बिछुड़ल राजा द्वारा प्रदत्त धरोहरि सँ उन्मुक्त भऽ विद्यापति घर घुरलाह, एकटा बदलल लोक, उदास आ वृद्ध, सत्तरिम बरख मे पहुँचल। तखन शिव सिंहक अनुज पद्म सिंहक पहिल पत्नी विश्वास देवी मिथिला पर शासन करैत छलीह। किछु विद्वान लोकनिक ई कहब[1] छनि जे शिव सिंहक बाद हुनक विधवा पत्नी लखिमा बारह बरखधरि शासन कयलनि आ फेर पद्म सिंह तथा विश्वास देवी तेरह बरख धरि। मुदा ई भ्रामक थिक। जें कि शिव सिंहकें बारह बरख धरि मृत घोषित नहि कयल गेल रहनि, तें उत्तराधिकारक प्रश्ने नहि उठैछ। शिव सिंह कें कोनो संतान नहि रहनि आ ने पद्म सिंह कें। कानूनक दृष्टि सं हुनक विधवा लखिमा हुनक अनुपस्थिति मे शासनक अधिकारिणी रहथिन, मुदा ओ राज-बनैली मे रहैत रहथि आ मिथिला कहियो घुरि कऽ नहि गेलीह। ओ अपना स्थान पर अपन देओर (पद्म सिंह) कें शासन हेतु नियुक्त कयलनि। पद्म सिंह बहुत जल्दी स्वर्गवासी

1. ग्रियर्सन जी० ए०, दि टेस्ट ऑफ मैथिल, प्रस्तावना, पृ०—12

भऽ गेलाह आ हुनका स्थान पर हुनक पत्नी विश्वास देवी शासनक बागडोर सम्हारि लेलनि। मुदा एकटा स्त्री शासकक रूप मे गद्दी पर नहि बैसि सकैत छलि आ तें मृत राजाक अंतिम संस्कार भेला पर उत्तराधिकारीक प्रश्न उठलैक तथा भव सिंहक सभ सँ छोट बेटा हर सिंहकेँ गद्दी वापिस भेटलनि। किन्तु एकहि बात मे सन्देह अछि जे ओ तखन जीवित रहथि वा नहि आ नियमानुसार हुनक बेटा नर सिंह शिव सिंहक अगिला पुरुष उत्तराधिकारी भेलाह। जे हो, बारह बरखक प्रतीक्षाक अवधि भिन्न-भिन्न तरहेँ लखिमा, पद्म सिंह आ विश्वास देवी लेल लाभदायक कहल गेल अछि। ई एकटा रोचक बात थिक जे देव सिंह सँ लऽ कऽ ओइववार वंशक प्रत्येक राजा राजगद्दी पर बैसलाक बाद कोनो ने कोनो विरुद धारण कयने रहथि। देव सिंह गरुड़ नारायण रहथि, शिव सिंह रूप नारायण रहथि, नर सिंह दर्पनारायण रहथि आदि-आदि। पद्म सिंहक कोनो विरुद नहि भेटैछ जाहि सँ बुझा पड़ैछ जे ओ मात्र एकटा राज प्रतिनिधि रहथि, राजा नहि। एहिना हर सिंहक सेहो कोनो विरुद नहि भेटैछ, तेँ एहि बात मे सन्देह अछि जे की जखन शिव सिंहक मृत घोषित भेलाक बाद उत्तराधिकारीक प्रश्न उठलैक, तखन ओ जीवैत रहथि?

मुदा, विद्यापति एकटा सक्रिय रहयवला लोक रहथि आ ओ जीवन मे कर्त्तव्य सँ हटलाह नहि। ओ तिरहुतक राजाक दरबार मे शामिल भऽ गेलाह आ घुरलाक बादक अपन जीवनक अंतिम बीस सं किछु अधिक बरख धरि ओ तीन राजाक दरबार मे कार्य कयलनि—हर सिंह, हुनक बेटा नर सिंह आ तनिक बेटा धीरसिंह। ओ चारि राजकीय व्यक्ति-सभ लेल सातटा पोथी लिखलनि—दूटा विश्वास देवी लेल, एकटा नर सिंह लेल, एक हुनक पत्नी धीरमति लेल आ अंत मे धीर सिंह लेल। ई सभ स्मृति-ग्रंथ थिक; सभ संस्कृत मे अछि, सभ संकलन थिक आ एकोटा मौलिक सर्जनात्मक कृति नहि थिक। अतएव एना प्रतीत होइछ जे ओ दरबार मे शामिल तऽ भेलाह, परंच एकटा सक्रिय दरबारीक रूप मे नहि, अपितु एकटा वृद्ध राजनीतिज्ञक रूप मे, जे कानून, आचार, विचार किंवा नीति सँ सम्बन्धित प्रश्न सभ पर परामर्श देबा लेल सदति प्रस्तुत रहैत छलाह, मुदा कोनो स्वतंत्र उत्तर-दायित्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित नहि रहथि। किछु विद्वानलोकनिक कहब छनि जे ओ किछु भक्तिगीत सेहो लिखलनि, विशेषत: ओहन गीत जाहि मे वृद्धावस्थाक निराशा आ उबि एतेक प्रामाणिकता आ भावुकता संग वर्णित अछि, मुदा गीत सभ मे व्यक्त भावना हुनक व्यक्तिगत अनुभव सभ पर आधारित नहि मानल जा सकैछ। विद्यापति परकीया प्रेम सँ सम्बन्धित कतोक सै गीत लिखने छथि, किन्तु बंगालक सहजिया जकाँ, हमरा सभ केँ ई विचार नहि हेबाक चाही जे विद्यापति स्वयं अनुचित प्रेम-संबंध सभ मे सम्मिलित रहथि। जेना कि संस्कृत मे, तहिना मैथिलीयो मे कविता व्यक्ति-वाह्य होइछ आ जे हृदयक सत्य उद्गार प्रतीत

होइछ से वास्तव मे कवि द्वारा स्वयं कल्पना शक्ति सँ निर्मित भावनाक सघनता थिक।

विश्वास देवीक नाम सँ जुटल दू टा ग्रंथ अछि—'शैव सर्वस्वसार' जे शिवक पूजा सँ सम्बन्धित अछि आ 'गंगा वाक्यावली' जे सामान्यतः पवित्र गंगाक तीर्थ यात्रा सँ आ विशेषतः तीर्थसभ आ ओतय कयल जायवला कृत्य सभ सँ सम्बन्धित अछि।

'शैव सर्वस्वसार' शिव-पूजाक सभ विधानक विस्तार सँ वर्णन करयबला एकटा प्रसिद्ध ग्रंथ अछि, जे मैथिल सभक लेल सकटा सामान्य अभिरुचिक विषय थिक। किन्तु ई अखनधरि प्रकाशित नहि भेल अछि आ एकर पाण्डुलिपि अत्यन्त दुर्लभ थिक। गंगा विषयक ग्रंथो कोनो कम महत्वक नहि थिक, विशेषतः अहू लेल जे एहि मे आह्निक ब्राह्मण लोकनिक दैनिक कर्त्तव्य सँ सम्बन्धित चर्चा विस्तार सँ अछि। ई पुस्तक डा० जे० बी० चौधरी द्वारा सम्पादित 'कन्ट्रीब्यूसन्स ऑफ वीमेन टू संस्कृत लिटरेचर' नामक पुस्तक-माला मे प्रकाशित भऽ चुकल अछि। एहि दुनू ग्रंथक, एहि कालक दोसर ग्रंथ सभक सामने, विशेषता ई थिक जे एहि मे प्रत्येक कथनक समर्थन मे शास्त्र सभ सँ बहुमूल्य उद्धरण देल गेल अछि। एहि सँ ई ज्ञात होइत अछि जे विद्यापति ब्राह्मणलोकनिक शास्त्रीय साहित्यक कतेक समर्थ ज्ञाता रहथि आ हुनक स्मरण-शक्ति कतेक आश्चर्यजनक रहनि जे ओ ई उद्धरण सभ ठीक-ठीक अद्धृत कयने छथि, किएक जे ओहि समयक ग्रंथ सभ पाण्डुलिपिये मे उपलब्ध छल आ विशेष संदर्भ मे आवश्यक भेला पर तत्सम्बन्धी ग्रंथ कें पाण्डुलिपि मे देखब सरल काज नहि छल।

एतबे अधिक विस्तृत दोसर ग्रंथ 'दानवाक्यावली' थिक, जे सन् 1883 मे वाराणसी मे प्रकाशित भेल छल आ अखन बहुत दिन सँ अमुद्रित अछि। एकरा नर सिंहक दोसर पत्नी रानी धीरमति लेल संकलित कयल गेल छल आ हुनके समर्पित अछि। एहि ग्रंथ मे विभिन्न प्रकारक दान सभक वर्णन अछि आ ओकर संकल्प-वाक्य देल गेल अछि तथा प्रत्येक वाक्यक समर्थन मे शास्त्रीय उद्धरण देल गेल अछि।

विद्यापतिक अंतिम ग्रंथ 'दुर्गा भक्ति तरंगिणी' थिक जे शिव, गंगा आ दान संबंधी ग्रंथ सभक समान थिक तथा मिथिलाक लोकप्रिय उत्सव दुर्गापूजाक विस्तारपूर्वक वर्णन करैत अछि। एहन कहल जाइत अछि जे एकरा भैरव सिंहक आदेश सँ ओहि समय मे संकलित कयल गेल छल जखन हुनक भ्राता धीर सिंह शासन करैत रहथि। विद्यापति तखन 80 बरख सँ बेसीक रहल हेताह। विद्यापतिक अखन धरि कोनो एहन कृति उपलब्ध नहि भेल अछि जे एकरा बादक मानल जाय।

ई सभ ग्रंथ विधि-विधान सभ सँ सम्बन्धित अछि, जे सामाजिक आ धार्मिक

थिक, मुदा एहि कालक 'विभागसार' नामक एकटा एहन ग्रंथ अछि जे हिन्दू लोकनिक उत्तराधिकारक कानून सँ सम्बन्धित अछि आ जकरा नर सिंह दर्प-नारायाणक आदेश सँ संकलित कयल गेल छल। एहि लेल काल-गणनाक दृष्टि सँ ई ग्रंथ गंगा आ दान सम्बन्धी ग्रंथ सभक बीच मे पड़ैछ। की कारण भऽ सकैछ जे जखन विद्यापति लगभग 80 बरखक भऽ गेल रहथि, तखन ओ एहि गंभीर ग्रंथक संकलन कयलनि, विशेषतः तखन जखन कि एहि विषय पर एतेक अधिक आधिकारिक संहिता सभ उपलब्ध छल? ई ग्रंथ अखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि आ एहि पर उचित ध्यान नहि देल गेलैक अछि। यदि हम सभ एहि ग्रंथक विषय-सूची पर दृष्टिपात करी तऽ देखब जे एहि मे एकटा प्रश्न पर अधिक जोर दऽ कऽ चर्चा कयल गेल अछि, आ शेष सभ ओहने सामान्य बात थिक जे एहि विषय सँ सम्बन्धित कोनो ग्रंथ मे भऽ सकैछ, आ ओ प्रश्न ई थिक जे राज्य अविभाज्य थिक आ ज्येष्ठता क्रम सँ उत्तराधिकार मे प्राप्त होइछ। एहन सन लगैछ जे जखन नर सिंह अपन पिताक उत्तराधिकारी बनलाह, तखन हुनक सतौत भाइ सभ राज्यक विभाजन करबय चाहलनि आ ओहि मे सँ एक रण सिंह वास्तव मे दुर्लभ नारायणक विरुद धारण कऽ लेलनि। नर सिंहकेँ अपन बेटो सभ सँ खतराक आशंका रहनि आ वास्तव मे हुनक तीनटा बेटा राजत्व धारण कऽ लेने रहथिन। अतएव एकर बहुत संभावना अछि जे जेना नर सिंहक पितामह भव सिंह विद्यापतिक पितामह वृद्ध चण्डेश्वर सँ एहन समर्थन-सहायता मङने रहथिन जाहि सँ ओ नियमित राज्याभिषेक-संस्कारक अभावो मे सीमित राजत्व धारण कऽ सकथि, तहिना नर सिंहो अपना कालक वृद्ध पुरुष, चण्डेश्वरक परिवारक सुयोग्य वंशज सँ एहि बातक समर्थन मँगलनि जे ओ (विद्यापति) आधिकारिक ग्रंथ सभ सँ ई सिद्ध कऽ देथु जे राज्यक उत्तराधिकारी वस्तुतः उत्तराधिकारक सामान्य नियम सँ नहि, अपितु ज्येष्ठता-क्रमक विशेष नियम सँ नियंत्रित होइछ आ विद्यापति ई काज दोसर ग्रंथ सभक अतिरिक्त चण्डेश्वरक पिता आ अपन प्रपितामहक अग्रज वीरेश्वरक 'नीतिसार' सँ उद्धरण दऽ कऽ आधिकारिक रूप सँ सम्पन्न कयलनि। एहि पीढ़ीक ओइनवार सभ मे पारिवारिक झगड़ा भेल छल। ई बात ल० सं० 394 अथवा इस्वी सन् 1503 क[1] अनुमति देवीक भगीरथपुरक शिलालेखक एकटा पाँती सँ ज्ञात होइत अछि। ई रानी भैरव सिंहक पुत्र-वधू रामभद्रक पत्नी आ अंतिम ओइनवार राजा कंस नारायणक माता छलीह। एहि शिलालेख मे हुनक एहि बातक लेल प्रशंसा कयल गेल छनि जे ओ अपन विनम्रता आ कूटनीति सँ अपना बान्धव-सभ मे सौहार्द उत्पन्न[2] कयलनि। एहन सन लगैत अछि जे बंगालक

1. जर्नल ऑफ द बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड—41. अनुच्छेद—3, 1955
2. किञ्चोच्चैर्विनयान्नयाच्च वशतांनीतायया बान्धवाः।

मुसलमान नवाबक संभावित आक्रमण कें ध्यान मे रखैत रानी अनुमति उत्तर-वर्त्ती ओइनवार लोकनिक मतभेद कें दूर कयने रहथि जे तीन पीढ़ी सँ नर सिंहक काल सँ चलि अबैत छल। एहि तरहें विद्यापतिक ई ग्रंथ राजनीतिक कारणसभ सँ प्रेरित छल आ ई स्पष्ट करैछ जे अपना समयक विद्वान लोकनिमे ओ कतेक सम्मानक दृष्टि सँ देखल जाइत छलाह।

विद्यापतिक एकरा अतिरिक्त दूंटा ग्रन्थ आर छनि जे लोक सभ कें सुपरिचित छैक, मुदा उपलब्ध नहि छैक। ओ थिक 'गयापत्तनक' अथवा गया मे कयल जाय वला संस्कार सभसँ सम्बन्धित ग्रंथ आ 'वर्षकृत्य' जाहि मे वरख भरि मे होवयबला उत्सव सभक वर्णन अछि। एहि दुनू मे ककरो सम्पूर्ण पाण्डुलिपि अखन धरि उपलब्ध नहि भेल अछि, आ जे खण्ड रूप मे प्राप्त भेल अछि ओहि मे कोनो प्रस्तावना नहि अछि। एतेक धरि जे ओहि मे प्रत्येक ग्रंथक आरंभ मे रहय-वला मंगलाचरण सेहो नहि अछि। एहन सन लगैत अछि जे उपलब्ध खण्ड ग्रन्थ-रूप मे संकलित नहि कयल गेल छल, अपितु ई विद्यापति द्वारा जखन-तखन लिखल गेल मात्र टिप्पणी सभ अछि। एहि लेल ई कहब संभव नहि थिक जे ई ग्रंथ सभ कोन समय मे प्रणीत भेल।

ई उल्लेखनीय थिक जे विद्यापतिक ग्रन्थक पाण्डुलिपि सभ मिथिला मे दुर्लभ अछि। 'पुरुष परीक्षा'क अतिरिक्त आन कोनो ग्रंथक पाण्डुलिपि सुलभ नहि अछि। 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका' आ 'गोरक्ष विजय' मात्र नेपाल मे उपलब्ध अछि आ ओतहु मात्र एकटा पाण्डुलिपि अत्यन्त जीर्णावस्था मे प्राप्त होइछ। 'भू परिक्रमा'क मात्र एकटा प्रति कलकत्ताक संस्कृत कालेजक संग्रह में प्राप्य अछि। 'लिखनावली'क कोनो पाण्डुलिपि उपलब्ध नहि अछि। यद्यपि 70 वरख पूर्व मिथिला मे ई ग्रंथ मुद्रित भेल छल, मुदा तकर मुद्रित प्रतियो आब सुलभ नहि अछि। 'शैव सर्वस्वसार'क एकटा खण्डित प्रति दरभंगा मे अछि आ अधिक नीक प्रति नेपाल मे प्राप्त अछि। एहन प्रतीत होइछ जे 'पुरुष परीक्षा'क अतिरिक्त हुनक कोनो ग्रंथ मिथिला मे लोकप्रिय नहि भेल छल। ई स्पष्ट थिक जे विद्या-पतिक गीतसभ हुनक आन कृतिसभ कें एतेक आच्छादित कऽ लेलक जे हुनक लोक-प्रियता हुनक गीते धरि सीमित रहि गेल। पण्डित वर्ग हुनक विचारसभक बहुत अनिच्छासंग उल्लेख करैत अछि आ हुनका एकटा अधिकारी विद्वान नहि मानैत अछि। महान् नैयायिक केशव मिश्र (वाचस्पतिक पौत्र) अपन 'दैवत' परिशिष्ट मे विद्यापतिक 'गंगा वाक्यावली'क अत्यन्त सम्मानपूर्वक उल्लेख करैत छथि, मुदा ओ सेहो विद्यापति कें 'अतिलुब्ध नगर-याचक' कहि कऽ शिव सिंह सँ अपन मूल ग्राम विसफीक दान स्वीकार करबा लेल फबती कसबा सँ बाज नहि अबैत छथि। ई एकटा रोचक बात थिक जे अखनो मिथिला मे दुर्गा पूजा विद्यापति द्वारा संकलित संहिताक अनुसार नहि कयल जाइछ। स्पष्टतः विद्यापतिक विचार

अपना समय सँ बहुत आगाँ रहनि, अतः पुरातनपंथी पण्डित-वर्ग हुनका उचित सम्मानक दृष्टि सँ नहि देखैत रहनि।

एहि तरहेँ विद्यापतिक जीवनक चारि टा स्पष्ट काल-खण्ड रहनि, प्रत्येक दोसरा सँ भिन्न रहनि आ ओ जे ग्रन्थ रचलनि से विशिष्ट काल खण्डक हुनक जीवन केँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। आरंभक 20 बरखक पहिल काल खण्ड तैयारी करबाक काल छल आ एहि काल खण्डक अन्त मे हमसभ हुनका देव सिंहक अनुचर सभक बीच नैमिषारण्य मे पबैत छी। अगिला ३६ बरखक हुनक पौरुषक काल-खण्ड शिव सिंहक दरबार मे व्यतीत भेलनि। ई हुनका जीवनक सर्वाधिक सुखीकाल छलनि, जखन हुनक सर्जनात्मक प्रतिभा चरम सीमा पर रहनि आ ओ ओहि ग्रंथ सभक रचना कयलनि अकरा लऽ कऽ हुनक नाम अमर भऽ गेलनि। स्वैच्छिक निष्कासनक अगिला 12 बरख हुनका जीवनक अंधकारमय काल-खण्ड छल, जखन निराशा आ हताशाक गंभीर वेदना हुनका चुपचाप सहय पड़लनि। अंतिम 20 बरख दरबारक वृद्ध राजनीतिज्ञक रूप मे अपेक्षाकृत शांतिपूर्वक घरे मे अध्ययन करैत आ पवित्र ग्रंथसभक संकलन करैत बिताओल गेल छल। जीवनक सभ भाग्य-परिवर्त्तनक काल, सुदिन आ दुर्दिन मे, एकटा काज एहन छल जे ओ कहियो नहि बिसरलाह, जकरा ओ कहियो बन्न नहि कयलनि आ ओ छल लिखब। हुनके शब्द मे कीर्तिलता केँ पसरबा लेल मंडपक निर्माण हेतु धैर्यपूर्वक निरन्तर अक्षर-दण्ड सभक निर्माण करैत रहलाह।

विद्यापति दूं टा विवाह कयने रहथि। यद्यपि हमरा सभकेँ ई ज्ञात नहि अछि जे ओ पहिल पत्नीक मृत्युक बाद दोसर बिआह कयने छलाह। हुनक पहिल पत्नी सँ दू टा बेटा आ दू टा बेटी रहनि आ दोसर पत्नी सँ एक बेटा आ दू बेटी। हुनक ज्येष्ठ पुत्र हरपति कोनो उत्तरवर्त्ती ओइनवार राजाक दरबार मे मुद्रा-काष्टक रहथि आ ओ ज्योतिषक एकटा ग्रंथ 'दैवज्ञ वान्धव'क रचना कयने रहथि तथा हुनक वंशज अखनो धरि उपलब्ध छथि, मुदा विसफी मे नहि, अपितु सौराठ मे जे मधुबनीक निकट अवस्थित अछि आ अपन वार्षिक (विवाह) सभा लऽ कऽ प्रसिद्ध अछि, जतय अपन बेटा-बेटीक बिआह ठीक करबा लेल लाख-लाख मैथिल ब्राह्मण एकत्र होइत छथि। विद्यापतिक सातम वंशज नारायण ठाकुर रहथि, जे 'पुरुष परीक्षा'क एकटा प्रतिलिपि तैयार कयने रहथि जे कलकत्ता मे एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगालक संग्रहालय मे सुरक्षित अछि आ जाहि पर एहि ग्रंथक हमर संस्करण आधारित थिक। कीलहार्नक अनुसार ई प्रतिलिपि ल० सं० 504 अर्थात् इस्वी सन् 1613 अथवा 1623 मे विसफी ग्राम मे तैयार कयल गेल, जतय सँ नारायणक पौत्र सौराठ चलि गेल रहथि। अखन जे सौराठ मे हुनक वंशज छथि ओ कविक सोलहम पीढ़ी मे अबैत छथि। सम्पूर्ण मिथिला मे अनेक सम्माननीय व्यक्ति अपना केँ विद्यापतिक वंशज कहैत छथि—हुनक तीन

बेटी दिश सँ विशेषतः हुनक पहिल पत्नीक बेटी सभ दिश सँ।

समस्त मिथिला मे विद्यापतिक विषय मे बहुतो अचरजक बात कहल जाइछ। एहन कहल जाइछ जे हुनक भक्ति सँ प्रसन्न भऽ कऽ भगवान शिव उगनाक भेष मे विद्यापतिक सेवक बनि गेल रहथि, मुदा ई नाम 'ण' सहित शुक्ल यजुर्वेदक[1] प्रसिद्ध रूद्राध्याय मे अबैछ जाहि सँ भगवानक उद्‌बोधन कयल जाइछ। एहनो कहल जाइछ जे गंगा तटक अपन अंतिम यात्रा मे विद्यापति आगाँ नहि बढ़ि सकलाह, मुदा राति मे गंगाक धार एना कऽ बदलि गेलैक जे ओ ओहि ठाम बहय लगलीह जतय विद्यापति अपन अंतिम राति बिता रहल छलाह आ फलतः प्रातः-काल विद्यापति अपना कें गंगा तट पर पाओल आ अपन अंतिम साँस छोड़ल। मुदा ई स्मरण रखबाक चाही जे विद्यापति अपन कथा (पुरुष परीक्षाक कथा संख्या—30 मे) 'निसर्गतः सत्पुरुष' मे एहि घटनाक उल्लेख कायस्थ बोधीक संदर्भ मे कयने छथि। वास्तविकता जे हो, मिथिलावासी लेल विद्यापति महान् पुण्यात्मा रहथि आ लोक वास्तव मे हुनका पवित्रताक अवतार मानैत छल, जे अलौकिक शक्तिसभ सँ सम्पन्न हेबाक कारणें स्वेच्छा सँ कोनो अचरजक काज कऽ सकैत छलाह।

हुनका द्वारा रचित कहल गेल एकटा गीत मे ई अंकित अछि जे विद्यापति शिव सिंहक लापता भेलाक ३२ बरखक बाद हुनका सपना मे देखलनि आ ओ संभवतः तकरा अगिला कार्तिक मासक शुक्ल पक्षक त्रयोदशी कें दिवंगत भेलाह। जीवित रहैत अपन मृत्युक तिथि कहब एकटा मनुक्ख लेल अत्यन्त अचरजक बात थिक, किन्तु ई गीत कोनो उत्तरवर्ती कविओक मानि लेल जाय, तथापि ई कहबी अत्यन्त प्राचीन थिक आ सामान्य लोक एकरा सही मानैत अछि, जाहि लऽ कऽ कार्त्तिक शुक्ल-पक्षक त्रयोदशी हुनक पुण्य-तिथि मानल जाइत अछि आ फलतः विद्यापतिक प्रशंसकलोकनि द्वारा एहि तिथि कें विद्यापति-दिवस मनाओल जाइछ। कहल जाइत अछि जे गंगाकात मे विद्यापति ओहि स्थान पर अपन अंतिम साँस लेलनि, जतय अखन पूर्वोत्तर रेलवेक हाजीपुर शाखाक बरौनी जंक्सनक अन्तर्गत विद्यापतिनगर नामक रेलवे स्टेशन अछि। एहि तरहें विद्यापति गंगातट पर देह त्यागि कऽ अपना जीवनक चारिम लक्ष्य 'मोक्ष' प्राप्त कऽ लेलनि। हुनक जीवन पूर्णत्व लेने छल, वास्तव मे ओ एकटा सार्थक जीवन छल जकर ओ जिनगी भरि ओकालति करैत रहल छलाह आ जे चारू पुरुषार्थक प्राप्ति भऽ गेला सँ सफल भऽ गेल छल —इएह छल सुपुरुषक निश्चित लक्षण।

---

1. माध्यन्दिन शाखा, अध्याय 16-25

6

एहन रहथि (हमरा सभक) विद्यापति—एक व्यक्ति; मुदा विद्यापति अमर छथि एक गीतकारक रूप मे, एहन पहिल महान् कविक रूप मे जे उन्मादक लय आ भव्य सौन्दर्य सँ समन्वित गीतक रचना हेतु प्रादेशिक बोलीक प्रयोग कयलनि, जाहि सँ भारतीय काव्य मे एकदम नवीन क्षितिजक उद्घाटन भेल। तैयो हमर सदा सँ इएह दृष्टिकोण रहल अछि जे कविक रूप मे ओ कतबो महान् किएक ने रहल होथि, ई हुनक व्यक्तित्वक एकटा अंश छल आ जे कि अंशक अपेक्षा पूर्णक अधिक महत्त्व होइत छैक (अंश कतबो पूर्ण किएक ने हो), तें कविक रूप मे हुनका बुझबा लेल आ सराहबा लेल विद्यापति कें एक व्यक्तिक रूप मे जानब अत्यन्त आवश्यक अछि। वास्तव मे ई विद्यापतिक अद्वितीय प्रतिभा रहनि जे ओ ओहि युगक नाड़ी कें ठीक-ठीक धयलनि, अपन प्रतिभाक संभावना कें पहिनहि स्पष्ट रूप सँ बुझलनि आ एकटा नवीन प्रकारक काव्यक आधार-शिला एहन दृढ़ भूमि पर रखलनि जे आगामी अनेक शताब्दी धरि कविसभक लेल हुनक अनुसरण आ अनुकरण करब एकटा परम्परा बनि गेल, मुदा विद्यापति स्वयं अपन वश, अपन प्रादेशिक वातावरण, अपन युग, अपन समाज आ अपन परिवारक एकटा प्राणी रहथि, कारण जे अहीसभ सँ हुनक प्रतिभा कें आकार आ दिशा प्राप्त भेलनि। कविक मूल्यांकन मे हमसभ दिग्भ्रमकमत भऽ सकैत छी, यदि हम सभ जाहि सीमा मे हुनका कार्य करय पड़ल रहनि ओहि सँ पृथक् एकाकी रूप मे कविक अध्ययन करी आ अपना उत्साह मे हम सभ हुनका पर एहनो बात सभ थोपि दऽ सकैत छी जे स्वयं विद्यापति कहियो सपनो मे नहि सोचि सकैत छलाह।

एकटा छोट सन उदाहरण ली। विद्यापति अपन काव्यात्मक अभिव्यक्तिक हेतु ओहि समय बाजल जायबला लोक-भाषाक प्रयोग कयलनि; मुदा अपन गीत सभ कें छोड़ि ओकर प्रयोग ओ आर कतौ नहि कयलनि। ऐतिहासिक रोमांस (काव्य) 'कीर्तिलता' आ 'कीर्तिपताका' मे, संगहि शिव सिंहक अभिषेक आ विजय सम्बन्धी अपन गीत सभ मे जे मूलतः 'कीर्तिपताका' हेतु लिखल गेल हेतैक—ओ ओहि भाषाक प्रयोग कयलनि जे सुदूर अतीत मे कहियो बाजल जाइत रहल हेतैक आ जे प्रयोग द्वारा सर्वमान्य छलैक। जखन 'कीर्तिलता' मे विद्यापति कहैत छथि जे "विद्यापतिक भाषा नूतनचन्द्रकलाक समान थिक, जाहि सँ एक भगवान शिवक मस्तक कें विभूषित करैत अछि आ दोसर कविता-प्रेमी लोकनिक मोन कें मोहिलैत अछि", तखन हुनक गीतसभ मे प्रयुक्त लोक-भाषाक पुराणपंथी आलोचकसभक आक्रमणक विरुद्ध हुनक बचाओक स्वर सुना पड़ैछ।

1. कीर्तिलता—1/5

मुदा विद्यापति मात्र अपन नाटकक गीतसभ मे मैथिलीक प्रयोग कयने रहथि आ 'लिखनावली' मे ओ सभ प्रारूप, अक्षर आ विधिपत्र आ आन-आन दस्तावेज संस्कृते मे बुझबैत छथि, मैथिली मे नहि, जे कि अधिक उपयोगी आ काम्य होइतनि। परंच हमरा सभकेँ ई मोन रखबाक चाही जे साक्षरता ओहि समय मे संस्कृतप्रेमी पुराणपंथीये लोकसभ धरि सीमित छलैक आ स्त्री सभ मे ओ नगण्य रहैक। विद्यापति अपन गीत सभ मे मैथिलीक प्रयोग एहि लेल कयलनि जे ई गीत सभ पढ़ल जयबा लेल नहि भऽ कऽ गाओल जयबा लेल लिखल गेल छल, सुनबा लेल आ कण्ठस्थ कयल जयबा लेल लिखल गेल छल। विद्यापतिक गीतो सभ मे हमरा सभ केँ दू प्रकारक मैथिली बोली भेटैत अछि। किछु गीत एहन अछि जे राजसभा आ उच्च वर्ग लेल सम्मार्जित बोली मे लिखल गेल अछि जाहि मे तत्सम शब्द सभक प्राधान्य थिक आ बिम्बावली अलंकारक लड़ी सँ सुसज्जित अछि। दोसर प्रकारक गीत सभ एहन थिक, जे तद्भव आ देशी शब्द सभक बाहुल्य लेने सरल, सोझ आ घरक भाषा मे लिखल गेल छल। यथार्थ मे जाहि कोटिक श्रोता लेल गीत लिखल गेल छल, हुनका लोकनिक सांस्कृतिक धरातलक अनुरूप विद्यापति भाषाक चुनाओ कयलनि आ अपना समयक स्त्री-पुरुष धरि पहुँचबा लेल हुनका गीत सभ केँ एहि मे सँ कोनो एक दरबाजा सँ जायब आवश्यक छलैक—राजसभा वा राज-मण्डली द्वारा, अपन परिजनसभक माध्यम सँ आ अपन मित्र तथा प्रशंसक लोकनिक घरक द्वारा। एना लगैत नहि अछि जे विद्यापति विशेष-विशेष श्रोतावर्गक अतिरिक्त अपनो लेल गीत लिखलनि। बाद मे जखन एकटा गीतकारक रूप मे हुनक ख्याति पसरि गेलनि, तखन राजा शिव सिंह द्वारा जयत नामक एकटा युवा संगीतकार एहि काज लेल नियुक्त कयल गेलाह जे ओ कवि सँ हुनक गीतसभ उपलब्ध करथि, ओकरा संगीतबद्ध करथि आ उपयुक्त अवसर पर राजसभा मे वा आनो ठाम ओकरा प्रस्तुत करथि। विद्यापतिक गीत सभक संबंध मे इएह मौलिक तथ्य थिक आ जखन हम सभ हुनका एहि दृष्टिकोण सँ देखबनि तखने बूझि सकबनि आ हुनक मूल्यांकन कऽ सकबनि।

आ अही लेल विद्यापतिक गीत सभक अध्ययनक बेर मे सभ सँ कठिन समस्या विद्यापतिक नाम सँ कहल जाइत गीत सभक प्रामाणिकताक सम्बन्ध मे उठैछ। एकर निराकरण सामान्यतः गीत सभक अंतिम चरणक भनिता मे कविक नामक उपस्थिति सँ कयल जाइछ, जे एहि गीत सभक विशेषता थिक, मुदा कतोक सदी धरि मुँहे-मुँहे प्रचार-प्रसार भेला सँ, विशेषतः अज्ञान गौनिहार आ मुख्यतः महिला द्वारा, ई भनिता सभ भ्रमात्मक, गलत स्थान पर प्रयुक्त आ जोड़ल प्रतीत होइत अछि। संगहि सभ गीत मे भनिता नहि भेटैछ। कतोक संकलन सभ मे, विशेषतः नेपाल मे, स्थानक अभावक कारणेँ भनिता छोड़ि देल गेल छैक। अठारहम सदी धरि विद्वानलोकनि द्वारा संकलित संग्रहो मे एहन भ्रांति सभ छैक जे मोन घुमा

दैछ। मिथिला मे विद्यापतिक नाम अन्त मे जोड़ि देबाक परिपाटी अखनो आम छैक। कतोक छोटको कवि सभ अपन गीतक अन्त मे जानि बूझि कऽ विद्यापतिक नाम दऽ देने छथि; जाहि सँ कवि-गुरुक रचनाक प्रसिद्धि हुनका प्राप्त भऽजाइन। बंगाल मे कम-सँ-कम एकटा कवि अपन सभ गीत विद्यापतिक नाम सँ लिखने रहथि।

इएह कारण थिक जे अखन धरि विद्यापतिक गीत सभक कोनो सम्पूर्ण संग्रह नहि तैयार कयल जा सकल अछि आ एकरा तैयार केनाइयो संदेहास्पद थिक। विद्यापति स्वयं अपना गीत सभ कें कहियो संकलित नहि कयलनि। हुनक गीत सभक मिथिला, बंगाल, नेपाल आदि क्षेत्र मे मौखिक प्रचार-प्रसार होइत रहल। एहि दिशा मे सर्वप्रथम प्रयास बंगाल मे कयल गेल, जतय भगवान कृष्ण आ गोपी सभक लीलाक वर्णन सँ समन्वित हेबाक कारणें एहि पदसभ कें वैष्णव-संकलन सभ मे सुरक्षित राखल गेल। पटनाक डा० बी० बी० मजुमदार एहि पद सभक सर्वाधिक आलोचनात्मक आ सर्वाधिक पैघ संस्करण तैयार कयलनि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषदो विद्यापतिक पद सभक संग्रह सभ बहार करैत रहल अछि। हमर मित्र डा० सुभद्र झा नेपाललक एकटा प्राचीन तालपत्र-पाण्डुलिपि मे सुरक्षित एहि गीतसभक एकटा बहुमूल्य संग्रह बहार कयलनि आ एहि सँ पूर्व श्री शिवनन्दन ठाकुर मिथिला मे प्राप्त एकटा पाण्डुलिपि कें आधार मानि एकटा सग्रह प्रकाशित कयने छलाह। 18 म सदीक मध्य मे लोचन द्वारा संकलित 'राग तरंगिणी' नामक मैथिली-संगीतक एकटा पोथी मे विद्यापतिक 53 टा गीत देल गेल अछि आ हम 'भाषा गीत-संग्रह' नाम सँ नेपालक एकटा पाण्डुलिपि प्रकाशित कयल अछि जाहि मे विद्यापतिक 77 टा गीत छनि, जाहि मे 37 एकदम नव अछि। मुदा एहि सभक रहितो गीतक संख्या ओरा नहि जाइछ। हमरा मिथिला मे दूंटा पाण्डुलिपि उपलब्ध भेल जाहि मे 300 गीत छल, एहि मे लगभग 80 अखनो धरि प्रकाशित नहि अछि आ अखन हम पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विकास कोष हेतु एहि पदावलीक आलोचनात्मक संस्करण तैयार कऽ रहल छी। परंच एहि मे सँ अधिकांश संग्रह भ्रष्ट पाठक कारण दूषित अछि, अपवाद रूप मे 'भाषा गीत-संग्रह' कें छोड़ि कऽ जे 200 वर्षों सँ पूर्व एकटा पण्डित द्वारा अत्यन्त सतर्कतापूर्वक तैयार कयल गेल छल। कारण स्पष्ट अछि, ई सभ सग्रह खाहे ओहन व्यक्ति सभ द्वारा तैयार कयल गेल छल जे मैथिली नहि बजैत छलाह किंवा एतेक विद्वान नहि रहथि जे लिखऽ जायबला बात सभ कें बूझि सकितथि। अतः ई हमर विचार अछि जे विद्यापतिक गीत सभक अध्ययन तखने संभव थिक, जखन गीत सभक प्रामाणिता आ पाठ सभक शुद्धता निश्चित भऽजाय।

हम सभ ई नहि जनैत छी जे विद्यापति एहि गीत सभ कें कहिया सँ लिखब आरम्भ कयलनि। भनिताक आधार पर कतोक गोटे द्वारा निर्दिष्ट सर्वप्रथम गीत

ओ अछि जाहि मे भोगीश्वरक नाम अछि आ जे कंदर्प-पूजा सँ सम्बन्धित अछि (गीत क्रम-850), मुदा ई प्रत्यक्षतः हास्यास्पद थिक। विद्यापति ओहि समय मे बारह बरख सँ पैघ नहि रहथि जखन ल० सं० 252 मे भोगीश्वरक बेटा गणेश्वरक हत्या कयल गेल रहनि। एहि बात पर कोना विश्वास कयल जा सकैछ जे लगभग 10 बरखक अवस्थे मे विद्यापति विरहिणीक शोकक चित्रण करयवला घोर शृंगारपूर्ण गीत सभक रचना कयने रहथि आ तकरा अपना पिता महक अवस्थाक राजा भोगीश्वर सँ सम्बद्ध कयने रहथि? अपन पहिल संस्कृत कृति 'भूपरिक्रमा' मे विद्यापति प्रेमक विषय मे कोनो चर्चा नहि करैत छथि; मुदा 'पुरुष परीक्षा'क उत्तर-वर्त्ती खण्ड सभ मे प्रेम प्रमुख विषय अछि भने कथा सभक उद्देश्य पुरुष लोकनिक अन्य लक्षणक उदाहरण देब हो। एकटा सुसंस्कृत परिवारक अनुशासित संतानक अनुरूप विद्यापति किशोरावस्था समाप्त भेलकाक आ युवावस्था मे प्रवेश कयलाक बादे प्रेम पर लिखब आरंभ कयने रहथि।

विद्यापतिक गीत सभ तीन श्रेणी मे विभक्त अछि, प्रत्येक श्रेणीक अपन-अपन विशेषता छैक; भाषा टा एहि तीनू मे समान थिक। ई ओ भाषा थिक जे ताहि समयक मैथिल नर-नारी द्वारा सरिपहुँ बाजल जाइत छल। एहि मे सर्वाधिक लोकप्रिय गीत ओ सभ थिक जे कतोक सदी धरि विद्यापति कें मैथिल ललना सभक कंठ मे जीवित रखलक अछि आ जे मिथिला मे कोनो शुभ-कार्यक आरंभ मे कयल जाइत कुलदेवताक मंगलाचरण सहित अन्य सामाजिक कार्य सभ लेल उपयुक्त होइछ। तत्पश्चात् शिवक विवाह आ पारिवारिक जीवनक वर्णन करयवला गीतसभक संग शिव भक्ति सँ सम्बन्धित गीत सभ अछि। विद्यापति नचारी नामक एहि प्रकारक नव गीतसभक रचना कयलनि जे एतेक लोकप्रिय भेल आ एतेक विख्यात भेल कि जौनपुरक एकटा कवि विद्यापति कें ओहि गीत सभक निर्माता-रूप मे स्तुति कयलनि आ आइने अकबरी[1] मे अबुल फजल विद्यापतिक सभ गीत कें, एतेक धरि जे उत्कट प्रेमभावना कें चित्रित करयवला गीतो सभकें नचारीक सामान्य नाम सँ उल्लेख करैत छथि। ई गीत सभ अखनो धरि देशक समस्त शिवभक्तलोकनि मे लोकप्रिय अछि आ प्रतिदिन कोनो शिव मन्दिर मे अकानल जा सकैछ। अन्तिम, मुदा विद्यापतिक कीर्तिक महत्वपूर्ण आधारस्तम्भ ओ गीत सभ अछि, जाहि मे शृंगारक विभिन्न रूप-रूपान्तर, भाव आ दशासभक चित्रण अछि; किछु गीतक सम्बन्ध कृष्ण आ गोपी सभ सँ अछि आ किछु गीतक सामान्य नर-नारी सँ।

विद्यापतिक गीतात्मक उद्गार सभक विभिन्न श्रेणीक अध्ययन करबा सँ पूर्व ओहि पृष्ठभूमिक चर्च करब प्रसंगानुकूल हैत, जाहि मे ई उद्गार सभ प्रवाहित

1. ग्लैडविनक अनुवाद, जगदीश मुखोपाध्याय द्वारा सम्पादित, पृष्ठ 730।

आ सफल भेल। कतोक सदी धरि विद्यापति कें जाहि उपाधि सभ सँ विभूषित कयल गेलनि अछि ओहि मे दूटा एहन अछि जे हुनक नाटक 'गोरक्ष विजय' द्वारा, बिसफी-दानक ताम्र पत्र द्वारा, परम्परा द्वारा आ सभ सँ बढ़ि कऽ हुनक गीतक भनिता सभ द्वारा अभिप्रमाणित अछि। विद्यापति कें हुनक जीवन-काले मे अभिनव जयदेव आ कवि-कंठहार कहल गेल छलनि। विद्यापति सँ सम्बद्ध अनेक उपाधि सभक विस्तृत विवेचना करयवला डा० बी० बी० मजुमदार एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे मात्र इएह दूटा उपाधि यथार्थ मे हुनकर रहनि आ मात्र हुनकर रहनि। ई दुनू उपाधि सार्थक थिक आ हम सभ यदि तकर अर्थक विश्लेषण आ मूल्यांकन करी तऽ हमरा सभकें स्पष्टतः दृष्टिगोचर हैत ओ आदर्श, जे कवि कें प्रयोग करवा लेल उत्प्रेरित कयलक, ओ आनन्द, उन्माद, जकरा द्वारा एहि प्रयोग सँ श्रोतासभक मोन कें कवि मुग्ध कऽ देलनि।

ई एकटा सर्वमान्य तथ्य थिक, जकरा बेर बेर दोहरेनाइ आवश्यक नहि थिक, जे विद्यापतिक मंच पर अयबाक कतोक सदी पहिने सँ समस्त पूर्वोत्तर भारत मे, आ विशेषतः मिथिला मे, दूटा काव्यधारा संग-संग बहि रहल छल। ई दुनू धारा मनोरंजनात्मक छल, उपदेशात्मक नहि। एहि मे एकटा सुदूर अतीत सँ चलि अबैत लौकिक संस्कृतक काव्यधारा छल, जकर प्रमुख प्रतिनिधि 'अमरू शतक' अछि, जकरा संबंध मे ई कहल गेल अछि जे एकर एकटा पद्य एक सौ संहिताक बरोबरि थिक। ई काव्यधारा संस्कृतक छल, संस्कृत अलंकार शास्त्र पर आधारित छल। संस्कृत-कविलोकनि द्वारा संस्कृत छंदसभ मे रचित भेल छल आ देशक समस्त सुसंस्कृत समाज वा विभिन्न राजदरबार सभ द्वारा संरक्षित छल। समस्त भारतक राष्ट्रभाषा संस्कृत हेबाक कारणें एहि काव्य-धाराक एकटा सार्वदेशिक प्रभाव रहैक, यद्यपि ई ओही वर्ग धरि सीमित छल जकरा संस्कृतक ज्ञान रहैक। ई काव्यधारा गीतमय छल आ अधिकांशतः शृंगार सँ परिपूर्ण छल, यद्यपि स्तुतिपरक आ भक्तिपूर्ण गीतो सभक प्रचलन रहैक। दोसर काव्य-धारा क्षेत्रीय बोली सभक काव्य-रचनाक रहैक जे प्रचलन द्वारा परिमार्जित भेल छल आ जकर पहिल प्रतिनिधित्व 'गाथा-सप्तशती' करैत अछि, मुदा जे कालिदासक 'विक्रमोर्वशीयम'क चर्चरी नृत्य-गीत सभ सँ लऽ कऽ पालकालीन बज्रयान-सिद्ध लोकनिक गीत धरि आर्यावर्तक पूर्वी क्षेत्र मे विकसित भेल आ जकर एकटा संग्रह 'बौद्ध गान ओ दोहा' नाम सँ प्रकाशित भेल अछि, जकर विशेषता ई छैक जे ई सभ आर्यावर्तक एहि क्षेत्रक लेल विशिष्ट कोनो-ने-कोनो राग मे रचित अछि, अंत मे कविक नामक उल्लेख करैत अछि, जकरा बाद मे भनिता कहल गेलैक।

जयदेव एहन प्रथम कवि रहथि जे दुनू काव्यधारा कें मिलेबाक यत्न कयलनि आ एकटा नव ढबक संस्कृत-काव्यक निर्माण कयलनि। भाषा संस्कृते छल, विषय बस्तु रहनि श्रीमद्भागवत मे चित्रित कृष्णक लीला सभ। यद्यपि ई लीला सभ

गाथा सभक समये सँ प्राकृत काव्य मे समायोजित भऽ गेल छल। रीति आ प्रकृति उएह जे लौकिक संस्कृत-काव्य मे उपलब्ध अछि। लोकगीत सभक रचना-तंत्रक उपयोग मात्र कयल गेल छल। ओ गीतसभ गेबा लेल छल, क्षेत्रीय रागसभ मे वान्हल छल आ संस्कृत-काव्य मे पहिलबेर भनिताक उपयोग भेल छल। एहि नव काव्य मे सही कविता आ उम्मादक लयक एतेक आनन्ददायक मेल भेल जे ओ लगले लोकप्रिय भऽ गेल आ आइयो लोक 'गीत गोविन्द'क गीत सभक ललित रचना आ मधुर लय सँ, बिनु अर्थ बुझनहुँ, उल्लसित भऽ जाइत अछि।

कर्णाटलोकनिक आगमनक संगहि मिथिला मे संगीत आ नृत्य कें प्रचुर प्रेरणा भेटलैक आ ज्योतिरीश्वरक 'वर्ण रत्नाकर' सँ हमरा सभ कें ज्ञात होइछ जे तत्कालीन सामाजिक जीवन मे ओकरा सभक कतेक महत्त्वपूर्ण स्थान रहैक। गीत मिथिलाक जीवनक एकटा अभिन्न अंग बनि गेल, आ आइयो अछि, तथा मैथिल घर मे एहन कोनो धार्मिक, सामाजिक वा सामयिक उत्सव नहि अछि, जकरा लेल विशेष भासवला गीत उपलब्ध नहि अछि।

विद्यापति जयदेव सँ संकेत ग्रहण कयलनि। पाल युग सँ चलि अबैत लोक-गीत सभक रचनाविधि ओ ग्रहण कयलनि, जकरा जयदेव लगभग दू सै वर्ष पहिने स्वीकार कयने रहथि। भाषा ओ उएह रखलनि जे ताहि समय मे बाजल जाइत छल, ओकर प्रयोग द्वारा सम्मार्जित रूप नहि जे ओ स्वयं कहियो काल, विशेषतः ऐतिहासिक रोमांस (काव्य) मे प्रयुक्त कयने रहथि। मुदा रीति आदिक संग विषयवस्तु ओ लौकिक संस्कृत-काव्य सँ ग्रहण कयलनि। काव्यक दुनू धाराक यथार्थ मेल भेल। आधुनिकीकरणक दिशा मे ओ जयदेवो सँ एक डेग आगाँ बढ़ि गेलाह आ संस्कृत-काव्यक आनन्द ओहू लोकसभ लेल सुलभ बना देलनि जे सभ संस्कृत नहि जनैत रहथि। विद्यापतिक रचना मे ध्वनि आ अर्थ—सामान्य स्त्री-पुरुष कें दुनू प्रभावित करैत अछि, मात्र ध्वनि नहि। अही अर्थ मे विद्यापति अभिनव जयदेव रहथि, किएक जे जयदेवक नव शैली मात्र ध्वनि तत्व कें लोकप्रिय बना सकल छल, परंच विद्यापति ध्वनि आ अर्थ—दुनू कें लोकप्रिय बना कऽ यथार्थ मे आधुनिकीकरण कऽ देलनि।

मैथिली काव्यक आकाश मे विद्यापति देदीप्यमान सूर्यक समान छलाह, जनिक दीप्तिपूर्ण उदयक संगे छोट-छोट ग्रह आ तारा सभ लुप्त भऽ गेल। हुनक पूर्वगामीलोकनिक समस्त रचना, हुनक सभ सामयिकलोकनिक अधिकांश रचना कला-प्रेमीगण मे मौखिक रूप सँ प्रचारित-प्रसारित होइत नष्ट भऽ गेल किंवा ओ अखनो विद्यमान हो आ मात्र भनिता मे लेखकक नामक स्थान पर विद्यापतिक नाम आबि गेल हो। हमसभ कल्पना कऽ सकैत छी जे विद्यापतिक कंठ मधुर रहनि आ ओ गायन मे निपुण रहथि। अपन परिवारक नारीगण द्वारा गाओल जाइत गीतसभ कें सुनि कऽ अपन किशोरावस्थे मे ओ गीत-रचना करैत रहल हेताह आ

नारीगणकेँ गयबा लेल दैत रहल हेताह। तेँ आरंभ मे ओ सामाजिक उत्सव सभ सँ सम्बन्धित गीतेक रचना कयने हेताह आ फेर युवावस्था मे प्रवेश कयला पर अपन मित्रसभ लेल, अपन मित्रगणक पत्नीसभ लेल तथा स्वयं अपन पत्नी लेल शृगार रसपूर्ण गीत सभक रचना कयने हेताह, जे निजी ढंग सँ प्रसारित होइत रहल हैत। कम-सँ-कम आरंभ मे, विद्यापति अपन अधिकांश गीत नारीगण हेतु लिखने हेताह, जिनका सभ केँ गीत गाबय पड़ैत छलनि आ तेँ हुनका सभ केँ गीतक आवश्यकता रहनि। विद्यापति कोनो व्यवसायी कवि नहि छलाह, ओ एकटा राज-दरबारी रहथि आ जखन हुनक कीर्ति पसरि गेलनि तखन ओ राजा लेल गीत लिखय लगलाह, मुदा एतहु रानिये सभ हुनक गीतकेँ उत्सुकतापूर्वक सीखैत छलीह आ सोत्साह तकर मांग करैत छलीह, किएक जे पुरुष लोकनि तऽ एहि तरहक गीतसभक आनन्द संस्कृतो काव्यक द्वारा प्राप्त कऽ लैत छलाह, संगे-संगे एहि गीतसभ मे सन्निहित काव्यानन्दक उन्मादक एक बेर अनुभूति पाबि लेबाक बाद नारीगण केँ ओतबे गीत सँ संतोष नहि होइत रहल हेतनि जतेक विद्यापति दैत रहल हेताह, अपितु ओ सभ आर गीतक अपेक्षा करैत रहल हेतीह। नारी-हृदयक विद्यापति केँ अद्भुत ज्ञान रहनि आ ओ नारीगणक गुप्त भावना केँ एतेक प्रामाणिकताक संग, यथार्थ रूप मे आ अनुभूतिपूर्वक चित्रित करैत छलाह जे स्त्रीगण ओहि गीतसभ मे स्वयं अपन चित्रण पाबि लैत छलीह। तेँ एहि गीतसभ केँ सीखयवाली आ मौखिक रूप सँ प्रचारित करयवाली नारिये सभ रहथि, जाधरि क्यो गोटे ओहि गीत सभ केँ पुस्तिका मे टाँकि नहि लैत छल। किछु दिन धरि मिथिलाक प्रत्येक सुसंस्कृत परिवार मे एकटा निजी पोथी होइत छल आ एहि गीतसभक आधुनिक संस्करण अधिकांशतः एहि पारिवारिक गीत-पोथिये सभ सँ तैयार कयल गेल अछि। विद्यापति स्वयं स्थाते कहियो कोनो गीत पोथी मे टँकने होथि, अखन धरि कविक हस्तलिपि मे एकोटा गीत अपलब्ध नहि भेल अछि आ ने तकरा विषय मे सुनले गेल अछि। आ जेँ कि ई गीत सभ, अखने जकाँ, एहि गीतक प्रेमी लोकनिक कण्ठक आभूषण छल, विद्यापति केँ प्रेमपूर्वक आ उचिते कविकंठहार कहल गेल छनि।

7

ई व्यवहार गीतसभ, जेना कि मात्र सामाजिक उत्सव सभ मे गाओल जायबला गीतसभ केँ कहल जाइछ, ओतबे प्रकारक थिक जतबे उत्सव होइत अछि आ

प्रत्येक प्रकारक गीत लेल एकटा विशिष्ट भास होइत छैक। ई गीत सभ अत्यन्त लोकप्रिय आ तेँ अत्यधिक प्रचारित-प्रसारित रहल अछि आ लिखित रूप मे बड़ थोड़ उपलब्ध होइछ। फलतः एहि गीत सभक प्रामाणिकता अत्यधिक संदेहास्पद थिक। मैथिल घर मे प्रत्येक उत्सवक आरंभ मे कयल जाइत देवीक स्तुतिक किछु भक्ति-गीत, विवाहक समय गाओल जाइत शिव-विवाह सम्बन्धी किछु, गीत आ किछु उचितो गीत, जे कि वधू-संग कोमल व्यवहार आ तकर दोष सभ कें क्षमा करबा लेल निवेदन-स्वरूप कनियाँक परिवारक स्त्रीगण द्वारा वर कें उद्दिष्ट कय गाओल जाइत अछि, इएह गीतसभ अपवाद रूप मे लेल जा सकैछ आ तकरा सभ केँ छोड़ि आन कोनो उत्सव-गीत (व्यवहार गीत) प्रामाणिक रूप सँ विद्यापति द्वारा रचित कहेबा योग्य नहि थिक आ ने कोनो प्राचीन विश्वसनीय संग्रह मे उपलब्ध थिक। किछु गोटे कें तऽ एहनो संदेह छनि जे सामान्यतः विद्यापतिक कहल जाइत गीत स्याते विद्यापति लिखने होथि। एहने एकटा ताड़-पत्र[1] पर लिखल एक गीत हमरा उपलब्ध भेल अछि जे 400 वर्ष सँ कम पुरान नहि थिक। ई एकटा विशिष्ट व्यवहार-गीत थिक जे एहने अनेक गीत सभक प्रतिनिधित्व करैछ जे विवाहक तिथिक बाद वर्ष भरि धरि वा आरो बाद धरि भोजन काल वर कें सम्बोधित कय समस्त मिथिला मे गाओल जाइछ। जोग कहल जायवला ई गीतसभ तंत्र-मन्त्रक ओहि प्रकार सभक वर्णन करैछ जकरा मदति सँ पति नववधूक भऽ कऽ रहि जाय। एहि तरहक गीत सभक मूल प्रकृति कें विद्यापति एना कहैत छथि "हे आत्मजे! एहि मंत्र कें खूब सतर्कता सँ सुनू जकरा प्रसाद सँ अहंक (नव विवाहित) पति कोनो आन (कन्या) सँ प्रभावित नहि भऽ सकत" आ तकरा बाद फेर वर्णित अछि जड़ी-बूटी सभक शरवत तैयार करबाक, धूप जरेबाक, आँखि मे विशेष प्रकारक काजर लगेबाक, आदि-आदिक विधि जे स्त्री द्वारा पुरुष कें वश मे करबाक पद्धति-रूप मे काव्यशास्त्रक कोनो ग्रंथ मे सामान्यतः कहल जाइत अछि। अगबे विलक्षणताक दृष्टि सँ एकर तुलना शेक्सपियरक कृति 'मैकबेथ' (नाटक) क जादू गीत सँ कयल जा सकैत अछि।

ई अत्यन्त खेदक विषय थिक जे एहि गीत सभ पर अपेक्षित ध्यान नहि देल गेल। अंशतः एहन ओहि गीतसभक अनुपलब्धिक कारण भेल आ अंशतः एहि लेल जे क्षेत्र-विशेषक सामाजिक पृष्ठभूमिक उपज मे हेबाक कारणें ओकर आनन्द लेब ओहने सामाजिक पृष्ठभूमि मे संभव छल। एहि सामाजिक उत्सवसभ मे प्रत्येक उत्सवक अपन विधि-विधान छैक आ यद्यपि ओकर (विधि-विधान सभक)

---

1. सम अनपब्लिश्ड मैथिली सांग्स—गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट जॉर्नल—वाल्यूम—II, पार्ट-4, पार्ट-408—अगस्त, 1945।

उल्लेख कतौ नहि छैक तथापि ओ एहि उत्सव सभक सम्पादिका नारी कें ज्ञात रहैत छैक। ओहि विधि सभक एहि गीतसभ मे वर्णन रहैत छैक जे पथ-प्रदर्शनक काज करैत छैक। एहि गीत सभक रचना काल मे एहि मे उत्सव सँ सम्बन्धित विभिन्न विधि-विधान, प्रयोग आदिक समावेश कऽ देल गेल रहैक आ प्रसारित हेबाक क्रम मे ई गीत सभ नव पीढ़ी लेल पाठक काज सेहो करैत रहल। एहि तरहें ई गीतसभ ललना लोकनिक कंठ मे उत्सव कें जीवित रखलक आ ओकरा विस्मृत हेबा वा गाउज-माउज हेबा सँ बचा लेलक। एवं प्रकारें ई गीतसभ सामाजिक समारोह सभ कें एकटा अविच्छिन्न परम्परा प्रदान कयलक अछि, ओकरा लेल मानदण्डक निर्धारण कयलक ओ ओहि गीत सभ मे समरूपता स्थापित कयलक। ते एहि गीतसभक अपन एकटा सांस्कृतिक महत्त्व छैक। काव्य-गुणक दृष्टिएं ओ सभ सरल, रसमय आ अलंकार-विहीन प्रत्यक्षदर्शितावला होइछ। ओ सभ सामान्य संवेदना आ मनोवेग कें प्रखर करैछ आ सामान्य एवं सुसंस्कृत—एहि दुनू तरहक व्यक्ति कें प्रभावित करैछ किएक जे उत्सव तऽ दुनू प्रकारक लोकक लेल समान रूप सँ महत्त्वपूर्ण होइत अछि। ओ गीतसभ यज्ञोपवीतक समय गयबा योग्य थिक जखन कि बच्चाक द्विजत्व-प्राप्ति-संस्कारक बेर मे पूर्वजलोकनिक आनन्दक वर्णन कयल जाइछ; विवाहित वधूक सासुर जयबाकाल गेबायोग्य (समदाउन नामक गीत सभ), जाहि मे विदाइ-कालक करुणा समाहित रहैछ, सोहर नामक गीत, जे पुत्र-जन्मक समय, यदा-कदा बेटियोक जन्मक बेर मे, गायल जाइत अछि जाहिमे कुटुम्बलोकनिक हर्षोल्लासक चित्रण होइछ, विशेषतः पीसीक जे भाइ-भाउज पर, विशेष कऽ भाउज पर, खुशनामा लेल जोर दैत छथि; मल्हार वा पावस नामक वर्षा-गीत, जे ओहन नव-वधू सभक दुःखक वर्णना करैत अछि जिनक पति विदेश गेल छथिन आ जे झुलुआ झुलि-झुलि मन कें बहटारैत छथि। ई सभ एहन भावना थिक जे समाजक प्रत्येक सदस्य मे विद्यमान अछि, एहन अनुभूति थिक, जकर सहभागी सभ लोक होइत अछि। प्रत्येक लोक लेल विशिष्ट आ मोहक संगीतक संग सरल, रसमय आ मधुर शब्दावली मे अभिव्यक्त हेबाक कारण ओ गीतसभ महिला लोकनि कें उत्सफूर्त कऽ दैत छलनि, ताहू समय मे आ अखनो, आ विद्यापतिक काल सँ आइ धरि सैकड़ो कवि द्वारा एहन हजार-हजार गीत लिखल गेल अछि, मुदा ओ सभक सभ कविगुरु द्वारा निर्धारित परिपाटीक अनुसारे अछि।

विद्यापतिक शिवगीतो सभ कोनो कम लोकप्रिय नहि थिक, विशेष कऽ एहि मे ओ गीतसभ जे हिमगिरि-तनया सँ शिवक विआहक वर्णन करैत अछि आ जकरा मिथिलाक नारीगण विवाह-गीत मानैत छथि। ओ शिवभक्ति सँ सम्बन्धित अनेक गीत एक विशेष भास पर लिखने छथि, जकरा शिवभक्त लोकनि डमरू बजा-बजा आ नाचि-नाचि कऽ गबैत छथि आ जकरा नचारी कहल जाइत अछि। नचारीक विशेषता ओकर विषय वस्तु नहि भऽ कऽ ओकर विशिष्ट भास थिक। क्यो कोनो

शिव मंदिर मे शिवभक्त नचारी गबैत सोन्माद नचैत देखल जा सकैत अछि। बहुलांश मे मैथिललोकनि शैव थिकाह आ शाक्तोलोकन शिवक समाने सम्मान करैत छथि। विद्यापतिक शिवगीतक कारणें लोक हुनका शैव मानैत छथि आ एहि प्रकारक अद्‌भुत कथासभ मे विश्वास करैत छथि जे उगना नामक सेवक बनि कऽ शिव विद्यापतिक सोझाँ प्रकट भेल रहथि।

विषय वस्तुक दृष्टि सँ विद्यापतिक शिवगीत तीन तरहक छनि। शिवक स्तुति मे रचल गेल गीत सभ अनुभूतिक स्तर पर एतेक निष्कपट, स्वर मे एतबा अनुतापी, प्रवृत्ति मे एतेक समर्पणात्मक, अभिव्यक्ति मे एतेक सरल, संरचना मे एतेक मधुर आ भासक स्तर पर एतेक मोहक छनि जे ओ सर्वत्र लोकप्रिय अछि, विशेषतः अहू लेल जे कर्ण आ लिंगक भेद-भाव सँ पृथक् प्रत्येक हिन्दू शिवक उपासना कऽ सकैत अछि। "हे भोलानाथ, हमर दुःख सभ अहाँ कहिया (कखन) दूर करब?"[1] अथवा "हम एहि जीवन कें कोना पार करब? जीवनरूपी सागरक कोनो अन्त नजरि नहि पड़ैछ; हे भैरव, अहीं हमर (नाहक) डाँड़ि सम्हारू।"[2]

ई सभ किछु एहन लोकप्रिय गीत थिक जे प्रत्येक व्यक्तिक हृदय मे जखन कि अपन असहाय अवस्था पर ओ विचार करैत अछि, करुणाक संचार कऽ दैत अछि। अपन कतोक गीत मे विद्यापति शिवक जीवन, दर्शन आ कार्यक बीच व्याप्त असमानताक चित्रण कयने छथि जे अतिरंजित हास्य सँ भरल अछि।

एहन कहबी अछि जे शिव कामदेव कें भस्म कऽ देने रहथि; मुदा (अर्द्ध-नारीश्वरक रूप मे) पत्नी गौरी कें अपन आधा अंग संग जोड़ि लेने रहथि। अही बात कें इंगित करैत पार्वतीक एकटा बहिनपा शिव सँ पुछैत छथिन[3]—हे परोपकारी शंभु, हे शिव शंभु, हे कामदेव कें जरा कऽ छाउड़ कऽ देनिहार, ई की जे एक दिश तऽ अहाँकें दाढ़ी-मोछ झबरल अछि आ दोसर दिश स्तन अछि, ई केहन बढ़ियाँ मेल अछि? सत्य तऽई थिक जे गौरीक सुन्दर गुणसभ कें धारण करबाक उत्कट अभिलाषक वशीभूत भऽ अहाँ ओकरा अपना देह मे समाहित कऽ लेलहुँ, एहि कृत्य सँ उत्पन्न होबयबला अपकीर्ति दिश ध्यानो नहि देल।"

दोसर दिश ओ गीत सभ अछि जाहि मे शिव-पार्वतीक विआहक विभिन्न प्रक्रमक वर्णन अछि। पाँचटा माथ आ तीन आँखिवला, तेसर आँखि मे प्रच्छन्न अग्नि जरैत, जटा-जूट सँ गंगाक प्रवाह, मस्तक पर चन्द्र-किरण चमकैत, श्मसानक

---

1. "कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ"—(अनुवादक)। पदावली—बेनीपुरी द्वारा सम्पादित, क्रम सं०—243।
2. "सिव हो, उतरब पार कओन विधि"—(अनुवादक), पदावली—बेनीपुरी द्वारा सम्पादित, क्रम सं०—239।
3. हरगौरी : एस० एन० गुप्तक संस्करण, क्रम—19।

भस्म समस्त देह मे लपेटने, मात्र हस्ति-चर्म पहिरने, सांढ़क सवारी कयने, गरदनि आ हाथ मे साँप लपेटने, हठपूर्वक विषपान करवाक कारण नीलकंठ बनल, भूत-प्रेत आ पिशाच-सन विचित्र गणयूथवला रहथि भगवान शंकर आ तें शैलाधिराजक सुन्दर सुकुमार बेटीक योग्य वर ओ नहि भऽ सकैत छलाह। कालिदास अपन 'कुमारसंभव' मे कहैत छथि जे कोना भगवान शिव ब्राह्मण बटुक बनि ओहि समय मे पार्वती लग गेलाह जखन कि ओ शिवकें पति रूप मे प्राप्त करबा लेल कठोर तपस्या कऽ रहलि छलीह आ पार्वतीक प्रेमक परीक्षा हेतु हुनका एहि असमान मेलक इच्छा करबा सँ रोकैत छथि। एकटा बूढ़, कुरूप आ मतछिन्न साधुक रूप मे शिवक निन्दा करैत बटुक कहैत छथि जे कोना शिव मे ओहि गुण सभक अभाव छनि जे कोनो कन्याक वर मे अपेक्षित थिक, विशेषतः एकटा राजकुमारीक वर मे। विद्यापति कालिदास सँ संकेत ग्रहण कयलनि आ जे बात कालिदास[1] सात पद्य मे कहने छथि तकरा विद्यापति उपालम्भ सँ भरल कतोक दर्जन गीत मे आक्षेपक विभिन्न मुद्रा मे भिन्न-भिन्न व्यक्तिक मुँह सँ कहबेने छथि—कखनो पार्वतीक मायक मुँह सँ, कखनो सखीसभ सँ वा कखनो सखीसभक परिवारक स्त्रीगणलोकनिक मुँह सँ; मुदा सदति शिवक व्यक्तित्व, हुनक अवस्था हुनक रूप आ हुनक सहचरक निंदा करैत। पार्वतीक माय कहैत छथिन—जे जन्मक बादे सँ घर-घर भीख मँगैत रहल अछि, ओ बिआहक बात कोना सोचि सकैत अछि आ ताहू मे ई गौरीक वर बनय से असह्य थिक।" अथवा "ओकरा शंकर (शांति देनिहार) नाम के देलकै जकरा पाँचटा माथ छैक, जे पुर-दैत्यक नाश कयलक, जकर रूप जरैत तेसर आँखि सहित तीन आँखिक कारण भयानक छैक आ जकर वंशक विषय मे ककरो पता नहि छैक।" आदि-आदि[3]। एकटा पड़ोसिन कहैत छथिन—हे सखि, हिमालय केहन पागल वर घर उठा अनलनि अछि···सोचिये कऽ मूर्च्छा आबि जाइत अछि। पागल बुढ़वा घोड़ा पर सवार नहि होइछ भने ओ कतबो सजल-धजल हो" आदि।[4] ई बात कतेक अर्थवान भऽ जाइत छैक जखन हमसभ स्मरण करैत छी जे अखनो मिथिला मे कन्याक पिता मध्यस्थक (घटकक) मदति सँ वरक अनुसंधान करैत छथि आ विआह हेतु घर अनैत छथि आ एहन गीतसभ मे नारदे एतेक असमान वर तकबा लेल स्त्रीगण लोकनिक आक्षेप (आक्रमण)क लक्ष्य बनैत छथि। इएह थिक ओ सामाजिक पृष्ठ-भूमि जाहि मे एहि गीतसभक मिथिलाक नारी-समुदाय पर चिरस्थायी आ व्यापक प्रभाव पड़ल अछि।

---

1. कुमार संभव (सर्ग-5), श्लोक सं०—66-72।
2. हरगौरी, क्रम सं०—14।
3. भाषा-गीत-संग्रह—(परिशिष्ट क्रम सं०—3)।
4. हरगौरी, क्रम सं०—13।

आ, जखन शिव विआह् करबा लेल अबैत छथि तखन हुनक व्यक्तित्व, हुनक पहिरावा आ सहचरलोकनि पर्याप्त श्रम आ मनोरंजन उत्पन्न करैत छथि। शास्त्रसम्मत वैदिक विधि-विधान सँ फराक विआह् मे अनेक एहन विधि-विधान होइछ, जे महिलागण द्वारा सम्पादित कयल जाइछ आ विद्यापतिक ओहन गीत-सभ मे कहल अनेक स्थानीय विधि-विधान मानदण्ड बनि गेल अछि आ ओ गीत-सभ कतोक शताब्दी सँ मिथिला मे गाओल जाइत अछि। स्त्रीगण वरक स्वागत हेतु आगाँ बढ़ैत छथि, मुदा फेर ओ लोकनि लजा कऽ पाछाँ हटि जाइत छथि, जखन कि ओ लोकनि देखैत छथि जे वर तऽ आधा नाङ्ट छथि, मात्र हस्तिचर्म पहिरने छथि। हुनका लोकनि कें वरक गरदनि मे लपेटल कपड़ाक छोर धरबाक छलनि, मुदा शिवक गरा मे चारू दिस लपटायल सर्प सभक फुफकार सँ ओ लोकनि डेरा जाइत छथि। हुनकालोकनि कें वरक आँखि मे काजर लगेबाक छलनि, मुदा (शिवक) तेसर आँखि मे जरैत आगि सं हुनका सभक हाथ झरकि जाइत छनि। विधि-विधानक सम्पादन हेतु एकत्र स्त्रीगण लोकनि मे एकटा कहैत[1] छथि—"ओ तपसी (नारद)केहन वर तकलनि जकरा देखि कऽ गौरी एतेक लोभा गेलीह ! आँखि मे (वरक) आगि जरि रहल छनि, हम काजर कत लगाउ? माथ पर गंगाक धार छनि, हमसभ चुमाओन कोना करब? बरिआती मे भूत-प्रेत आयल अछि, ओकरा सभ कें भोजन कोना करायब? बर कें पाँचटा मुँह छनि, हमसभ मउहक कोन मुँह सँ करावी?" आदि। ई सभ स्थानीय संस्कार (विधि विधान) थिक, मुदा वैदिको संस्कारक सम्पादनक समयो मे गड़बड़ी भऽ गेलै। एकटा देखनिहारक कहब[2] छनि—"जखन शिव विआहक वेदी लग गेलाह तऽ ओतुका दृश्य देखबा जोगर छल। जखने कि जटा-जूट मे आंकुस लगाओल गेल, गंगाक प्रवाह होमय लागल आ विधि-विधान हेतु एकत्र सामग्रियो सभ दहाय लागल। शिवक साँढ़ नंदीक दृष्टि जखने कुश पर पड़लनि ओ ओकरा चिबाबय लगलाह। जखन साँप सभक नजरि लावा पर पड़ल तऽ ओसभ फुफकारय लागल आ ताहि सँ साँढ़ भयभीत भऽ गेल" आदि।

एहि लोकप्रिय गीतसभक तात्पर्य तखने नीक जँका बूझल आ सराहल जा सकैत अछि जखन ओहि विशिष्ट सामाजिक जीवनक पृष्ठभूमिक सामान्य ज्ञान हो। इएह कारण थिक जे मैथिल समाज सँ बाहर एहि सभ पर ओतेक ध्यान नहि देल गेल अछि जतेक कि देल जयबाक चाही। तैयो ओ गीत सभ कतोक मनोरंजक आ कल्पना-प्लावित स्थिति सभक चित्रण करैत अछि।

अंत मे ओहन शिव-गीतसभ अछि जाहि मे शिवक पारिवारिक जीवनक चित्रण

---

1. भापा-गीत-सग्रह्— क्रन सं०—67।
2. तत्रैव —परिशिष्ट क्रम सं०—2।

अछि, विशेष कऽ शिवक घर मे पार्वतीक वर्णन अछि। सांसारिक दृष्टि सँ देखला पर, गृहिणी पार्वतीक संकट वस्तुतः एहन थिक जकरा लेल ककरो ईर्ष्या नहि भऽ सकैछ। पारिवारक मुखिया एकटा वृद्ध लोक छथि जे निर्धन आ विषपायी छथि। हुनका अपना तऽ पाँच टा मुँह छनिहेँ आ हुनक दुइ गोट बेटा मे एकटा के छौटा मुँह छनि आ दोसर बेटाक मुँह हाथीक (सूँढ़) छनि। पार्वतीक वाहन सिंह छनि आ शिवक साँढ़, जेठ बेटाक मोर आ छोट बेटाक मूस आ ई सभ जानवर एक-दोसराक परम शत्रु थिक। घर में शांति राखब आ सभ कें भोजन परसब भिन्ने समस्या थिक। पार्वती कहैत छथि—"हे माँ, हम कोना रहब? छाउड़क एकटा पोटरी छोड़ि घर मे आन कोनो वस्तु नहि। कोनो सामग्री नहि, पहिरबा लेल कोनो लत्ता नहि, क्यो उधार देबा लेल प्रस्तुत नहि, बच्चा सभ भूख सँ बिल-बिलाइत, हम एकरा सभ कें खयबा लेल को दिऔ? साँप तऽ हवा पीबि कऽ रहि जाइत अछि आ स्वामी जहर खा कऽ रहि लैत छथि। स्वामी आ सेवकक कोनो चिन्ता नहि, मुदा हम कोना रहब?[1] आदि।" स्वयं शिव सँ पार्वती कहैत छथि[2] "हे नाथ हम बेर-बेर अहाँ कें सलाह देलहुँ अछि जे किछु खेती करब आरम्भ करू। जा धरि अहाँ लग अन्न नहि हैत अहाँ भीख माँगब छोड़ि आर किछु नहि कऽ सकैत छी आ जे कि एकटा बड़ तुच्छ काज थिक, आदि।" एहन कतेक दर्जन गीतसभ मे विद्यापति घोर दरिद्रता आ असहायपनक यथार्थ चित्रण कयने छथि आ सामान्य स्त्री-पुरुष द्वारा बजबा मे प्रयुक्त भाषा मे वर्णित रहबाक कारण ओहि गीतसभक स्त्रीगण लोकनि पर विशेष प्रभाव पड़ैत छनि, जिनका सभक मोन मे पार्वतीक कष्ट आ धैर्यक प्रति हार्दिक सहानुभूति उत्पन्न भऽ जाइत छनि। अतएव ई कोनो आश्चर्यक विषय नहि थिक जे मिथिला मे गृहिणी सभ लेल पार्वती एकटा आदर्श बनि गेलि छथि आ ओ लोकनि एकटा सफल गार्हस्थ्य लेल पार्वतीक प्रशंसा करैत छथि।

तैयो ई बात ध्यान देबा योग्य थिक जे एहन सभ शिव-गीत मे, खाहे ओ उलहनक स्वर मे लिखल गेल हो वा ओकरा सभक विषय-वस्तु विरोधाभास करैत हो, शिवक व्यक्तित्व कें हुनक सभ विशेषताक संग प्रकाश मे आनल गेल अछि आ ओ सभ ओतेक दूर धरि भगवानक ओहि विशेषता सभके हमरा सभक समक्ष प्रस्तुत करैत अछि, जकर ध्यान करब भक्तिक एकटा महत्वपूर्ण अंश थिक। ऊपर सँ ओ सभ खाहे जेहन लगैत हो, तत्त्वतः ओ सभ भक्ति-गीत थिक। ओहि मे सँ किछु भयोत्पादक थिक, अधिकांश हास्य उत्पन्न करैत अछि आ कोनो-कोनो शृंगाररस सँ पूर्ण सेहो थिक। मुदा एहि सभ मे कौतुक-भाव सर्वत्र विद्यमान भेटत

1. भाषा-गीत-संग्रह, परिशिष्ट क्रम सं०—4।
2. हरगौरी, क्रम सं०—31।

जे भक्तिक भावोद्रेक मे सहायक होइछ आ कोनो शिवालय मे एहि मे सँ कोनो एकटा गीत उन्मादक संग नाचि-नाचि गबैत शिव-भक्त कें देखल जा सकैत अछि ।

आ ई शिवगीत सभ मैथिली-साहित्यक विशेष निधि थिक, जेहन गीत हमरा सभ कें एहि क्षेत्रक आन कोनो भाषा मे प्राप्त नहि होइछ । ई गीत सभ भारतीय साहित्य कें विद्यापतिक एतवा मौलिक देन थिक जे बहुतोकाल धरि विद्यापतिक नाम नचारी (गीत) सभ संग जुड़ल रहल । ई ओहू बात सँ स्पष्ट अछि जे लखन सैनी पन्दरहम शताब्दी मे आ अबुल फजल सोलहम शताब्दी मे कहने रहथि । मिथिला मे ई भक्ति-काव्यक सर्वाधिक लोकप्रिय रूप बनि गेल अछि, आ एहि पाँच सँ अधिक शताब्दीक मध्य मिथिला भरि मे शताधिक कवि सभ कतोक हजार एहन गीत लिखलनि अछि । नेपाल मे तऽ नचारियेक रूप मे सभ भक्तिगीत लिखबाक फैशन चलि गेलैक आ नेपाल मे सुरक्षित संकलनसभ मे हमरासभकें प्राप्त होइछ विष्णुक नचारी, गणेशक नचारी, सूर्यक नचारी, दुर्गाक नचारी आदि-आदि ।

ई दुःखक विषय थिक जे आधुनिक काल मे विद्यापति-साहित्यक एहि अंश पर बड़ थोड़ ध्यान देल गेल अछि, एहन सन जेना काव्यक दृष्टि सँ ई गीतसभ निम्नस्तरक हो आ ओहि महान कविगुरु विद्यापतिक योग्य नहि हो । लगभग एक सौ वर्ष पहिने विद्यापति दिश नवयुगक विद्वानलोकनिक ध्यान गैलनि आ बीम्स एवं ग्रियर्सन-सन अंग्रेज विद्वान आ हुनका सभक वाद शारदा चरण मित्र तथा नरेन्द्र नाथ गुप्त-सन बंगाली विद्वान अत्यन्त समीक्षापूर्ण दृष्टि सँ विद्यापतिक अध्ययन करय लगलाह । मुदा बंगाल मे बंगाली वैष्णव ग्रंथ सभ मे जतबा विद्यापति-साहित्य उपलब्ध रहैक, ओ लोकनि ओतबे वस्तुक अध्ययन कयलनि आ ओहि सभ मे उपलब्ध छल मात्र कृष्णक लीला सभक वर्णन कयनिहार विद्यापतिक शृंगारपूर्ण गीत । ई गीतसभ विद्यापतिक अध्ययनक एकटा परिपाटी आरम्भ कयलक आ दुर्भाग्यवश मिथिलोक विद्वानलोकनि विद्यापतिक बंगाली प्रशंसक सभक अनुसरण कयलनि । मात्र इम्हर आबि कऽ हम कलकत्ताक डा० शंकरी प्रसाद बसुक कृति सभकें अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक पढ़ल अछि जाहि मे विद्यापतिक भक्ति-पूर्ण शिवगीतो सभ दिश ओतबे ध्यान देल गेल अछि जतवा कि हुनक शृंगार-रस सँ आप्लावित गीत सभ दिश । हमसभ आव आशा कऽ सकैत छी जे विद्यापतिक ओहि सभ शिवगीत कें संकलित करबाक प्रयास कयल जायत जे अखन धरि लुप्त नहि भेल अछि आ सुच्चा मैथिल दुष्टिकोण सं एहि गीत-सभक समीक्षात्मक अध्ययन करबाक गम्भीर यत्न कयल जायत, तखने एहि गीत सभ कें नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि आ एकरा सभक यथार्थ मूल्यांकन कयल जा सकैत अछि ।

8

तैयो ई एकटा तथ्य थिक जे विश्वकविक रूप मे विद्यापतिक कीर्ति आइ मुख्यतः हुनक प्रेम-गीते सभ पर आधारित अछि। ओ वास्तव मे अमर-प्रेमक मधुर गायक रहथि—भौतिक किंवा यौन-प्रेमक, जकरा फलस्वरूप नर-नारी एक-दोसरा सँ मिलनक कामना करैत अछि। समस्त मानवीय भावना मे ई सर्वाधिक सारपूर्ण थिक, अही पर सृष्टिक प्रक्रिया निर्भर करैछ आ समस्त संसार मे प्रत्येक युग मे ई काव्यक सर्वाधिक लोकप्रिय रूप रहल अछि—शृंगार-रस-पूर्ण काव्य सँ संस्कृत साहित्य समृद्ध अछि आ एहि प्रकारक काव्यक आरंभ ईसापूर्वक प्राकृत गीत सभ के देखल जा सकैछ। मुदा विद्यापति एकरा सोझे जयदेव सँ ग्रहण कयलनि, जिनक कविता श्रीकृष्ण आ व्रजक गोपीगणक यौन-प्रेमक विभिन्न पक्ष कें चित्रित करैत अछि।

मुदा विद्यापतिक प्रेमगीत एतेक लोकप्रिय मात्र अपन विश्वजनीन विषय-वस्तुक कारण नहि, अपितु कविगुरुक उत्कृष्ट रचना-कौशलक कारणो भेल अछि। हिनक गीतसभ मे तीनटा भिन्न-भिन्न तत्व पाओल जाइछ—प्रत्येक अपना मे महत्वपूर्ण अछि आ तीनू मिलि कऽ एहि गीत सभ कें एहन अनुपम लोकप्रियता प्रदान कयने अछि जे समय आ स्थानक सभसीमा कें टपि गेल अछि।

महत्वक दृष्टि सँ सर्वप्रथम विषय-वस्तु लेल जा सकैछ। हुनक सभगीत गेय थिक जे संस्कृत अलंकार-शास्त्र मे मुक्तक-काव्य कहल जाइछ, जाहि मे प्रत्येक गीत स्वतंत्र होइछ। अतः ई गीतसभ स्त्री-पुरुषक यौन-जीवनक विभिन्न भावना कें चित्रित करैत अछि। अपन कल्पना-शक्ति सँ विद्यापति स्वेच्छा सँ एक प्रकारक विशिष्ट भावना कें मन मे बसा कऽ तकरा एतेक सचाइ, एतेक वास्तविकता, एतेक अनुभूतिपूर्वक आ एतेक सहानुभूतिक संग चित्रित करैत छथि कि ओहि मे वर्णित स्थिति मे प्रत्येक व्यक्ति अपने चित्र देखैत अछि।

दोसर, ई गीत सभ एहन भाषा मे रचल गेल अछि जे मधुर, लयात्मक आ सुन्दर ढंग सँ गेय थिक। शब्दसभक चुनाओ अत्यन्त कुशलतापूर्वक कयल गेल अछि: सही जगह पर सही शब्द, प्रसंगानुकूल, सरल, प्रत्यक्ष, सुबोध आ स्निग्ध। ह्रस्व स्वर आ तरल व्यंजनसभक अधिकताक कारणें बंगला भाषा जकाँ मैथिलीयो बहुत मधुर भाषा अछि आ एहि बातक श्रेय मुख्यतः विद्यापति कें देल जयबाक चाही जे शब्द सभक रूप कें एहि प्रकारें गढ़लनि कि अप्रभंश-कालक सभ रुक्षता विलीन भऽ गेल आ शब्दक प्रवाह मृदुल आ लयात्मक भऽ गेल। विद्यापति गीत मे शब्दसभक चुनाओ श्रोतालोकनिक अनुकूल कयल गेल अछि; मुदा शब्द चाहे तत्सम हो, चाहे तद्भव, चाहे देसी—ओ सुकोमल, मधुर, सरल आ कर्ण-प्रिय हेबाक संग-सग मोन पर तुरत प्रभाव उत्पन्न कयनिहार अछि। विद्यापति मे ध्वनि

द्वारा अर्थक अनुसरण करयबाक क्षमता रहनि, जाहि सँ हमसभ भने अर्थ नहि बूझी, गीत मे व्याप्त भावनाक हमसभ तुरत अनुभव करय लगैत छी ।

तेसर बात जे ई सभ गीत पूर्वी भारत मे प्रचलित विशिष्ट रागसभ मे बान्हल अछि । बौद्ध सिद्धलोकनि द्वारा अपन गायन मे प्रयुक्त राग, जयदेव द्वारा गीत-गोविन्द मे प्रयुक्त राग, ज्योतिरीश्वर द्वारा 'वर्ण रत्नाकर' मे उल्लिखित राग सभ ओहने थिक, जकर प्रयोग विद्यापति कयने छथि । कर्णाट लोकनिक अधीन मिथिला मे संगीत कें संरक्षकत्व भेटलैक जाहि मे ओ उन्नति कयलक आ लोचन द्वारा जे किछु 'रागतरंगिणी' मे कहल गेल अछि, ओहि सँ ई स्पष्ट थिक जे मैथिली-संगीतक एकटा स्वतंत्र सम्प्रदाय छल, जकर किछु अपन-विशेषता रहैक— जेनाकि ओ बरोबरि विलंबित राग मे सामूहिक रूप सँ गाओल जाइत छल, इत्यादि । एहि संगीतक विकास मे विद्यापतिक प्रचुर योगदान छनि । ओ प्रयुक्त रागसभ कें ग्रहण कयलनि आ तकरा एकदम मधुर आ सुरम्य भास प्रदान कयलनि जाहि सँ एके रागक अधीन भिन्न-भिन्न भास भऽ गेल । एक शब्द कें गाबि कऽ सुनेबा मे जतेक समय लगैत रहै, ओहि पर गीत सभक छन्द आधारित छल आ तें ह्रस्वकिंवा दीर्घस्वर पाठक प्रकार पर निर्भर करैत छल आ निश्चित नहि छल । लोचन अपन 'रागतरंगिणी' मे कहैत छथि जे विद्यापतिक कोनो गीतक छन्द वैह थिक जे रागक नाम थिक आ एहि दृष्टिकोण कें मान्यता भेटैत रहलैक अछि, मुदा यदि पंक्ति मे निबद्ध शब्दसभ पर छन्द आधारित थिक तऽ लोचनक ई दृष्टिकोण यथार्थपरक नहि बुझा पड़ैछ, किएक जे गेबाक परिपाटीक अनुसार एके गीत कें भिन्न-भिन्न गुरु लोकनि भिन्न-भिन्न रागक अन्तर्गत रखने छथि आ तें शब्दक एके प्रकारक पदशय्या कें भिन्न-भिन्न छन्द मानब युवित-संगत नहि थिक, यद्यपि गीतक ध्वनिक पृथक्-पृथक् रचना सँ ओकरा पृथक्-पृथक् रागक अधीन राखल जा सकैछ । तथापि विद्यापति अपन गीत सभ मे एके रागक भिन्न-भिन्न प्रकारक प्रयोग कयने छथि आ जें कि ओहि मे सँ अधिकांश नवीन खोज छल, तें ओ सभ मात्र विषय वस्तुएक कारण नहि, अपितु अपन नवीन संस्कारक कारणो लोक-प्रिय भऽ गेल ।

विद्यापति अपन गीतक भेद रागक आधार पर कयलनि अछि । जखन एहि मे सँ कोनो लोकप्रिय भऽ जाइत छल. उत्तरवर्ती कवि ओकर अनुकरण करैत छलाह आ एहि तरहें विद्यापतिक अनेको लोकप्रिय गीत नमूना बनि गेल आ विभिन्न नाम सँ चिन्हल जाय लागल । एकटा उदाहरण सँ गप्प स्पष्ट भऽ जायत । संस्कृत साहित्य मे खंडिता एक तरहक नायिका कें कहल जाइत अछि जे अपन ओहि प्रेमी सँ तमसायल अछि जकरा आन स्त्री सँ प्रेम करैत ओ पकड़ि लेने हो आ प्रेमी ओकरा सब तरहें मनयबाक प्रयास कऽ रहल अछि । विद्यापति अपन किछु गीत मे वर्णन कयने छथि जे कोना राति भरि मनौला उपरान्त प्रेमी नायिका कें कहैत

अछि जे राति समाप्त भऽ रहल छैक आ तैयो ओ नहि मानि रहलि अछि। एहि तरहक गीत खूब लोकप्रिय भेल आ एकरा प्रातःकालक हेतु उपयुक्त राग प्रभाती मे गाओल जाइत छल। उत्तरवर्त्ती कवि सभ एहि नमूना कें अनुसरण ताधरि कयलनि जखन कि एहन गीत 'मान' कहबऽ लागल, जे मैथिली-गीतक एकटा प्रमुख प्रकार अछि, जकर सभ कवि ओही राग मे रचना कयलनि। एहि तरहें विभिन्न गीत विभिन्न नाम सँ विकसित भेल—सभ विषय-वस्तु कें अभिव्यंजित करैत आ अपन विशिष्ट राग मे बान्हल, मुदा विद्यापतिक हेतु ई सभ अज्ञात छल। हुनका लेल मात्र भासेटा महत्वपूर्ण छलनि आ अनेक सशक्त कारण मे इहो एकटा कारण छल जकरा चलते हुनक गीत तुरत्ते लोकप्रिय भऽ गेल। ई राग सभ लोक सब के उत्स्फूर्त कऽ देलक आ कोमल शब्दक मधुर लयपूर्ण प्रवाह हुनका हृदय कें जकड़ि लेलक आ जखन शब्दक द्वारा ओ अर्थ कें सरलतापूर्वक बूझऽ लगलाह तखन काव्यक वास्तविक आनन्द सँ हुनक मन भरि गेलनि। विद्यापतिक गीतक ठीक सँ आनन्द लेबाक हेतु ओकरा ओहि काल मे सुनबाक चाही जखन ओ ठीक सँ गाओल जा रहल हो। हुनक गीत कें पढ़ला सँ मात्र दू तिहाइ आनन्द भेटि सकैत अछि आ ओकर अनुवाद पढ़ला सँ तऽ हमसभ संगीत आ शब्दक जादू सँ बंचित रहि जायब आ ओहि आनन्दक मात्र एक तिहाइ टा पाबि सकब जे ई गीत प्रदान कऽ सकैत अछि।

एहि गप्प पर जोर देबाक आवश्यकता अछि जे विद्यापतिक शृंगार-रस-पूर्ण गीत सभक विषय प्रेम अछि, भौतिक प्रेम, स्त्री-पुरुषक यौन प्रेम—बिना कोनो आध्यात्मिक वा रहस्यात्मक दूरस्थ अभिप्रायक। ई हुनक प्रतिभाक महत्ता अछि जे विभिन्न लोक हुनक शब्दक विभिन्न अर्थ लगबैत छथि। चैतन्य आ हुनक अनुयायी लोकनिक हेतु ई गीत भगवान कृष्णक लीलाक वर्णन करैत अछि, आ जेंकि भगवानक लीलाक वर्णन हुनक पूजाक एकटा भाग अछि, बंगालक वैष्णवजन एहि गीत सभ कें शुद्ध भक्तिपरक मानैत छथि। ग्रियर्सन आ ओहि तरहक व्यक्ति सभक मतें ई कबीरक गीते जकाँ रहस्यात्मक अछि, जाहि मे यौन प्रेमक बहाने आत्मा के परमात्मा मे विलीन होयबाक उत्कंठाक वर्णन कयल गेल अछि। मुदा विद्यापतिक आधो सँ कम गीत मे कृष्ण आ राधाक उल्लेख अछि आ ओहू मे नामोल्लेख मात्र अछि। चैतन्यदेवक अनुयायी एहि सभ गीत कें कृष्ण आ राधाक लीलाक वर्णन करयवला मानैत छथि, जखन कि हम सभ देखैत छी जे अनेक[1] गीत में विद्यापति कान्हा, मधाइ आदि शब्द सँ अपन संरक्षक शिव सिंहक संकेत कयलनि अछि जिनका ओ विष्णुक एगारहम अवतार कहैत छथि। जे हो, कृष्ण

1. गीत क्रम सं० 35, 164, 175, 177 (मित्र आ मजुमदारक संस्करण)।

संस्कृत साहित्यिक नायकक एकटा प्रकार छथि आ राधा वा गोपी एक तरहक नायिकाक।

वस्तुतः विद्यापति एहि प्रेमगीत सबहक रचना संस्कृत साहित्यिक नमूना पर कयलनि अछि। 'कीर्तिपताका'क नाम सँ खण्ड रूप मे प्रकाशित कृतिक एकटा अंश[1] एहन अछि जाहि मे ई कहल गेल अछि जे चूंकि त्रेता युग मे अवतार रूप भगवान केँ सीता सँ वियोगक कष्ट सहय पड़लनि तेँ ओ द्वापर युग मे फेर सँ कृष्णक रूप मे अवतीर्ण भेलाह आ गोप बालकक रूप मे चारि प्रकारक नायक बनि, आठ प्रकारक नायिका मे सँ एक युवती गोपी-सभक संग यौन-सुखक उपभोग कयलनि। एहि सँ विद्यापतिक रचना-कुशलता स्पष्ट भऽ जाइत्त अछि। ओ संस्कृत अलंकारशास्त्र सँ चारि प्रकारक नायक आ आठ प्रकारक नायिकाक भेद प्राप्त कयलनि आ ओकरा संदर्भ बना अपन गीत सभक रचना कयलनि। ई महत्त्वपूर्ण नहि थिक जे नायक कृष्ण छथि वा आन कोनो पुरुष आ नायिका गोपी राधा छथि वा आन कोनो स्त्री। शृंगार रसक अभिव्यंजना हेतु नायक आ नायिका, प्रेमी आ प्रेमिका आवश्यक अछि, किएक तऽ तखने अंगीरसक साधारणीकरण सम्भव होइछ।[2] अरस्तुक अनुसार 'पात्र सभ कें व्यक्त नाम दऽ कऽ काव्यक उद्देश्य साधारणी करब किंवा शाश्वत सत्य कें प्रस्तुत करब थिक।" मानव जीवनक सार्वजनीन तथ्यक अभिव्यक्तिए काव्य थिक। दोसर शब्दें, काव्य मानवीय जीवन, चरित्र, मनोवेग वा क्रिया-कलापक इंद्रियगम्य रूप मे आदर्शीकृत बिम्ब अछि। 'काव्यक शक्ति एहि अर्थ मे सीमित अछि जे ओ शाश्वत कें ओकर प्रकृत रूप मे नहि, अपितु इंद्रियगम्य बिम्ब समूहक माध्यम सँ व्यक्त करैत अछि[3]।" एहि दृष्टियें विद्यापति अपना सभ केँ सुच्चा कविता प्रदान कयलनि अछि आ जखन हम हुनका पर विचार करतै छी, तखन एहि तथ्यक कोनो महत्त्व नहि रहि जाइछ कि हुनक नायक के थिक वा नायिका के थिकीह।

एहि तरहेँ विद्यापतिक गीत मे कोनो रहस्यात्मक कथ्य केँ तकनाइ सेहो निरर्थक अछि। एतऽ मात्र प्रेमिके टा भगवानक हेतु उत्कंठित नहि छथि, अपितु भगवान सेहो प्रेमिकाक लेल उत्कंठित छथि। ई ठीक अछि जे विद्यापतिक नायिका सभक आत्म-समर्पणात्मक प्रेम कें चैतन्यदेव भगवानक प्राप्ति हेतु भक्तक उत्कंठा परिपूर्ण आदर्शक ओहि रूप मे देखलनि जकरा वैष्णव समुदाय 'मधुर रस'क संज्ञा देलक, अथवा ओ कबीरक द्वारा निःसीमक हेतु आत्माक मिलन-कामनाक प्रतीक

1. कीर्तिपताका, पृष्ठ 8-9।
2. पोएटिक्स, IX 3।
3. एस० एच० बूचर, अरिस्टोटल्स थ्योरी ऑफ पोएट्री एण्ड फाइन आर्ट, लंदन—1895, पृ०—178।

मानल गेल; मुदा, तखन विद्यापतिक समक्ष ई धारणा सभ नहि छलनि, जखन ओ ई गीत सभ रचने छलाह आ एकरा ओहि परंपरा मे कोनो जगह प्राप्त नहि छैक जे विद्यापति संस्कृत-शृंगार-काव्य सँ ग्रहण कयलनि आ मैथिली-काव्य मे स्थापित कयलनि। विद्यापति प्रेमक गीत गओलनि, कारण हुनका लेल कामेच्छाक संतुष्टि मानवीय जीवनक ओतबे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता छल, जतेक धार्मिकता, सम्पन्नता आ अंतिम मोक्ष।

ई कहल गेल अछि[1] जे काव्यक सभ स्पष्टीकरण सामान्यतः अरस्तुवादी वा बेकनवादी वर्ग मे अबैत अछि आ चाहे जाहि दृष्टिकोणें हम सभ विद्यापतिक काव्य कें देखी, हम सभ पबैत छी जे ओ अपन कला मे पारंगत छलाह। अरस्तु काव्य कें एक अनुकरणात्मक कला मानैत छथि, मुदा ओ ई स्वीकार[2] करैत छथि जे कविक कार्य वस्तुतः जे भऽ रहल अछि ओकरा कहब नहि भऽ कऽ जे भेनाइ संभव अछि से कहब अछि। काव्य-सत्यक विषय मे बजैत ओ कहैत[3] छथि जे अननुमेय मुदा संभव गप्पक अपेक्षा अनुमेय असंभाव्य कें प्राथमिकता देबाक चाही, कारण जे असंभाव्य श्रेयष्कर वस्तु थिक, कियेक जे मस्तिष्कक सोझाँ उपस्थित आदर्श वास्तविकता सँ बढ़ि कऽ हेबाक चाही। चाहे युवतीक अंगयष्टिक वा ओकर मनोदशाक वर्णन हो, चाहे संयोग वा वियोग अवस्था मे पड़ल प्रेमीक वर्णन हो अथवा कामेच्छा सँ संबद्ध काल, वातावरण वा ऋतुक वर्णन हो, विद्यापति हरदम नवीनता प्रस्तुत करैत छथि—अनुभूतिक यथार्थता नहि, वास्तविकताक अनुकृतियो नहि, अपितु एकटा उच्चतर वास्तविकता। प्रकृति मे पसरल अनेको सौन्दर्यक तत्त्व सभ कें ओ एक संग अनैत छथि। मात्र चुननाइ, तोड़नाइ, सजेनाइ, इम्हर जोड़नाइ-ओम्हर घटौनाइयेटा पर्याप्त नहि अछि। ओ ओहि सभक सामंजस्य हरदम एकटा आदर्श ऐक्यक रूप मे प्रस्तुत करैत छथि।

दोसर दिस बेकन काव्य कें 'मिथ्या इतिहास'[4] मानैत छथि आ "मिथ्या इतिहासक अपयोग ई अछि जे ओ मनुष्यक मोन कें ओहि तथ्य सभ मे किछु संतोषक आभास प्रदान करैत अछि, जाहि मे वस्तुक प्रवृति ई प्रदान नहि करैछ; आत्माक अपेक्षा संसारक अनुपाततः हीन होयबाक कारणें जाहि सँ मनुष्यक आत्मा कें प्रकृतिक अपेक्षा अधिक सटीक बड़प्पन, यथार्थतर शिवत्व और पूर्णतर विविधता अभिमत भऽ जाइत अछि।" एहि तरहें बेकन काव्य-सत्यक सिद्धान्तक पूर्णरूपेण उपेक्षा कऽ दैत छथि आ काव्य कें कल्पना-शक्तिक निर्बाध अभ्यास मानैत

1. हडसन, इन्ट्रोडक्शन टू दी स्टडी ऑफ इंगलिश लिटरेचर, पृ०—66।
2. अरस्तु—पोएटिक्स—IX.I।
3. ,, ,, —XXV. 17।
4. बेकन, एडवांसमेण्ट ऑफ लर्निंग (एवरी मैन्स लाइब्रेरी) पृ० 82-83।

छथि। तेँ ओ काव्य केँ मात्र मस्तिष्कक 'प्रेक्षागृह' मानैत छथि जतऽ केओ आराम आ मनोरंजन हेतु भने चलि जाय, मुदा जतऽ 'अधिक काल धरि रुकब नीक नहि' किएक तऽ ओ मात्र मिथ्या अछि।

विद्यापतिक गीत मानवीय जीवन, चरित्र, मनोवेग आ कार्यक आदर्शीकृत प्रतिरूप अछि आ जे मैथ्यू आर्नल्ड शेक्सपियरक विषय मे कहने छलाह सैह हम सभ विद्यापतिक विषय मे कहि सकैत छी जे ओ हमरासभ केँ प्रेमक संसारक सभ आश्चर्य आ विकास प्रदान कयलनि अछि। मुदा, विद्यापति व्यवसाय सँ कवि नहि छलाह। ई हुनक गौण उद्यम छलनि, एहि अर्थ मे जे जखन हुनका गयबाक मन होइत छलनि तखन ओ अपन प्रशंसकलोकनिक आह्लाद हेतु, विशेष कऽ स्त्रीलोकनि लेल गीत रचैत छलाह। तेँ ई कहल जा सकैत अछि जे एहि गीतसभ-केँ रचैत काल ओ मिथ्याक आश्रय लैत छलाह। ओ ई गीतसभ अपन पूर्ण युवा-वस्थे मे लिखने छलाह जखन ओ शिव सिंहक कृपापूर्ण संरक्षकत्व मे प्रसन्न छलाह। व्यवसाय सँ ओ एक पंडित, राजपंडित छलाह। सदति राज्य आ जीवनक गंभीर गप्प मे व्यस्त रहैत छलाह। तेँ जखन विद्यापति विवाह, बाह्य-प्रेम, अभिसार, गुप्त मिलन आदिक विषय मे लिखैत छथि, तखन हम सभ ई नहि कहि सकैत छी जे ओ स्वयं केर अनुभव सभ कें काव्य मे व्यक्त कऽ रहल छलाह। हम सभ मात्र ई स्पष्टीकरण दऽ सकैत छी जे विद्यापति मिथ्याक सहयोग लऽ रहल छलाह। वस्तुतः ई गीत सभ विशेष अवसरसभ पर मात्र मनोरंजनक हेतु गाओल जाइत अछि, वा जेना कि बेकन कहैत छथि ओ वस्तुतः मस्तिष्कक नाट्य गृहक समान रहल अछि जतय लोक आराम आ मनोरंजनक हेतु जाइत अछि।

विद्यापतिक काव्यक मुख्य तत्त्व ओकर उद्घाटक शक्ति अछि। ओ स्त्री-देह वा प्रकृतिक उत्तेजक सौन्दर्य दिस हमरासभक दृष्टि केँ आकर्षित करैत अछि। एहि तरहेँ विद्यापतिक काव्यक परिधि सीमित अछि, ओ मात्र स्त्री-संसारक यौन-जीवनक बारे मे लिखलनि अछि, मुदा ओहि परिधिक भीतर सेहो हुनक देखबाक आ उत्तेजक सौन्दर्य केँ, एतऽ धरि जे स्त्रीक हृदयक धड़कन कें, अनुभव करबाक सामर्थ्य सर्वप्रधान छनि। आ संगहि, जे ओ देखैत आ अनुभव करैत छथि, ओकरा एहि तरहें व्यक्त करबाक आ बुझयबाक सामर्थ्य हुनका मे छनि जे हमरो सभ मे हुनका संग देखबाक आ अनुभव करबाक कल्पना आ सहानुभूति उद्भूत भऽ जाइत बछि। ओ हमरा सभक मस्तिष्क केँ जगबैत छथि आ ओकरा यौन-प्रेमक 'सौन्दर्य आ आश्चर्यक दिस' उन्मुख करैत छथि। ब्राउनिंग, फ्रालिप्पो लिप्पीक मुँह सँ हमरा सभकेँ कहैत छथि—"नहि देखैत छही/हम सभ बनले एहि लेल छी जे हमसभ प्रेम करी/पहिने जखन हमसभ ओकरा सभकेँ चित्रित देखैत छियैक/जकरा लग सँ प्रायः हमसभ सैयोबेर गुजरि चुकल छी/आ नजरियो उठाकऽ ओकरा देखल नहि अछि/निश्चित तें ओ बेशी नीक अछि / हमरा सभ लेल नीक जँका चित्रित/वास्तव

मे अही लेल तऽ कला होइछ।"

ई एकटा चित्रकारक क्षमा-याचना थिक। मुदा, विद्यापति सेहो एकटा शब्द-चित्रकार छलाह। किशोरावस्था मे प्रवेश पवैत कन्या कें के नहि देखलक अछि, मुदा प्रतिदिन उद्‌भासमान परिवर्तन कें चित्रित करयबला अपन अनेक गीत मे ओ ओहि सौन्दर्य कें उद्‌घाटित करैत छथि जे एकदम नव आ विस्मयकारी लगैत अछि। ओ सौन्दर्य कें अत्यन्त सूक्ष्मता सँ देखैत छथि आ अपन सूक्ष्मग्राहिणी कल्पनाक सहायता सँ ओहि सूक्ष्मता कें प्रत्यावृत कऽसकैत छथि जकरा ओ सरल, आकर्षक आ आवेगपूर्ण भाषा मे व्यक्त करैत छथि। आरंभिक किशोरावस्थाक विषय मे जे सत्य अछि सैह किशोरी आ ओकर वयस्क प्रेमीक प्रथम मिलनक विषय मे सेहो सत्य अछि। हेवनि धरि मिथिला मे सुसंस्कृत परिवारक युवक प्रायः पच्चीस वर्षक वय मे दस वर्षक कन्या सँ विवाह करैत छलाह आ प्रदेशक सामाजिक जीवनक ई पक्ष विद्यापतिक प्रेमगीत मे आश्चर्यजनक रूप सँ प्रतिबिंबित अछि। किशोरावस्थाक प्रारंभिक चरण सँ सम्बन्धित गीत[1] मे वयःक्रमे बढ़ैत बालिका मे सूक्ष्म पर्यवेक्षण तथा स्पर्शानुभव सँ होइत सतत परिवर्तनक विशद् चित्रण भेटैत अछि, जखन कि प्रथम मिलन सँ सम्बन्धित गीतसभ[2] मे पहिल बेर अपन प्रेमी सँ भेंट करबाक हेतु जायवाली कन्याक मानसिक व्यापार तथा ओकर मनोदशाक सूक्ष्म विवरण अछि।

विद्यापतिक प्रेमगीतक सम्बन्ध मे सभ सँ उल्लेखनीय तथ्य ई अछि जे ओ प्रेमकें प्रायः हरदम्मे नारीक आँखि सँ देखैत छथि। ई हुनक व्यवहारगीत आ शिव गीतक विषय मे सेहो सत्य अछि, मुदा प्रेम गीत मे एहि विशेषताक एकटा भिन्ने महत्व छैक। एहि विषय मे ओ जयदेव आ गोविंद दास अथवा दोसर वैष्णव कवि सभ सँ उल्लेखनीय रूपें फराक छथि। विद्यापति सदैव प्रेमीक हेतु प्रेमिकाक आकर्षणक (पूर्व रागक) सुन्दर चित्रण कयलनि अछि, प्रेमिकाक लेल प्रेमीक आकर्षणक नहि। अपन एक गीत[3] मे विद्यापति कहैत छथि जे ओ नारीक हृदय मे प्रच्छन्नरूप सँ प्रवहमान सैकड़ो मूक अभिलाषा आ उत्कण्ठाक अभिकल्पना कयलाक बादे गीत गबैत छथि। प्रारंभिक किशोरावस्था सँ लऽ कऽ पूर्णयौवना होयबा धरि स्त्रीक जीवनक कोनो एहन अवस्था नहि अछि जकर विद्यापति विशद् चित्र नहि खिचने होथि। एहि सौन्दर्यक वर्णनक लेल मुख्यतः जो प्रकृति ओ कलाक सहयोग लेलनि अछि। केशराशि सँ पैरक नह धरिक वर्णन ओ कयलनि अछि। नारी देहक कोन-कोन कें ओ अपन कलम सँ रंगलनि अछि, आ सेहो

1. यथा, गीत सं० 3 सँ 11, 13 आदि।
2. यथा, गीत सं० 150 सँ 214 आदि।
3. यथा, गीत सं० 828।

ग्रीक शैली मे, मुदा रंगक तालमेल ततेक निपुणता आ-अंतर्भेदी दृष्टि सँ वैसाओल गेल अछि जे चित्र अद्भुत, आदर्शरूप मे आकर्षक आ मोहक बनि जाइत अछि। एहिना स्त्रीक हृदय आ मस्तिष्कक कार्यप्रणालीक विषय मे सेहो हुनक अंतर्दृष्टि अद्भुत अछि। विद्यापतिक कोनो गीतक विश्लेषण एहि मूल तथ्यक साक्षी भऽ सकैत अछि। मुदा हुनक प्रेमगीत कतेक मर्मस्पर्शी आ बिकछायल अछि से कहबाक हेतु हम तीन उदाहरण प्रस्तुत कऽ रहल छी। हुनक गीतक एक समूह मे (सं० 330 आ तदनुगामी) सखी-शिक्षा अछि जाहि मे अपन प्रेमी सँ मिलन हेतु जायबाली कन्या कें एकटा सखी शिक्षा दैत छैक। एहि सन्दर्भक गीत अत्यन्त स्वाभाविक अछि, किशोरीक हाव-भाव आ नोक-झोंक कें सहज अभिव्यक्ति दैत अछि। एकटा दोसर गीत (सं० 338) मे किशोरी अपन असहाय अवस्थाक वर्णन करैत अछि। ओ अपन प्रेमी लग गेलि अछि। एकसरि अछि। एहि काल मे ओकर मोन मे उठैत तरंगक सूक्ष्म वर्णन एहि गीत मे भेल अछि ओ उत्कंठापूर्ण आवेग सँ परिपूर्ण अछि। तेसर (सं० 228) उदाहरण लिअ। एकटा किशोरी नीक जकाँ सिंगार-पटार कऽ एक प्रेमी सँ भेट करबाक हेतु कोठली सँ बाहर अबैत अछि। ओ ओकरा अमावस्याक दिन बुझि कऽ वचन दऽ देने छलि, मुदा आब ओ देखैत अछि जे सम्पूर्ण आकाश चाँदनी सँ प्रकाशमान अछि। ओ द्विविधा मे पड़ि जाइत अछि। ओ अपन प्रेमी कें निराश नहि कऽ सकैत अछि, मुदा संगहि इजोरिया रातुक टहाटही मे मार्ग मे जयबाक खतरा सेहो नहि उठा सकैत अछि। सम्पूर्ण चित्र ओकर द्विविधा पूर्ण मानसिकताक अछि—प्रेम आ प्रतिष्ठाक जटिल प्रश्न सँ घेरायल। विद्यापतिक प्रतिभाक ई विशेषता हुनक कविता कें सामान्य स्त्रीगणक बीच अत्यन्त प्रिय बना देलक, जकरा ओ अपन कंठ मे जोगौने रहलीह। स्त्रीक वासना-लोकक वस्तुतः एहेन कोनो पक्ष नहि अछि जकर वर्णन विद्यापति नहि कयने होथि। संयोग वा वियोग, आनन्द वा दुख, उत्कण्ठा वा पश्चात्ताप, आशा वा निराशा, संदेह वा निश्चय—एहि सभ स्थितिक चित्रण ओ कयलनि अछि आ अपन कल्पना-शक्तिक द्वारा नारी हृदयक धुक-धुकी तऽ आदर्शमय रूप मे, आ सेहो विषय वस्तुक अनुकूल भाषा मे, व्यक्त कयलनि अछि। तथापि हम कहि सकैत छी जे भौतिक प्रेमक दू रूप अछि—स्त्री आ प्रेमी-युगल—जे विद्यापति कें गीतिमय उल्लास सँ प्रक्षिप्त कऽ दैत अछि। रवीन्द्रनाथ वस्तुतः विद्यापतिक काव्यक मार्मिक मूल्यांकन कयने छलाह जखन ओ कहने छलाह जे विद्यापति आनन्दक, प्रेमीक मिलन-आनन्दक, कवि छथि।

विद्यापति कें यौन-जीवनक रत्ती-रत्ती ज्ञान छलनि, यौन-प्रेमक दर्शनक अत्यन्त स्पष्ट धारणा छलनि। हुनका लेल ओ मानव हृदयक एकटा प्रारम्भिक भावावेग मात्र नहि छल आ ने छल मानव जीवनक मुख्य लक्ष्य। ओ केवल जैविक आवश्यकता सेहो नहि छल। हुनका लेल प्रेम एहि आनन्द-विहीन जीवन मे

आनन्दक स्त्रोत छल। हुनक गीत जें कि सौन्दर्यक वस्तु थिक, तें ओ आनन्दक सार्वकालिक स्त्रोत सेहो थिक। विद्यापति द्वारा चित्रित नारीक यौन-संसारक चित्रावली जीवन-सत्यक तनेक लग अछि, ततेक परिपूर्ण ओ सम्पूर्ण अछि, ततेक विविध ओ मोहक अछि, ततेक संवेदनशील तथा अनुभूतिमय ओकर अभिव्यक्ति अछि आ ओकर शब्द ततेक मधुर तथा सुर ततेक कर्णप्रिय अछि जे ओ यौनाचारक प्रसंग मे स्त्री कें पूर्णतः दीक्षित करबाक उद्देश्यपूर्ति कयलक। स्त्री कें ओ एहि जोगर बना देलक जे ओ अपना कें भरिपोख आकर्षक बनाय अपन प्रेमी कें भरि-छाक संतुष्टि दैत यौन-जीवनक अखंड उपभोग कऽ सकय।

विद्यापतिक प्रेम चित्रणक एकटा विचित्र परिणाम ई भेल जे ई गीत चैतन्य देव के सहजहिं अपना दिस घिचलक। हम जनैत छी जे चैतन्यक अपन एकटा विशिष्ट भक्तिमार्ग छलनि जे बंगाली वैष्णव-सम्प्रदाय बनल। ओ चैतन्यक विद्वान शिष्य सबहक द्वारा भक्तिक सिद्धान्त मे एकटा क्रान्ति उत्पन्न कऽ देलक आ संस्कृत काव्य मे मधुर रसक उद्भावना कयलक। चैतन्य स्वयं कें कृष्णक प्रेमिका, आत्म समर्पण करयवाली राधा, मानैत छलाह आ चैतन्यक संगी अपना कें वृन्दावनक गोपी बुझैत छलाह — भगवान सँ भेट करबाक लेल आतुर—उत्कंठित भक्तिक शुद्धताक कारणें सच्चा प्रेमानुभूतिवश हुनक भावना स्त्रैण भऽ गेल छलनि। तें विद्यापतिक प्रेम-गीत हुनका अपनहिं मोनक भावना आ अनुभूति, इच्छा आ उत्सुकता चित्रित करयवला लगलनि। ई गीत हुनक हृदयक तार कें झंकृत कऽ देलक आ जें कि ई सत्य आ प्रामाणिक चित्र छल, भगवान कृष्णक भक्त-प्रेमी पर एकर व्यक्तिगत प्रभाव पड़ल। तें आश्चर्य नहि जे हुनक दृष्टि मे विद्यापतिक प्रत्येक प्रेम-गीत ओहि अनुभूति तें चित्रित करयवला छल जे एकटा स्त्री-गोपी कें, एकटा भक्त प्रेमिका कें, होइत छैक जे ओ स्वयं कें बुझैत छलाह। इएह कारण थिक जे चैतन्यदेव एहि प्रेमगीत सँ अत्यधिक सम्मोहित भऽ गेलाह। एतेक मधुर ओ मोहक रूप मे अपन हृदय-तरंग के प्रतिनिनादित होइत सुनि कऽ उन्मादक अनुभव करय लगलाह। एहि प्रकारें जे मात्र एकटा सांसारिक काव्य छल से चैतन्यदेवक भक्ति-संप्रदायक भक्तिगीतक रूप मे बदलि गेल। स्त्री-सौन्दर्यक आ सम्वेदनाक गायक विद्यापति वैष्णव महाजन मानल जाय लगलाह। तें केवल विद्यापतिएक प्रेमगीत बंगाल मे प्रवेश कऽ सकल आ चैतन्यक भक्तिधाराक माध्यम सँ ओकर पवित्र साहित्य बनिकऽ सम्पूर्ण आर्यावर्त्त मे प्रसिद्ध भऽ गेल।

तें कविक रूप मे विद्यापति द्रष्टा छलाह। नारी-सौन्दर्य ओ नारी-भावनाक तह मे ओ मनुष्यक यौन जीवनक रहस्य कें देखलनि।

9

मुदा विद्यापति मात्र द्रष्टे नहि छलाह, ओ एकटा कुशल कलाकार छलाह। ओ एहन कविताक सृजन कयलनि जे युग-युग धरि सौन्दर्यक वस्तु आ आनन्दक स्रोत सिद्ध भेल अछि।

विद्यापतिक काव्य-कौशलक दू पक्ष विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि। विद्यापतिक गीत मे बाजलजायबला सामान्य भाषाक प्रयोगक विषय मे जे हम कहि चुकल छी, तकरा पुनः नहि दोहरायब। एतबे मोन पाड़ि देब पर्याप्त होयत जे कोन तरहें ओ मिथिलाक सामान्य स्त्री-पुरुषक लेल ओहि काव्यानन्द कें सुलभ करा देलक जे मात्र संस्कृतक काव्य प्रदान करैत छल आ कोन तरहें एहि भाषाक प्रयोग कऽ कऽ विद्यापति जाति वा लिंग, संपत्ति वा विद्वत्ताक अपेक्षा कयने बिना एहि ठामक वासी कें राष्ट्रीय स्तर पर एकताक सूत्र मे बान्हि देलनि।

विद्यापतिक काव्य-कलाक सब सँ पहिल तथ्य अछि संगीत आ कविताक पूर्ण संयोग। संगीत वास्तव मे भाषा कें सुस्वादु बनबैत अछि आ लयात्मकताक बिना काव्य आकर्षक नहि भऽ सकैछ। मुदा विद्यापति कखनहु मात्र संगीतक लेल कविता कें लयाश्रित नहि कयलनि। हुनक गीतक विषयवस्तु ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतेक ओकर राग आ लय। गीतक विषयवस्तु आ ओकर सुर मे बेस तालमेल छैक। गीत मे चित्रित मनोदशा सँ गीतक लय कखनो बेसुर नहि होइत अछि। दोसर उल्लेखनीय तथ्य ई अछि जे विद्यापति भाषाक प्रयोग मात्र अर्थक लेल नहि कयलनि। ओ शब्दक अर्थ कें नहि, ओकर ध्वनि कें अकानैत छलाह आ तें हुनक गीत वस्तुतः सौन्दर्यक लयात्मक सृष्टि थिक। हुनक भाषा मे संस्कृत अलंकार-शास्त्रक दू गुण विशेष रूप सँ भेटैत अछि : माधुर्य आ प्रसाद। विद्यापतिक गीत मे माधुर्य मात्र लयात्मक पद-रचना आ शब्दक चयन मे नहि अछि। ओ मधुर अछि पढ़बा मे। ओ मधुर अछि सुनबा मे। ओ मधुर अछि आस्वाद मे। एकर अतिरिक्त, विद्यापति एहन लोकोक्तिक प्रयोग करैत छथि जकर रूढ़िगत विशेष अर्थ भऽ गेल अछि आ एहि लोकोक्तिक प्रयोग जखन काव्य मे होइत अछि तखन ओ हृदय कें छूबि लैत अछि। सामान्य अर्थबोध तऽ ओहि सँ होइतहि अछि, विशेष अर्थक गुदगुदी मन कें प्रफुल्लित कऽ दैत अछि। जेना लोकोक्ति मे ओहि भाषा-भाषीक दृष्टिबोध तथा अनुभव समाहित रहैत अछि आ जखन ओकर प्रयोग विद्यापति करैत छथि तखन ओहि काव्यमय प्रयोग सँ लोकोक्तिक अभिव्यंजनार्थ अपन संपूर्ण अर्थवत्ताक संग मधुरिम वातावरणक सृष्टि कऽ दैत अछि।

ओना, माधुर्य शृंगार-काव्यक सामान्य गुण अछि आ मैथिली साहित्य मे तऽ एहन कतेक कवि छथि, जेना गोविंद दास, जे ओतबे मधुर छथि जतेक विद्यापति। तखन जाहि लऽ कऽ विद्यापति आन कवि सँ फराक होइत छथि ओ थिक हुनक

अत्यन्त सरल, सोझ आ स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्रणाली। ओ अपन विचार ओहि भाषा मे व्यक्त कयने छथि जकर प्रयोग तत्कालीन सामान्य लोक करैत छल। वस्तुतः ई हुनक प्रतिभा छल जे ओ ओहि भाषाक प्रयोग कयलनि आ ओकर अभिव्यक्ति सामर्थ्य कें ततेक समृद्ध कऽ देलनि जे ओहि समय मे पूर्वांचलक कोनो भाषाक लेल दुर्लभ छल। ई हुनक काव्यक एकटा एहन विशेषता अछि जे एकरा विद्यापतिक कृतिक प्रामाणिकताक दिग्दर्शक मानल जा सकैछ। ई मात्र हुनक मैथिली गीते टा लेल नहि, अपितु हुनक समस्त काव्य रचनाक लेल, ओ संस्कृत मे हो वा अवहट्ठ मे, सत्य अछि। इएह कारण अछि जे 'कीर्त्तिलता' आ 'कीर्त्तिपताक'क दुरूहता एहि बातक संदेह उत्पन्न करैत अछि जे ओ विद्यापतिक रचना थिक अथवा नहि, ओकरा विद्यापति जाहि रूप मे लिखलनि ताहि रूप मे ओ उपलब्ध अछि वा नहि।

विद्यापतिक काव्यक प्रसादगुणक सबसँ महत्वपूर्ण बात हुनक अभिव्यक्तिक स्वाभाविकता अछि। विद्यापति हृदयक उद्‌गार व्यक्त कयलनि—ओकर प्रभावक परवाहि विनु कयने। विद्यापतिक कविताक प्रभाव निहित अछि हुनक विचार ओ अभिव्यक्तिक निरंकुश निष्कपटता मे। हुनक वर्णनक ढगक विषय मे सेहो ई सत्य अछि। विद्यापति अपन विचार संस्कृतक शृंगार काव्यक विशाल कोष सँ ग्रहण कयलनि, मुदा ओ जखन ओकरा पुनर्निर्मित कयलनि तखन ओ हुनक हृदयक अंतःस्फूर्त उद्‌गार छल। हुनक प्रकृति-चित्रण एहि तथ्यकें नीक जकाँ प्रकट करैत अछि। ओ प्रकृतिक सूक्ष्म अवलोकन कयलनि। पूर्वकविक प्रकृति-चित्रण कें दोहरौलनि नहि। वसन्त आ वर्षाक जतेक विशद् वर्णन विद्यापति कयलनि अछि ततेक प्रायः अन्य कोनो कवि नहि कयने छथि। संस्कृत-कवि आ हुनक अनुयायी लोकनि मानवीय भावनाक पृष्ठभूमिक रूप मे प्रकृतिक चित्रण प्रायः कयलनि अछि। विद्यापतिओ ओकरे अनुसरण करैत छथि। तें विद्यापतिक गीत मे वर्षा ऋतुक जे मनोरम चित्रण अछि से प्रेमी-प्रेमिकाक संयोग अथवा वियोगक सदर्भ मे। मुदा वसन्त-वर्णन तेहन नहि अछि। विद्यापति वसन्त के उद्दीपन रूप मे नहि लऽ कऽ ओकर मानवीकरण कयलनि अछि। मुदा वसंत हो वा वर्षा विद्यापतिक ऋतु-वर्णन परंपरागत नहि, वास्तविक अछि, किएक तऽ ओ स्वाभाविक अछि। सूक्ष्म पर्यवेक्षणक परिणाम अछि। तें ओकर प्रभाव सोझे हृदय पर पड़ैत अछि आ प्रमुख भाव कें उद्दीप्त करबाक कार्य प्रशंसनीय ढंग सँ करैत अछि। हुनक वर्णज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म छलनि। तें हुनक शब्दचित्र अत्यन्त प्रभावकारी ओ सजीब अछि। ओकर सुन्दरता ओ आकर्षण विरोधाभासी वर्णन चातुर्य मे अछि। हुनक विम्ब ठोस आ स्पष्ट अछि। जे किछु सुन्दर छल ओकर अवलोकन ओ सूक्ष्म रूप सँ कयलनि आ एतेक स्वाभाविक रूप मे ओकरा राखि देलनि जे पाठको कविए जेकाँ ओहि पर मुग्ध भऽ गेल।

मुदा हुनक सौन्दर्य-बोधक सब सँ महत्वपूर्ण बात ई अछि जे ओ केवल ओकरे अवलोकन नहि कयलनि जे बाहर सँ देखबा मे नीक लगैत छल। विचार ओ भावनाक आन्तरिक स्तर पर जे सुन्दर छल तकरो वर्णन ओ स्त्री जातिक दिमाग ओ हृदयक यथावत्, वास्तविक तथा अन्तर्भेदी अनुशीलनक लेल कयने छथि।

विद्यापति-गीतक स्वाभाविक कथन-भंगिमा के अलंकारक माध्यम सँ नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि। चमत्कारी ढंग सँ गप कहबाक हुनक अपूर्व छटा छलनि। ओकर मूल अछि कविक कल्पनामयी उर्वरता। ओकर दूटा कार्य अछि—चमकायब आ शोभा-सुन्दर करब। विद्यापति चित्रणक स्पष्टता मे सर्वोपरि छथि। क्षिप्र बुद्धि आ कल्पनाक दक्षताक कारणेँ हुनक काव्य भव्य चित्रागार अछि। विद्यापति द्रष्टा छथि। कारण, जतय कतहु हुनका सुन्दरता अभरि जाइत छनि ततहि ओ ठमकि जाइत छथि। ओ यथार्थ मे कवि छथि। कारण, ओ ओहि सौन्दर्यक एतेक स्पष्ट चित्रण करैत छथि जे केओ ओकर दर्शन कऽ सकैत अछि। हुनक बिम्ब अत्यन्त व्यापक अछि। यदि हम विद्यापतिक बिम्बप्रयोगक तुलना मैथिलीक अन्य शीर्षकवि गोविन्द दास सँ करी तऽ हम पायब जे गोविन्द दासक रूपक-प्रयोग[1] अत्यन्त उत्तम अछि। गोविन्द दास एक पदार्थ केँ दोसरा पर आरोपित करैत छथि। तखन ओहि मे एतेक पूर्णता रहैत अछि जे एकटाक सब गुण दोसरा पर आरोपित भऽ जाइत अछि। एकहि टा चित्र पर ध्यान केन्द्रित करबाक हुनका मे अद्भुत क्षमता छलनि। मुदा विद्यापति मात्र एकहिटा चित्र सँ संतुष्ट नहि छलाह। एक गीत मे ओ एक केर बाद दोसर, फेर तेसर आ एहि तरहेँ बहुतो चित्र एतेक जल्दी-जल्दी प्रस्तुत करैत छथि जे सम्पूर्ण गीत चित्रमय भऽ जाइत अछि आ सभ चित्र अनुपम, मनोहर। तेँ विद्यापति उत्प्रेक्षाक[2] प्रयोग मे अति उत्कृष्ट छथि। तहिना विद्यापतिक अप्रस्तुत प्रशंसाक[3] प्रयोग सेहो अत्युत्तम अछि। मुदा अलंकार खाहे जे हो, विद्यापति गीतक बिम्ब सदिखन ठोस, सुन्दर आ सहजे देखबा मे आवयबला होइत अछि कारण ओ कविक सटीक पर्यवेक्षण आ विश्वसनीय अभिव्यक्ति थिक। यदि हम तटस्थ भाव सँ काव्यक स्पष्ट परिभाषा देबाक प्रयास करी तऽ हमर परिभाषा अलंकारबोधक चारूकात घुमैत भेटत—अलंकार शब्द केँ ओकर व्यापक अर्थ मे लेला पर। अलंकार काव्यक सौन्दर्य थिक,

1. शृंगार भजनावली—(डॉ० अमरनाथ झा द्वारा सम्पादित) भाग—1, संख्या—5, 6, 11, 12, 42, 44, 45 आदि।
2. गीत सं०—12, 14, 16, 20, 21, 23, 36, 47, 52, 54, 573, 584, 586 सँ 592 आदि।
3. गीत सं०—84, 96, 140, 384, 417, 440, 452 आदि।

रूप-सौन्दर्य । महान कविक रचना मे अलंकारक अवतरण स्वतः होइत अछि जाहि मे विभिन्न भाव रूप धारण करैत अछि । मुदा रूप कतबो महत्वपूर्ण किएक ने हो, काव्य अलंकार मात्र नहि थिक । अलंकारक वेदी पर काव्यक बलिदान संभव अछि । औचित्य, उपयुक्तता, सामंजस्य आ समानुपात एहेन वस्तु थिक जे काव्य-सौन्दर्यक चरमबिन्दु अछि । औचित्य अन्ततः सम्बद्ध अछि रस सँ । रस काव्यक आत्मा थिक । औचित्य-अनौचित्यक निर्धारक थिक ।[1] जखन आत्मा नहि रहैत छैक तऽ शरीर मात्र शव भऽ जाइत अछि आ शव लेल गहनाक कोन उपयोग ? रसानुभूति मे अनुकूल भेले पर अलंकारक उपयोग उचित कहा सकैछ । शैलीक सम्बन्ध मे लिखित अपन निबंध मे वाल्टर पेटर 'ग्राह्य अलंकार'क विषय मे कहैत छथि जे ओ अधिकांशतः 'संरचनात्मक वा आवश्यक' अछि । एकटा प्रतिभाशाली कवि ओकर एहेन प्रयोग करैत छथि जे ओ रस-निष्पत्ति मे सहायक भऽ जाइत अछि आ उचित संदर्भ मे अद्भुत रस-संचार करैत अछि । एहेन लागि सकैत अछि जे अलंकार एकटा कृत्रिम, विशद् आ बौद्धिक अभ्यास थिक जकरा बहुमूल्य बनयबाक हेतु बहुत यत्न करय पड़ैत छैक, मुदा सिद्धहस्त कविक लेल ओकरा प्रभावशाली बनौनाइ वास्तव मे से कठिन नहि अछि । ओकरा लेल तऽ जेना-जेना भावना बढ़ैत छैक तहिना-तहिना अभिव्यक्ति झोंक मारैत छैक आ अलंकार फेनाइत चलैत छैक ।[2] सबल परिस्थिति मे अलंकारक अधिक प्रयोगक प्रवृत्ति बड़ बेसी होइत छैक । प्रतिभाशाली कवि जखन रसमग्न-भऽ जाइत अछि तखन ओ एक सँ बढ़ि कऽ एक आलंकारिक प्रयोग करैत अछि । विद्यापतिक काव्य मे कविक रसमग्न दशा सँ अनुस्यूत आलंकारिक प्रयोगक कतेको उदाहरण अछि । जेना नारी सौन्दर्यक वर्णन करयबला गीत[3] अथवा प्रेमी-प्रेमिकाक मिलन-गीत[4] । ई दूनु विषय एहेन अछि जे हुनका कवि-कल्पनाक चरमोत्कर्ष पर पहुँचेबाक लेल मार्ग प्रशस्त केलकनि, काव्यानन्दक लेल अपना लग बजौलकनि । एकर ई अर्थ नहि जे विद्यापतिक वियोग-वर्णन अनुभवहीन अछि । वस्तुतः वियोगक, विशेष रूप सँ नायिकाक वियोगक, वर्णन करयबला कतेको[5] गीत अछि । ओ एतेक भावनापूर्ण अछि जे ओहि मे अलंकारक प्रयोग बहुत कम कयल गेल अछि आ स्थितिक उदात्तता तथा करुणा कें एकाकी छोड़ि देल गेलैक अछि जाहि सँ ओ अपन भव्यता आ सुन्दरता सँ हमरा प्रभावित कऽ सकय ।

---

1. डॉ० वी० राघवन् : सम कॉनसेप्टस ऑफ अलंकार सूत्र, अडयार, 1942, पृष्ठ—54 ।
2. तत्रैव, पृष्ठ—61 ।
3. गीत सं०—14, 16, 19, 30 सँ 55, आदि ।
4. गीत सं०—542, 584—587, 590, आदि ।
5. गीत क्रम 618 सँ 808 ।

10

आ अन्त मे, किछु एहेन गीत अछि (मात्र आधे दर्जन एखन धरि ओ प्राप्त अछि) जाहि मे मानव जीवनक निरर्थकता, क्षणभंगुरता आ निराशाक वर्णन अछि। एहि मे सँ पाँच माधव[1] वाहर कें आ एकटा[2] वय कें सम्बोधित अछि, जाहि मे जीर्ण वृद्धावस्थाक असहायताक अत्यन्त वास्तविकतापूर्ण आ अनुभूतिमय वर्णन कयल गेल अछि। एहि गीत सब मे कवि पश्चात्ताप करैत छथि जे ओ आजीवन ओहने वस्तुक व्यापार करैत रहलाह जाहि सँ हुनका अन्तिम दिन मे सहायक कोनो स्थायी लाभ नहि भेटलनि, ओ जीवन भरि हमर-हमर करैत रहलाह, मुदा जखन एहि दुनिया सँ विदा लेबाक बेर भेलनि तखन केओ हुनक अपन नहि रहलनि। युवावस्था मे ओ परपत्नी आ परसंपत्ति के ठिकिअबैत रहलाह, हुनक जीवन तपैत रेत पर खसयवला पानिक बुन्दक समान छल आ जखन ओ तलमलाइत डेग सँ मृत्युक दिश बढैत छलाह तखन केओ हुनक सहायक नहि भेलथिन—बेटा, पत्नी अथवा संगी धरि नहि। हुनक आधा जीवन तँ सुतले बीतल, फेर बाल्यावस्था आ वृद्धावस्था सेहो बीतल, मुदा युवावस्था मे ओ यौन-प्रेम मे एतेक लीन रहलाह जे ओहि भगवानक ध्यान करबाक लेल समये नहि बचलनि जे एसगरे परलोक मे हुनकर देख-रेख कऽ सकैत छथिन। जीवनक दुःखमय धंधा मे अपन सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कऽ कऽ आब जीवनक संध्या मे ओ भगवान लग जा रहल छलाह जे ओहने मूर्खतापूर्ण आ हास्यास्पद छल जेना कोनो मजदूर साँझखन मालिक लग काज माङ्य गेल हो, जखन बेर झुकि गेल रहैत अछि। ओ स्वयं कें भगवानक दया मे एहि आशा सँ समर्पित कऽ रहल छलाह जे ओ हुनक गुण आ अवगुण पर विचार नहि कय हुनका अपन असीम करुणाक आश्रय मे लऽ लेथिन। विद्यापति वृद्धावस्थाक अत्यन्त वेदनामय चित्र अंकित कयलनि अछि जाहि सँ जेना-जेना दिन बितैत जाय, मनुक्ख अपन अस्तित्वक वास्तविकता सँ परिचित भेल जाय। एहि सँजीवनक वास्तविकताक प्रति ओकर दृष्टि खुजि जयतैक आ ओ ओहि भगवानक ध्यान करबाक लेल उन्मुख भऽ जायत जे असगरे अन्त मे ओकर मदति कऽ सकैत छथिन।

ई सब गीत शांत रस कें अभिव्यंजित करयबला अछि जकर स्थायी भाव अछि निर्वेद अर्थात् वैराग्य। अपना प्रति उपेक्षाभाव एकर मूलाधार थिक। एकर अनुभूति अत्यधिक गहन अछि आ वर्णन अत्यन्त प्रामाणिक। एहि गीतक संबंध मे कतेक ठाम कहल गेल अछि जे ओ विद्यापति कें देखार करयवला अथवा हुनक आत्मकथा अछि, किएक तऽ जीवन भरि ओ परकीया प्रेम मे अथवा दोसरक संपति

1. गीत क्रम 437, 838, 839, 840 आ क्रम 44 गुप्तक देवनागरी संस्करणक हर गौरी पदावली मे।

2. मित्र आ मजुमदारक संस्करण मे गीत क्रम—613।

हड़पबाक व्योंत मे लागल रहलाह आ बुढ़ारी मे आब पश्चात्ताप कऽ रहल छलाह। कहल गेल अछि जे सामन्ती संरक्षणक रौदक सेवन करयलाक बाद जखन शिव सिंह रहस्यमय ढंग सँ निपत्ता भऽ गेलथिन तखन विद्यापति नचारिक रचना कयलनि। ओ गीत निराशाक उपजा थिक।

हमरा लगैत अछि जे व्यक्ति वा कविक रूप मे विद्यापतिक विषय मे एहेन दृष्टिकोण राखब उचित नहि थिक। ओ ओहि परम्पराक अनुयायी छथि जाहि मे कविता कें मानव-जीवनक सार्वजनीन तत्वक अभिव्यक्ति मानल गेल अछि। प्रकारान्तर सँ कहि सकैत छी जे ई मानवीय जीवनक आदर्श रूप थिक। मनुष्यक चरित्र, भावना आ कार्यक इन्द्रियगम्य आदर्शबिम्ब थिक, आ ई सब 'मिथ्या' थिक। शृंगार रसक गीत हो वा करुण ओ शांतरसक, विद्यापति वस्तुनिष्ठ छथि आ कखनो अपन व्यक्तिगत अनुभवक आधार नहि लैत छथि। परकीयाक प्रेमक गीतक संग हम नचारीक कोन तरहें सामंजस्य कऽ सकैत छी? विद्यापतिक गीत मे एहि तथ्य कें स्पष्ट करयवला एहेन किछु नहि अछि जे हुनक बीतल जीवन कें रेखांकित करैत हो, मुदा हुनक प्रेमगीत कें हम सभ एहि रूप मे नहि लैत छी। शांत रसक दृष्टिकोण सँ ई मानव-जीवनक सामान्य चित्र थिक। विद्यापतिक गीत विशिष्ट मनोदशाक सृष्टि थिक। कविक रूप मे ओ अपन रुचिक कोनो विषय पर अनुभूतिक तीव्रताक संग लिखि सकैत छलाह। ओ हार्दिकताक अतल तल मे डुबि कऽ लिखैत छलाह। हुनक हृदय जाहि रस मे डूबल रहैत छल तेहने गीत ओहि सँ अनुस्यूत होइत छल। हुनक गीत मे व्यक्त भावना संसारक औसत आदमीक सामान्य अनुभव पर आश्रित अछि। तें ई कहब अतिशयोक्ति होयत जे ई कविक जीवनानुभवक परिणाम थिक जे ओ वृद्धावस्था मे पछता रहल छथि। विद्यापति सदृश प्रतिभावान कवि मनुष्यक एहि सामान्य दुर्बलता कें देखि-बुझि सकैत छल जाहि सँ एकर व्यापक प्रभाव पड़ैक। पश्चात्तापक भावना, ग्लानि, जीवनक निःसारता— ई सब शांत रस मे अंतर्निहित अछि। अतः ओहि परम्परा कें ध्यान मे रखैत, जकर अनुसरण निःसंदिग्ध रूप सँ विद्यापति अपन काव्य मे कयने छलाह, आ हुनक जीवनक ज्ञात तथ्यक आधार पर हम ई विश्वास नहि करैत छी जे ई गीत सब विद्यापतिक जीवनगत वा आत्मनिष्ठ अनुभवक देन छल। अपन शृंगार-गीत मे ओ तटस्थ वा वस्तुनिष्ठ छलाह। एहि गीत सब मे शांत रसक ओतबे परिपाक भेल अछि जतेक प्रेम-गीत मे शृंगार रसक। विद्यापति मानव जीवनक निःसारता आ क्षुद्रताक समान रूप सँ दर्शन आ गहन अनुभव कयने छलाह। एहि गीत सब मे अपना प्रति एक प्रकारक उपेक्षाभावक जे दर्शन होइत अछि से ओहिना कविक वैयक्तिक नहि अछि जेना नायिकाक लेल नायकक प्रेमावेग। विशिष्टक माध्यम सँ सामान्यक चित्रण काव्यक उच्चतम लक्ष्य रहल अछि आ विद्यापति ओकरा विदग्धतापूर्वक प्राप्त कऽ सकलाह ओ ओ यौन-प्रेम

हो वा आध्यात्म प्रेम, ओ जीवनक आनन्द हो वा निःसारता, चंचलता, क्षुद्रता आ निराशा सँ उत्पन्न वैराग्य।

11

संस्कृत काव्यक समग्र सौन्दर्य सँ सम्पृक्त मधुर आ लयवद्ध गीतक रचयिताक रूप मे विद्यापतिक कीर्ति आश्चर्यजनक रूप सँ यत्र-तत्र पसरि गेल। जे केओ एहि गीत कें सुनलक ओ एकर लयतान सँ मोहित भऽ गेल। एहि मे व्यक्त भावना एतेक सर्वसाधारण छल जे ओ सौन्दर्यानुभूतिजनित आनन्द सँ अपरिचित सामान्य स्त्री-पुरुष कें सेहो ओकर अनुभूति प्रदान कऽसकल। एहेन समय मे जखन संस्कृते सुसंस्कृत लोकक भाषा छल आ मिथिला सन क्षेत्र जतऽ संस्कृतक अतिरिक्त अन्य कोनो भाषा मे लिखब पवित्रताहरणक सदृश छल, विद्यापति ओहि प्रदेशक लोक द्वारा बाजल जायवला भाषा मे लिखबाक साहस आ आत्मविश्वास देखौलनि। ओहि समयक पुराणपंथी पंडित द्वारा लोक-भाषा मे लिखवाक कारणें विद्यापतिक तिरस्कार कयल गेल, किन्तु जखन ओ देखलनि जे ओएह काव्य विद्यापति कें अद्वितीय लोकप्रियता आ अभूतपूर्व कीर्ति प्रदान कयलक अछि तखन 'उदात्त मस्तिष्कक अन्तिम दुर्बलता' हुनका विद्यापतिक पदचिन्हक अनुसरण करबाक लेल प्रेरित कयलक। विद्यापतिक नमूना पर गीतक रचना करब मिथिलाक प्रतिभाशाली पंडितक लेल सेहो एकटा 'फैशन' बनि गेल। ई सत्य जे ओ विद्यापतिक अनुकृति सँ बहुत आगू नहि बढि सकलाह, मुदा ई प्रक्रिया अखंडित रूप सँ आगू बढ़ैत रहल आ विद्यापति द्वारा स्थापित परंपरा आ बाट पर मैथिली साहित्य विकसित भेल।

मिथिलाक बाहर मैथिली साहित्य नेपाल मे लगभग तीन शताब्दी धरि विद्यापति सँ प्रभावित होइत आगू बढ़ैत रहल। मिथिलाक कर्णाट राजा सँ अपन वंशक उत्पत्ति मानयवला भातगाँव आ काठमांडुक मल्ल राजा मैथिली साहित्य कें संरक्षण प्रदान कयलनि। ओइनबारक पतनक उपरांत मिथिलाक राजनीतिक अवस्था मैथिलीक विद्वान आ कवि कें पड़ोसी नेपालक मल्ल राजा सँ संरक्षण मङबाक हेतु बाध्य कयलक। विद्यापतिक अनुकरण करैत ओ सभ एकटा विशाल साहित्यक निर्माण कयलनि, जाहि मे सब सँ महत्त्वपूर्ण शुद्ध मैथिली मे लिखल गेल अनेको नाटक अछि। ओ नाटक सभ ओतय नियमित रूप सँ खेलायल जाइत छल। ओ कोनो आधुनिक भारतीय भाषा मे लिखल गेल प्रचीनतम नाटक थिक। अठारहम शताब्दीक मध्य धरि, जखन कि मल्ल शासक कें हँटाओल गेल छल,

मैथिली नेपाल दरबारक साहित्यिक भाषा बनल रहल आ विद्यापति प्रेरणाक एकटा स्त्रोत। एहि मे सँ अधिकांश साहित्य आइ धरि प्रकाश मे नहि आयल अछि से खेदजनक विषय अछि। आ तेँ ओकरा बारे मे बहुत कम जानकारी अछि, यद्यपि ओ ओतुक्का ग्रंथालय सब मे सुरक्षित अछि।

मुदा विद्यापतिक सब सँ सशक्त प्रभाव बंगालक महान कवि सब केँ प्रेरित कयलक आ बंगला साहित्य केँ ओकर प्रारंभिक अवस्था मे संवर्धन कयलक। बंगाल मे विद्यापतिक कथा वस्तुत: बहुत रमनगर अछि। बहुत समय सँ बंगाल आ मिथिला मे सांस्कृतिक संबंध छल आ ताहि समय मे बंगालक पंडित अपन ज्ञान परिष्कृत करबाक हेतु तथा मिथिलाक महान शिक्षक सब सँ ओकरा आधुनिकतम बनयबाक हेतु मिथिला मे अबैत छलाह। तखन जखन ओ फेर अपन घर घुरैत छलाह तखन हुनक ठोर पर विद्यापतिक मोहक गीत रहैत छल। चैतन्यदेव आ हुनक संगीक हेतु ई गीत विचित्र रूप सँ प्रभावशाली सिद्ध भेल किएक तऽ सहजिया संप्रदाय सँ प्रभावित भऽ कऽ ओ यौनाचारक माध्यम सँ दिव्य प्रेमक अनुभव करैत छलाह। विद्यापतिक प्रेम-गीत चैतन्य-संप्रदायक भक्ति-गीत बनि गेल आ विद्यापति भऽ गेलाह वैष्णव महाजन। बंगाली वैष्णव मतक एकटा महान प्रवर्त्तक। कीर्त्तन एहि नव संप्रदायक एकटा प्रमुख अंग छल आ विद्यापति सँ पूर्णत: प्रभावित भऽ कऽ अनेक प्रतिभाशाली कवि गीत रचय लगलाह। विद्यापतिक अनुसरण करैत काल ओ विद्यापतिक भाषाक अनुसरण सेहो करैत छलाह। जेँ कि ओ शुद्ध मैथिली नहि लिखि सकैत छलाह तेँ हुनक भाषा मैथिली आ बंगलाक एकटा अद्भुत मिश्रण छल जे बाद मे ब्रजबोली कहाबय लागल। चैतन्यदेवक हेतु विद्यापति एकटा आदर्श बनि गेलाह आ ब्रजबोली काव्य-रचनाक भाषा बनि गेल। जेना-जेना चैतन्यदेवक नवीन संप्रदाय व्यापक होइत गेल तहिना-तहिना विद्यापतिक गीत सेहो ओही संग पसरैत गेल आ उड़ीसा ओ असम तक तथा सुदूर ब्रजभूमि तक विद्यापति दिव्य-प्रेमक एकटा महान प्रवर्त्तक मानल जाय लगलाह। गीत भक्तिगीतक प्रतिरूप बनि गेल। बंगाल मे सेहो विद्यापति एहि संप्रदायक एकटा नेताक रूप मे सम्मानित होइत रहलाह आ लोक हुनका बंगाल मे जनमल बंगाली बुझैत रहल। सम्मान प्राप्त करबाक दृष्टि सँ कवि अपन गीतक अंत मे विद्यापतिक भनिता लगबैत रहलाह। कम-सँ-कम एकटा कवि एहेन छलाह जे अपन सबटा कविता विद्यापतिएक नाम सँ रचलनि। ब्रजबोली मे विशाल साहित्य उपलब्ध अछि जे भारतीय साहित्यक गौरव थिक। जखन हम मोन पाड़ैत छी जे ब्रजबोली मिथिलाक एकटा भाषा अछि, जे ओतय जनमल लोक सभक द्वारा प्रयोग मे आनल गेल छल आ तकर प्रेरणा विद्यापतिक प्रेमगीत देने छल, तखन हम एहि अद्वितीय घटना पर आश्चर्य व्यक्त करैत छी आ विद्यापतिक प्रतिभा सँ मुग्ध भऽ जाइत छी।

एहि संबंध मे ई उल्लेखनीय अछि जे रवीन्द्रनाथ केँ सेहो हुनक काव्यजीवनक

देहरि पर विद्यापति प्रभावित कयने छलाह। ओ 'भानुसिहेर' पदावली लिखलनि जकरा ओ स्वयं मैथिलीक अनुकृति कहैत छथि। एहि तरहें विद्यापतिक युग मिथिला जेकाँ बंगाल मे सेहो 19म शताब्दीक अंत धरि रहल।

असमक स्वनामधन्य शंकरदेव आ हुनक शिष्य माधवदेव विद्यापतिक प्रत्यक्ष प्रभाव मे आबि कऽ मैथिली मे लिखलनि। यद्यपि हुनक रचना मनोरंजक नाटकक माध्यम सँ वैष्णवमतक प्रचार करबाक हेतु लिखल गेल छल; तथापि हुनका प्रेरणा विद्यापति सँ भेटल छलनि, जे लोकक हेतु लिखल गेल रचना मे लोकक द्वारा बाजल जायबला भाषाक प्रयोग कयने छलाह।

लोकक द्वारा बाजयजायबला भाषा मे काव्यानंद कें व्यक्त आ संचारित करबाक प्रतिभा एतेक लोकप्रिय भेल, काव्याभिव्यक्तिक रूप मे मोहक गीतक उपयोग करबाक रचना-चातुर्य एतेक आकर्षक सिद्ध भेल जे विद्यापति द्वारा स्थापित परंपराक अनुगमन अधिकांश महान कवि कालांतर मे कयलनि। अन्य कविक तऽ कथे कोन, सूरदास, मीरा, तुलसीदास, कबीर सेहो विद्यापति सँ प्रभावित भेलाह भने ओ प्रभाव परोक्षेरूप मे किएक ने पड़ल हो।

12

विद्यापति मैथिल पुनर्जागरणक दीप्ततम देन छलाह। ओ व्यवसाय सँ कवि नहि छलाह। हुनका कतेक प्रकारक रुचि छलनि। हुनक दृष्टिकोण अत्यंत उदार छल। हुनक विचार समय सँ बहुत आगाँ छल। अत्यंत खेदजनक विषय थिक जे हुनक बाद मिथिलाक सांस्कृतिक अधःपतन होइत गेल। परिणाम भेल जे व्यक्तिक रूप मे विद्यापति कें आ हुनका द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त कें बिसरि देल गेल आ ओ एकटा पुराण कथा, एकटा उपाख्यान मात्र बनि कऽ रहि गेलाह। मुदा जहिया सँ ओ अपन चारूकातक लोकक लेल मधुर गीत रचलनि, तहिया सँ कविक रूप मे हुनक यश कहियो कम नहि भेलनि। विद्यापति एखनो एकटा कविक रूप मे जीवित छथि आ जीवित रहताह। ओ भारतीय साहित्यक अत्युत्कृष्ट निर्माता रहलाह अछि आ भारतीय साहित्यक इतिहास मे ओहिना अमर रहताह।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. **विद्यापति की पदावली :** सं० एन० गुप्त, देवनागरी संस्करण, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद 1910 (अन्यथा निर्दिष्ट नहि भेला पर एहि पुस्तक मे देल गेल गीत-क्रमांक एही संस्करणक थिक।)
2. **तत्रैव :** सं० डा. बी. बी. मजुमदार, देवनागरी संस्करण, पटना
3. **तत्रैव :** राष्ट्रभाषा परिषद, पटना सँ दू खंड मे प्रकाशित
4. **भाषागीत संग्रह :** सं० रमानाथ झा, मैथिली विकास कोष, पटना विश्व-विद्यालयक हेतु, 1970
5. **कीर्त्तिलता :** ले० विद्यापति, (सं०)डा. वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
6. **तत्रैव :** सं० रमानाथ झा, मैथिली विकास कोष, पटना विश्वविद्यालय हेतु 1970
7. **पुरुष परीक्षा :** ले० विद्यापति, सं० रमानाथ झा, मैथिली विकास कोष, प० वि० वि० हेतु
8. **मणि मंजरी नाटिका :** ले० विद्यापति : (सं०) रमानाथ झा, मैथिली वि. को., पटना विश्वविद्यालय, पटना
9. **गोरक्ष विजय नाटक :** ले० विद्यापति : (सं०) डा. जयकान्त मिश्र, इलाहाबाद
10. **कीर्त्तिपताका :** ले० विद्यापति : सं० डा. जयकान्त मिश्र, इलाहाबाद
11. **लिखनावली :** ले० विद्यापति : सं० डा. इन्द्रकान्त झा, पटना विश्वविद्यालय, 1969
12. **दानवाक्यावली :** ले०विद्यापति : सं० फणि शर्मा, प्रकाशक—विक्टोरिया प्रेस, वाराणसी, 1883
13. **गंगा वाक्यावली :** ले० विद्यापति : सं० डा. जे. बी. चौधरी, कांट्रीब्युशन आफ विमेन टू संस्कृत लिटरेचर सिरीज, खण्ड 4, कलकत्ता 1940
14. **दुर्गाभक्तितरंगिणी :** ले० विद्यापति : प्रकाशक—राज प्रेस, दरभंगा, 1902
15. **विभागसार :** ले० विद्यापति : लक्ष्मीकान्त झा, पटना उच्च न्यायालय, पटनाक भूतपूर्व मुख्य न्यायमूर्ति लग पांडुलिपि

16. **शैवसर्वस्वार :** ले० विद्यापति, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक ग्रंथालय मे आ काठमांडुक वीर पुस्तकालय मे पांडुलिपि
17. **भूपरिक्रमा :** ले० विद्यापति, संस्कृत महाविद्यालय, कलकत्ताक ग्रंथालय मे पांडुलिपि
18. **दि टेस्ट आफ मैन :** विद्यापति कृत पुरुष परीक्षाक अनुवाद, अनु० : सर जी. ए. ग्रियर्सन, आर. ए.. एस लंदन, 1935
19. **शृंगार भजन :** गीतावली, ले० : गोविंद दास : सं० डा. अमरनाथ झा, दू भाग, साहित्य पत्र, दरभंगा, वि० सं० 2000
20. **पदावली :** (सं०) बेनीपुरी, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय

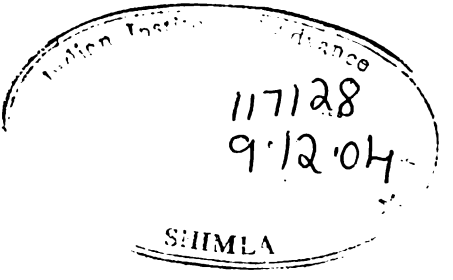

मैथिलीक महानतम कवि **विद्यापति ठाकुर** ई० सन 1350 सँ 1460 ई० क बोच भेल रहथि। ओ पश्चिम बंगालक सीमावर्ती बिहार प्रदेशक पूर्वी भू-भाग मे रहनिहार पचास लाख सँ अधिक लोक द्वारा बाजल जाइत मैथिली भाषा मे रचना कयलनि। विद्यापति अपन 800 वैष्णव आ शैव पदसभ किंवा गीतसभक लेल विख्यात छथि, जकर उद्धार तड़िपत्रक भिन्न-भिन्न पाण्डुलिपि सभसँ कयल गेल। ओ संस्कृत, अवहट्ठ (अपभ्रंश) आ मैथिलीक विद्वान रहथि। हुनक गीतसभ रमणीक चारुता आ शालीनताक ललित अङ्कन आ लघु चित्र-रूपक वर्णन सँ परिपूर्ण अछि। रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कहब छनि जे **"विद्यापति आनन्दक कवि रहथि आ प्रेमे हुनका लेल जगतक सार-तत्त्व रहनि।"** ओ अपन गीतसभ कें संगीतबद्धो कयने रहथि, कारण जे ओ शिव सिंहक राज्यकाल मे 36 वर्ष धरि राज-कवि रहथि। अपन गूँजैत आ प्रभावशाली गीतसभक अतिरिक्त ओ 'पुरुष परीक्षा', 'कीर्त्तिलता' आ 'गोरक्ष प्रकाश'—सन कृतियोक रचना कयलनि।

मैथिलीक एहि श्रेष्ठ कवि पर ई पुस्तिका स्व० पण्डित रमानाथ झा द्वारा लिखल गेल अछि, जे मैथिलीक बड़ निपुण विद्वान आ आलोचक रहथि। ओ साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्श-मंडलक संयोजक तथा कार्यकारी मण्डलक सदस्य सेहो रहथि। यद्यपि हुनक ई इच्छा रहनि जे ओ पाण्डुलिपिक परिमार्जन करथि, [illegible] 1971 मे अपन दुखद आ असामयिक निधनक क[illegible]
हुनक स्मृति मे एहि पुस्तिकाक मूल [illegible]
छल तहिना, भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि[illegible]
अछि।

Library IIAS, Shimla
MT 811.22 V 669 J
00117128

आवरण सज्जा : सत्यजित रे
रेखाचित्र : कान्ति राय

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00